दुकान॰ ना॰ पु॰ दोनों कान, हाट।

दुकाल॰ ना॰ पु॰ विपत्तिकाल, दुर्भिक्ष।

दुकूल॰ ना॰ पु॰ रेशमी वस्त्र विशेष, दोनों तट।

दुख॰ ना॰ पु॰ दुःख।

दुखद॰
दुखदा॰
दुखदाई॰
दुखदाता॰
गु॰ दुःखदाई, कष्टदेनेवाला।

दुखत्रय॰ ना॰ पु॰ तीन दुख अर्थात् दैविक, दैहिक, भौतिक, अथवा कफ, पित्त और वात।

दुखारी॰
दुखित॰
दुखिया॰
दुखियारा॰
दुखियारी॰
दुखी॰
गु॰ दुखिया, पीड़ित।

दुखेन॰ ना॰ पु॰ दुःखयुत, दुःखकरके।

दुगई॰ ना॰ स्त्री॰ चियारी, कैंची जो छप्पर में लगाते हैं।

दुगन॰
दुगना॰
गु॰ द्विगुण, दोहरा, दूना।

दुग्ध॰ ना॰ पु॰ दूध।

दुग्धिका॰ ना॰ स्त्री॰ दूधिया पौधा।

दुग्धिनी॰ ना॰ स्त्री॰ कड़ुई तोंबी।

दुग्धी॰ ना॰ स्त्री॰ दूधिया पौधा, सेहुड़।

दुचित॰
दुचिता॰
गु॰ जिसका मनदोओर लगाहो।

दुचिताई॰ ना॰ स्त्री॰ चिन्ता, दुबिधा, भ्रम।

दुचित्ता॰ गु॰ दुचित।

दुत॰ अव्य॰ दूर।

दुतकार॰ ना॰ पु॰ उराहना, झिड़क।

दुतकारना॰ स॰ क्रि॰ सांसना, कुत्तेको डांटना।

दुतकारी॰ ना॰ स्त्री॰ मांस, ताड़न।

दुताना॰ स॰ क्रि॰ दबाना, डांटना।

दुति॰ ना॰ स्त्री॰ चटक, भड़क, सुन्दरता।

दुतिवन्त॰
दुतिवान्॰
ना॰ गु॰ भड़कीला, चमकदार, सुन्दर, सूर्य चन्द्रादि यथाहैं, राम चन्द्रिकायां यथा (दुतिवन्तन को विपदा अति कीन्ही, धरणी कह इन्दु बधू गहि दीन्ही)।

दुदही॰
दुद्धी॰
ना॰ स्त्री॰ औषधि पौधा विशेष।

दुधा॰ ना॰ स्त्री॰ दोजगह, दोप्रकार।

दुधार॰
दुधारा॰
गु॰ दूध देनेहार, दो धार की।

दुधैल॰ गु॰ दूध देनेहारी।

दुन्दुभि॰ ना॰ स्त्री॰ नकारः, निशान, दैत्य विशेष जिसको बालि ने माराथा।

दुपट्टा॰ ना॰ पु॰ ओढ़ने का वस्त्र विशेष।

दुपद॰ ना॰ पु॰ दो पांववाला अर्थात् मनुष्य।

दुपहरिया॰ ना॰ स्त्री॰ पुष्प विशेष।

दुबधा॰ ना॰ स्त्री॰ सन्देह, अधड़।

दुबला॰ गु॰ दुर्बल।

दुबलाई॰
दुबलापा॰
ना॰ स्त्री॰ दुर्बलता।

दुबिधा॰ ना॰ स्त्री॰ संदेह, छांच, शक।

दुबिधि॰ ना॰ स्त्री॰ दोतरह, दोप्रकार।

दुमुख॰ ना॰ पु॰ राक्षस विशेष, दोमुखवाला।

दुभाव॰ ना॰ पु॰ दुबिधा।

दुभाषिया॰
दुभाषी॰
गु॰ दो भाषाओं का जाननेहारा

दुर॰ अव्य॰ शब्द के प्रथम में संयोगिक अव्यय जिसका अर्थकु, कठिन, ना॰ स्त्री॰ कानका भूषण जो लड़के पहिनते हैं।

दुरतिक्रम॰ गु॰ कठिन, मुश्किल।

दुरद॰ ना॰ पु॰ हाथी।

दुरध्वा॰ ना॰ स्त्री॰ कुमार्ग, बुरी राह।

दुरना॰ अ॰ क्रि॰ छुपना, लुकना।

दुरदृष्ट॰ ना॰ पु॰ मन्दभाग्य।

दुरन्त॰ गु॰ अशान्त, कठिन, अन्तहीन।

दुराचार॰ गु॰ जिसका व्यवहार निन्दितहै।

दुराचारी० गु० जिसका व्यवहार निन्दितहै।
दुरात्मा० गु० पापी, दुष्ट।
दुराधर्ष० गु० अडर, अभय, अशंक।
दुराना० स० क्रि० छुपाना, लुकाना।
दुराराध्य० गु० कष्टसे सेवने के योग्य।
दुरारोह० ना० पु० ताड़वृक्ष।
दुरालभा० } ना० स्त्री० जवासा।
दुरालम्भा० }
दुराव० ना० पु० छुपाव, छल।
दुराशा० ना० स्त्री० कुत्सितआशा, दुष्टतृष्णा।
दुरित० ना० पु० पाप दोष।
दुरी० ना० स्त्री० खेलमें दो पड़ना वा दूआ।
दुरुखा० गु० जिसकी दोनों ओर एकसा होवे, यह शब्द फारसी का है।
दुरेफ० ना० पु० भौंरा।
दुर्ग० ना० पु० गढ़, घाट, किलअ, अगम।
दुर्गति० ना० स्त्री० कुगति, बुरीअवस्था, नरक, दरिद्रता।
दुर्गन्ध० ना० स्त्री० } दुर्गन्धि, बोय, कु-
दुर्गन्धि० ना० स्त्री० } बास।
दुर्गन्धा० ना० स्त्री० पियाज, गु० कुवासित।
दुर्गम० गु० औघट, गम्भीर, अगम्य, कठिन।
दुर्गमता० ना० स्त्री० गम्भीरता, औघटता।
दुर्गा० ना० स्त्री० भगवती विशेष।
दुर्गामी० गु० कुगामी कुमार्गी, बदचलन।
दुर्घट० गु० जो कष्ट से होसके, कुघाट, औघट।
दुर्जन० ना० पु० शत्रु, गु० दुष्ट, अपकारी।
दुर्जनता० } ना० स्त्री० शत्रुता, द्रोह,
दुर्जनताई० } दुष्टता।
दुर्जय० गु० बलवान् शत्रु, जो पराभवनहोसके।
दुर्दशा० ना० स्त्री० दुर्गति, बिपत्ति।
दुर्नाम० ना० पु० बदनाम, अपयश।
दुर्नामी० गु० बदनाम अपयशी, अपकीर्ती।
दुर्नाद० ना० पु० राक्षस बिशेष, कुत्सितनाद।
दुर्नीति० ना० स्त्री० कुचाल, अनीति, अन्याय।
दुर्बल० गु० दुर्बल, निर्बल, असमर्थ।
दुर्बलता० ना० स्त्री० निर्बलता, असामर्थ्य।
दुर्भगा० गु० अभागिन स्त्री, जिसका स्वामी प्यार नहीं करता है।
दुर्भाग्य० गु० प्रारब्धहीन, अभागी।
दुर्भाव० ना० पु० बुरास्वभाव।
दुर्भिक्ष० ना० पु० अकाल, काल, कुसमय।
दुर्मति० ना० स्त्री० कुबुद्धि, मूर्खता।
दुर्मद० गु० मस्त, मदगलित, मत्त, सिड़ी।
दुर्मनी० ना० स्त्री० दूबघास।
दुर्मुख० ना० पु० नाग विशेष वानरों का एक राजा गु० कठोर भाषी।
दुर्मूल्य० गु० महँगा।
दुर्योग० ना० पु० बहुतेरे बाधकों का समूह कुसंगति।
दुर्योधन० ना० पु० राजा, कौरवाधीश।
दुर्लभ० गु० जो दुःखसे मिले, अनोखा।
दुर्लक्षण० ना० पु० अशुभ चिह्न।
दुर्वचन० ना० पु० बुरीबात, गाली।
दुर्वर्ण० ना० पु० बुरारूप, कुवर्ण, चांदी।
दुर्वर्णता० ना० स्त्री० कुरूपता, चांदी।
दुर्वाक्य० } ना० पु० बुरीबात, गाली।
दुर्वाच्य० }
दुर्वाद० ना० पु० कुत्सितवार्त्ता, बुरीबातें।
दुर्वासा० ना० पु० मुनिविशेष।
दुर्बुद्धि० ना० स्त्री० मूर्खता, कुबुद्धि, नादानी।
दुर्बुद्धी० गु० नादान, कुबुद्धि, मूर्ख।
दुलकी० ना० स्त्री० कूकर चाल, घोड़ेकी एकप्रकारकी चाल विशेष।
दुलड़ा० ना० पु० } दोलड़ा, दूगुन।
दुलड़ी० ना० स्त्री० }
दुलत्ती० ना० स्त्री० पशुका पिछले दोपैरोंकामारना।
दुलहा० ना० पु० बर, बनरा, दुलहा।
दुलहिन० ना० स्त्री० नईबहू, बधू, बना, बनरी।

दुलाई॰ ना॰ स्त्री॰ ओढ़नेका वस्त्र विशेष।
दुलार॰ ना॰ पु॰ प्यार, स्नेह।
दुलारा॰ ना॰ पु॰ } गु॰ प्यारयुत, प्यारा, दुलारी॰ स्त्री॰ } प्यारी, लाड़िल, लाड़िली।
दुवार॰ ना॰ पु॰ द्वार।
दुविद॰ ना॰ पु॰ वानर विशेष।
दुबे॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मणजाति विशेष।
दुशाला॰ ना॰ पु॰ पाटवस्त्र विशेष।
दुष्कर॰ गु॰ जोकष्टसे किया जाय।
दुष्कर्म्म॰ } दुष्कृत॰ } ना॰ पु॰ कुकर्म, पाप।
दुष्कर्मी॰ गु॰ कुकर्मी, पापी।
दुष्ट॰ गु॰ बुरा, उत्पाती, नीच, कठिन।
दुष्टता॰ ना॰ स्त्री॰ नीचता, पाप, बुराई।
दुष्टजन्तु॰ ना॰ पुं॰ सर्पादि, मूजी जानवर।
दुष्टा॰ ना॰ स्त्री॰ छिनाल, सापिन, पापिन।
दुस्तर॰ गु॰ जोतरने के योग्य न होवे, कठिन, अगम्य।
दुस्पर्शा॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी कटाई।
दुसह॰ } दुस्सह॰ } गु॰ जो सहा न जावे असह्य।
दुहना॰ स॰ क्रि॰ दूधनिकालना, निचोड़ना।
दुहनी॰ ना॰ स्त्री॰ पात्र जिसमें दूधदुहते हैं।
दुहाई॰ ना॰ स्त्री॰ न्यायके लिये पुकार, हाय हाय, शपथ, किरिया, कसम।
दुहाईतिहाई॰ ना॰ स्त्री॰ कईबार दुहाईकरना।
दुहाना॰ स॰ क्रि॰ दूध निकलवाना।
दुहार॰ ना॰ पु॰ दूध दोहने वाला।
दुहिता॰ ना॰ स्त्री॰ कन्या, पुत्री।
दुहेला॰ गु॰ कठिन, भारी।
दुआ॰ ना॰ पु॰ दोका अंक।
दूज॰ ना॰ स्त्री॰ द्वितीया तिथि।
दूजावर॰ ना॰ पु॰ जिसने दो विवाह किये।
दूजा॰ गु॰ दूसरा।
दूत॰ ना॰ पु॰ समाचार पहुँचानेहारा, संदेशिया, हरकारह, शैतान, पैगम्बर।
दूतता॰ ना॰ स्त्री॰ चालाकी, तोड़फोड़ और दूतका काम।
दूती॰ ना॰ स्त्री॰ कुटनी।
दूध॰ ना॰ पु॰ दुग्ध, गोरस, क्षीर।
दूधिया॰ गु॰ दूधकासा, ना॰ पु॰ अनेक पौधों का नाम जिनका रस दूध कासा होता है।
दूधी॰ गु॰ दूधका, दुधैला, ना॰ पु॰ आहार, मांडी, दुधिया पौधा।
दूना॰ गु॰ द्विगुण, दोहरा।
दूब॰ ना॰ स्त्री॰ दूर्वा, घास विशेष।
दूबर॰ गु॰ कठिन दुर्बल।
दूबिया॰ ना॰ स्त्री॰ तृण की हरियाई।
दूर॰ ना॰ स्त्री॰ अन्तर, बीच, दूर, व्यवधान, अव्य॰ परे।
दूरगम॰ ना॰ पु॰ गदहा।
दूरतर॰ गु॰ बहुत दूर।
दूरदर्शक॰ ना॰ पु॰ दुरबीन, यन्त्र, गु॰ दूरका देखने वाला, अग्रशोची।
दूरदर्शी॰ ना॰ पु॰ विवेकी, दूरअंदेश।
दूरदृग॰ ना॰ पु॰ गिद्ध।
दूरबीन॰ ना॰ स्त्री॰ दूरकी वस्तु देखने का यन्त्र, गु॰ दूरका देखने हारा शब्दफारसी काहै।
दूरमूल॰ ना॰ पु॰ जवासा।
दूर्वा॰ ना॰ स्त्री॰ तृण, विशेष, दूबघास।
दूषक॰ गु॰ दोष लगानेहारा, दूषण कर्त्ता, टोकने वाला, बिठोकनेहारा।
दूषण॰ ना॰ पु॰ निशाचर विशेष, दोष।
दूषित॰ गु॰ दोष लगाया गया, दोषयुत।
दूष्य॰ गु॰ निन्दित, कुत्सित।
दूसरा॰ गु॰ दूजा, अन्य।
दृग॰ ना॰ पु॰ नयन, नेत्र, आंख।
दृगञ्चल॰ ना॰ पु॰ नयनकोर, पलककीचाल।
दृढ़॰ पोढ़ा, अचल, कड़ा, मजबूत।
दृढ़ता॰ ना॰ स्त्री॰ } दृढ़त्व॰ ना॰ पु॰ } पोढ़ाई, पौरुख, पायदारी।

दृढ़ाना० स० क्रि० पेढ़ा, करना।

दृश्य० गु० जो देखने के योग्यहै, जो देखाजावे।

दृष्ट० गु० जो देखागया, प्रकट।

दृष्टिकूट० ना० पु० पहेली।

दृष्टान्त० ना० पु० उपमा, उदाहरण, मिसाल।

दृष्टि० ना० स्त्री० दर्शन, नजर, दीठि, आंख।

दृष्टिगोचर० गु० जो आंख के सामनेहो।

दृषच्छेद० ना० पु० पाषाण भेद।

दृषद्गर्भ० ना० पु० पन्ना, रत्न।

देआड़ा० ना० पु० दीमकका बनायाहुआघर।

देखना० स० क्रि० लखना, दृष्टिकरना, विलोकना।

देखवैया० ना० पु० देखनेहारा।

देनलेन० ना० पु० व्यवहार।

देना० स० क्रि० देडालना, सौंपना।

देमारना० स० क्रि० पटकना, फेंकदेना।

देय० / **देयमान०** } गु० देनेके योग्य।

देर० / **देरी०** } ना० स्त्री० विलम्ब, ढील।

देव० ना० पु० देवता, मेघ, देना।

देवऋषि० ना० पु० देवर्षि, नारद मुनि।

देवक० ना० पु० देवकीका पिता, देवता, गु० देनेहारा।

देवकांडर० ना० पु० चनसुर।

देवकी० ना० स्त्री० श्रीकृष्ण की माता।

देवकुसुमा० ना० स्त्री० लौंग।

देवगरा० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।

देवगृह० ना० पु० देवालय, चौहरा।

देवठान० ना० स्त्री० देवोत्थानी कार्तिकसुदी एकादशी को ये त्योहार होता है।

देवतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष, काकईवृक्ष।

देवता० ना० पु० देव, सुर, फरिश्तह।

देवताण्ड० ना० पु० देवदाली।

देवदत्त० ना० पु० संज्ञाविशेष, गु० जो देवता का दिया हुआ है।

देवदारु० ना० पु० वृक्ष वा काठ विशेष।

देवधुनि० ना० स्त्री श्रीगंगाजी।

देवनागरी० ना० स्त्री० हिन्दी के यथार्थ अक्षर।

देवनारि० ना० स्त्री० देवता की स्त्री।

देवपूजक० ना० पु० देवता की पूजा करनेहारा, पौत्तलिक, मूर्त्तिपूजक।

देवपूजा० ना० स्त्री० देवता का पूजन।

देववधू० ना० स्त्री० देवता की पत्नी, राजरानी, सीताजी, रामचन्द्रिकायां, देववधूजबहीं हरिल्यायो, क्योंतवहीं तजि ताहिनआयो।

देवमुनि० ना० पु० नारदजी।

देवर० ना० पु० पतिका छोटाभाई।

देवराणी० / **देवरानी०** { ना० स्त्री० देवर की स्त्री, देवताओं की रानी अर्थात् इन्द्राणी, रामचन्द्रिकायां। देवराजा लिये देवरानी मनोपुत्र संयुक्त भूलोक में सोहियो।

देवरिपु० ना० पु० दैत्य, निशाचर।

देवर्षि० ना० पु० नारदमुनि।

देवृ० ना० पु० देवर।

देवल० ना० पु० मन्दिर, ठाकुरद्वारा, चौहरा, यथा, तुलसी देवल देवको लागे लाखकरोरि, कागअभागेहगिभस्यो महिमाभई न थोरि।

देववल्लभा० ना० स्त्री० केसर, जाफ़रान्।

देववाणी० ना० स्त्री० संस्कृत।

देववृक्ष० ना० पु० कल्पवृक्ष।

देवसर० ना० पु० मानसरोवर।

देवश्रेणी० ना० स्त्री० मुरहरी, देवतों का समूह।

देवस्त्री० ना० स्त्री० देवता की पत्नी।

देवस्थान ना० पु० देवालय, देवता का घर।

देवस्व० ना० पु० देवताका धन।

देवा० ना० पु० देवता, देनेहारा।

देवांगना० ना० स्त्री० देवी, देववामा।

देवारि० ना० पु० दैत्य, निशाचर।

देवाल० ना० पु० देनेहारा।

देवालय० ना० पु० देवस्थान, देवता का घर।
देवाला० ना० पु० दिवाला।
देवालिया० गु० जिसका दिवाला निकलगया।
देवाली० ना० स्त्री० दिवाली, दिवारी।
देवालेई० ना० स्त्री० देनलेन।
देवी० ना० स्त्री० देवता की स्त्री, भगवती, मुरहरी औषधि।
देवेन्द्र० ना० पु० देवाधिराज अर्थात् इन्द्र।
देवोत्थान० ना० स्त्री० कार्तिक शुक्लपक्ष की तिथि जिस में विष्णु नींद से उठते हैं वा कार्तिक शुक्ल एकादशी।
देव्यालय० ना० पु० देवी का मन्दिर।
देव्याश्रय० ना० पु० देवीकी सहायता।
देश० ना० पु० पृथ्वी का खण्ड विशेष, लोक रागिनी विशेष, मुल्क, विलायत।
देशपति० ना० पु० राजा, बादशाह।
देशभाषा० ना० स्त्री० देशकी बोली।
देशमात्र० गु० सर्वत्र, सब देश।
देशाचार० ना० पु० देशकी रीति।
देशाटन० ना० पु० देशों में फिरना।
देशाधि०, देशाधिप०, देशाधिपति० } ना० पु० राजा, बादशाह।
देशाधीश०, देशाध्यक्ष० } ना० पु० देशका रक्षक वा राजा।
देशान्तर० ना० पु० दूसरा देश।
देशावर० ना० पु० परदेश, अन्यदेश।
देशी० गु० जो देशका है।
देह० ना० स्त्री० तन, शरीर।
देहरा० ना० पु० चौहरा, देवालय।
देहली० ना० स्त्री० चौखट, डयोढ़ी।
देही० गु० शरीर, ना० पु० जीव, प्राण।
दैजा० ना० पु० कन्यादान, यौतुक।
दैत्य० ना० पु० असुर, दितिजात।
दैत्यगुरु०, दैत्यपुरोधा०, दैत्यपुरोहित०, दैत्यपूज्य०, दैत्याचार्य० } ना० पु० शुक्राचार्य।
दैत्यारि० ना० पु० देवता, श्रीविष्णुजी।
दैदीप्य० गु० प्रकाशित, रोशन।
दैदीप्यमान० गु० प्रकाशित, चमकीला।
दैन्य० ना० पु० दीनता।
दैय० ना० पु० दैव, ईश्वर।
दैया० ना० स्त्री० माता।
दैव० ना० पु० प्रारब्ध, ब्रह्मा, देवके आधीन।
दैवगति० ना० स्त्री० कर्मकीचाल, ब्रह्माकी गति।
दैवतामणि० ना० स्त्री० महामेदा।
दैवयोग० ना० पु० कर्मप्रभाव, इत्तिफ़ाकन।
दैववादी० गु० आलसी, भाग्याधीन।
दैवज्ञ० ना० पु० गणक, ज्योतिषी।
दैवात्०, दैवी० } अव्य० अकस्मात्, नागहान।
दैविक० गु० जो देवता करके होवे।
दो० गु० दूसरी संख्या २।
दोऊ० गु० दोनों।
दोक० ना० पु० बछेड़ा, दोवर्षका घोड़ा।
दोचर० गु० दुहरा, दूसरा।
दोजीवा० ना० स्त्री० गर्भिणी।
दोझा० ना० पु० द्विजवर।
दोदना० स० क्रि० मुकरना।
दोना० ना० पु० दौना, पत्तों का पात्र, पुष्प विशेष।
दोनाली० ना० स्त्री० बन्दूक़ दोनालकी।
दोबर० गु० दोबेर, दुहरा।
दोमुहा० ना० पु० दोमुखका सांप।
दोय० गु० दो २।
दोल० ना० पु० डोल।
दोष० ना० पु० निन्दा, अपगुण, चूक, अपरा-

ध, काम क्रोधादि, कलंक।

दोषक० गु० निन्दक, अपगुणी, पापी।

दोषना० स० क्रि० दोषदेना वा दोषलगाना।

दोषित० } गु० कलंकित, पापी, अपयशी, अ-
दोषी० } पराधी।

दोहत्थड़० ना० पु० दोनों हाथोंका देमारना।

दोहता० ना० पु० नाती।

दोहती० ना० स्त्री० नातिनी, नातिन।

दोहद० ना० पु० स्नेह, प्रीति, हित, गर्भ।

दोहन० ना० पु० रसका खींचना।

दोहन० }
दोहना० } स० क्रि० दूहना, गारना।

दोहनी० ना० स्त्री० दूहने का पात्र।

दोहरा० गु० द्विगुण, दोलड़।

दोहराव० ना० पु० दोहराने का काम।

दोहा० ना० पु० छन्द विशेष।

दोहाई० ना० स्त्री० दुहाई।

दोहान० ना० पु० दो वर्ष का गौका बच्चा, खैला।

दौड़० ना० स्त्री० बहुत शीघ्र चलने की चाल, धावा।

दौड़धूप० ना० स्त्री० जतन, परिश्रम।

दौड़ना० अ० क्रि० बहुत शीघ्रचलना, धावा।

दौड़ाक० ना० पु० दौड़नेहारा।

दौड़ादौड़ी० ना० स्त्री० वेगावेगी।

दौड़ाना० स० क्रि० शीघ्र चलाना।

दौड़ाहा० ना० पु० संदेशिया, अगुआ।

दौहित्र० ना० पु० नाती, नवासा।

दौहित्री० ना० स्त्री० नातिनी, नवासी।

द्युमणि० ना० पु० सूर्य।

द्युत० ना० पु० जूआ, जूए।

द्यौरानी० ना० स्त्री० देवरकी स्त्री।

द्रम्म० ना० पु० १६ पणका।

द्रव० गु० बहता हुआ, घुला।

द्रविड़० ना० पु० देश विशेष।

द्रवित० गु० बहताहुआ, कृपायुत, नम्रतामय।

द्रवौ० }
द्रवहु० } अ० क्रि० दया करो।

द्रव्यजन्यभाव० गु० वस्तु और वस्तु रचित पदार्थका सम्बन्ध।

द्रष्टा० ना० पु० देखनेवाला।

द्रावक० गु० घुलावन हारा, कृपालु।

द्रावन० ना० पु० निर्मली।

द्राविड़० ना० पु० कचूर, द्रविड़ देशका ब्राह्मण वा लोग।

द्राविड़ी० ना० स्त्री० छोटी इलाइची, द्रविड़ देशकी भाषा वा बासी वा वस्तु।

द्रावी० ना० पु० सुहागा।

द्राक्षा० ना० स्त्री० अंगूर, दाख।

द्रुत० ना० पु० जल्द, शीघ्र।

द्रुपद० ना० पु० राजा विशेष।

द्रुपदी० ना० स्त्री० द्रौपदी, पाण्डवोंकीस्त्री।

द्रुम० ना० पु० वृक्ष, पेड़।

द्रुमलिक० ना० पु० राक्षस विशेष।

द्रुहिण० ना० पु० ब्रह्मा।

द्रोण० ना० पु० कालाकाग, वारिज, पर्वतविशेष, द्रोणाचार्य्य।

द्रोणपुष्पी० ना० स्त्री० गूमा, पौधा।

द्रोणाचार्य्य० ना० पु० कौरव और पाण्डवोंका गुरु।

द्रौपदी० ना० स्त्री० पांडवोंकीस्त्री, द्रुपदकन्या।

द्रोह० ना० पु० बैर, शत्रुता, अदावत।

द्रोहिया० }
द्रोही० } ना० पु० शत्रु, बैरी, मुद्दई।

द्वन्द्व० ना० पु० युगल, जोड़ा, रागदोषादि, कलह, दुःस्वभाव।

द्वादश० गु० बारह १२।

द्वादशउपवन० ना० पु० बारह उपवन अर्थात् शान्तनुकुण्ड, राधाकुण्ड, गोवर्द्धन, परमन्दर, बरसाना, संकेत, नन्दघाट, चीरघाट, बलरामस्थल, नन्दगांव, गोकुल, चन्दनवन १२।

द्वादशभानु० ना० पु० बारह सूर्य्यनाम।

अर्थात् विष्णु, शक्र, अर्यमा, धाता, पूषण, त्वष्टा, विवस्वान्, सविता, भग, वरुण, अंशुमाणि, तेजअति ।

द्वादशभानुकला० ना० स्त्री० बारह सूर्य्य की कला अर्थात् तपिनि, तापिनी, धूम्र, मरीची, ज्वलिनी, रुचि, रुचिनिम्न, भोगदा, विश्वाबोधिनी, धारिणी, क्षमा ।

द्वादशवन० ना० पु० बारहवन ब्रजके अर्थात् मधुवन, तालवन, वृन्दावन, कुमुदवन, कामवन, कोटवन, चन्दनवन, लोहवन, महावन, खदिरवन, बेलवन, भाण्डीर ।

द्वापर० ना० पु० तीसरायुग जो ८६४००० वर्ष का होता है ।

द्वार० ना० पु० घरकामुख, दरवाजा ।

द्वारपाल० } गु० ड्योढ़ीवान, द्वारकार-
द्वारपालक० } क्षक ।

द्वारा० अव्य० कारण से वसीला, मारफत ।

द्वारावती० ना० स्त्री० द्वारिका ।

द्वारिका० ना० स्त्री० नगर प्रसिद्ध जो गुजरात में है ।

द्वारिकाधीश० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।
द्वारिकानाथ० }

द्वारी० ना० पु० द्वारपाल ।

द्विगुण० गु० दूना, दोहरा ।

द्विज० ना० पु० पक्षी, दांत, ब्राह्मण, नक्षत्र, कौआ ।

द्विजदोष० ना० पु० ब्रह्महत्या ।

द्विजनायक० ना० पु० ब्राह्मण । गरुड़, चन्द्रमा, सिंह ।

द्विजन्मा० ना० पु० ब्राह्मण ।

द्विजपति० ना० पु० द्विजनायक ।

द्विजपत्नी० ना० स्त्री० ब्राह्मणी ।

द्विजप्रिया० ना० स्त्री० सोमवल्ली, ब्राह्मणी ।

द्विजराज० ना० पु० द्विजनायक ।

द्विजा० ना० स्त्री० छोटी इलायची ।

द्विजांगिका० ना० स्त्री० कुटकी ।

द्विजाति० ना० पु० द्विज, ब्राह्मण ।

द्वितीय० गु० दूसरा ।

द्वितीया० ना० स्त्री० दूज, दूसरीतिथि, दूसरी ।

द्वितीयान्त० गु० जिसके अन्त में द्वितीयाका प्रत्यय होवे ।

द्वित्व० अव्य० दोहरा करना ।

द्विधा० अव्य० दोप्रकार ।

द्विपद० ना० पु० मनुष्य ।

द्विरसन० ना० पु० सांप ।

द्विरागमन० ना० पु० गौना, चलौआ ।

द्विरुक्ति० ना० स्त्री० पुनरुक्ति, फेरफेरकहना ।

द्विरेफ० ना० पु० भौंरा ।

द्विवचन० ना० पु० द्वित्व संख्यायुक्त, जोशब्द, जिसका भाषा में प्रयोग नहीं है ।

द्विविद० ना० पु० वानर विशेष ।

द्विषट्० गु० द्वादश वा अष्ट ।

द्विस्वभाव० ना० पु० दुबिधा ।

द्वित्रिंशलक्षण० ना० पु० बत्तीस लक्षण अर्थात् सुकृत, स्वरूप, शील, सत्य, पराक्रम, शुच्यात्मा, अभ्यास, वरविद्या, सुमान, परमज्ञान, शास्त्रज्ञान, परस्त्रीत्याग, पूर्णता, लोकेश, दास विभाग, पुष्टविद्या, प्रियवाद, सत्संग, अकाम गुणपूर्ण, मातृभक्ति, पितृभक्ति, गुरुभक्ति, जितेन्द्रिय, दातृत्व, धर्मात्मा, देवपूजन, अल्पनिद्रा, स्वल्पाहार, स्वच्छता, पुष्टता, धीरज ३२ ।

द्वीप० ना० पु० टापू पृथ्वी का खण्ड जो जल से घिराहुआ है, पृथ्वी के सप्तखण्डों में से एक ।

द्वीपवती० ना० स्त्री० नदी ।

द्वीपशत्रु० ना० पु० छतावर, सतावर ।

द्वीपसम्भवा० ना० स्त्री० पिण्ड, खजूर ।

द्वीपिका० ना० स्त्री० सतावर, छतावर ।

द्वीपी० ना० पु० सिंह, शेर ।

द्वेष० ना० पु० बैर, द्रोह, हिंसा, ईर्षा ।

द्वेषी० ना० पु० शत्रु, बैर, हिंसक ।

द्वै० गु० दो, २ ।

द्वैत० ना० पु० संदेह, भेद, दुगुनाइट।
द्वैतवादी० ना० पु० भेदवादी।
द्वैध० ना० पु० संदेह, दोखण्ड।
द्वैधीकरण० ना० पु० छेदन।
द्वैमातुर० ना० पु० श्रीगणेशजी।
द्वैमधुक० ना० पु० मुलहठी।
द्वेष० ना० पु० द्वेष।
द्व्यर्थ० गु० जिसमें दो प्रकार के अर्थहों।
द्व्यक्षर० गु० जिसमें दो अक्षरहों।

[ध]

धंधलाना० स० क्रि० छलना, धोखादेना।
धंधक० गु० बहुचिन्तक, धन्धेवाला, धंधक।
धंधा० ना० पु० काम, धंधा।
धंधार० गु० उदास, एकान्ती।
धंधारी० ना० स्त्री० उदासी, अकेलापन।
धंसना० अ० क्रि० धसना, गड़ना, बैठजाना।
धकधक० ना० पु० धड़क, भयसे कलेजा कांपना।
धक्का० ना० पु० ढकेल, झोंक, ठेला।
धक्काधक्की० ना० स्त्री० ठेलाठेली।
धगड़ा० } धगड़० } ना० पु० यार, लगुआ।
धज० ना० पु० चाल, आसन, डौल, रूप, ठाट, सामान, साजबाज।
धजभंग० ना० पु० नपुंसकी।
धजा० ना० स्त्री० पताका, ध्वजा।
धजीला० गु० धज से चलने वाला, सजीला।
धज्जी० ना० स्त्री० पुराने कपड़ेका टुकड़ा।
धड़० ना० पु० देह, शिरसे नीचेका तन।
धड़क० ना० स्त्री० फड़क, भय, धड़धड़ाहट।
धड़कना० अ० क्रि० फड़कना, हिलना, धकधकाना।
धड़का० ना० पु० भय, सन्देह, दुबिधा, धड़क।
धड़काना० स० क्रि० डराना, धड़धड़ाना, अ० क्रि० धड़कना।
धड़ा० ना० पु० यथा, पक्ष, तौल, जोख।
धड़ाका० ना० पु० धायाधाय, हड़हड़ाहट शब्द होना।
धड़ी० ना० स्त्री० लकीर, पांचसेर की तौल वा जितना एकबार तोल जावे।
धत० ना० पु० हाथी चलाने का शब्द।
धतूरा० ना० पु० पौधा विशेष।
धतूरिया० गु० छलिया, बहुरुपिया।
धधकना० अ० क्रि० भभकना, धायँधायँ जलना।
धन० ना० पु० द्रव्य, अर्थ, सम्पत्ति, लक्ष्मी, शुक।
धनक० ना० स्त्री० गोटेसे बनीवस्तु जो टोपी आदि में लगाते हैं।
धनकटी० ना० स्त्री० कपड़ा विशेष, धान काटने का समय।
धनञ्जय० ना० पु० अग्नि, अर्जुन, पांडुपुत्र, पवन।
धनन्तर० ना० पु० धन्वन्तरि।
धनद० ना० पु० कुबेर, धन का दाता।
धनपति० ना० पु० कुबेर, गु० धनी।
धनवन्त० } धनवान्० } गु० द्रव्यवान्, लक्ष्मीवान्।
धना० ना० स्त्री० स्त्री, नारी, ना० पु० भक्त विशेष।
धनाकुला० ना० स्त्री० रासना।
धनाढ्य० गु० धनवान्, मालदार।
धनाध्यक्ष० ना० पु० धनका स्वामी, कुबेर।
धनान्ध० गु० जो धनके कारण अन्धा अर्थात् अहंकारी होरहाहो।
धनार्जन० ना० पु० द्रव्य का उपार्जन।
धनाशा० ना० स्त्री० अर्थ की आशा।
धनासरी० } धनासिरी० } ना० स्त्री० रागिनी विशेष।
धनिक० ना० पु० महाजन, ऋणकादाता।
धनिया० ना० पु० बीज विशेष, ना० स्त्री० नारि।

धनिष्ठा० ना० स्त्री० तेईसवां नक्षत्र।

धनी० गु० लक्ष्मीवान्, मालदार, ना० पु० मालिक, स्वामी।

धनुः० ना० पु० धनुष और नवीं राशि, चारि हाथका प्रमाण, भिलावां।

धनुपट० ना० पु० चिरौंजी।

धनुर्द्धर० ना० पु० जिस मनुष्य के पास धनुष रहताहो, विशेष अर्जुन।

धनुर्विद्या० ना० स्त्री० युद्धविद्या और बाण ज्ञान, तीरन्दाजी।

धनुष० ना० पु० कमान, कमठा।

धनुषाकृति०
धनुषाकार० } ना० पु० धनुष के डौल।

धनुषी०
धनुही० } ना० स्त्री० छोटा धनुष, धनुकी कमठी।

धनेश० ना० पु० पक्षी विशेष, कुबेर गु० धनवान्।

धन्य० गु० प्रशंसा के योग्य, गुणी।

धन्ययासक० ना० पु० जवासा।

धन्यवाद० ना० पु० स्तुति, कृतज्ञता, गुण मानना।

धन्यवादी० गु० कृतज्ञ, सूत, गुणगायक।

धन्या० ना० स्त्री० नदी विशेष।

धन्याक० ना० पु० धनिया।

धन्वन्तरि० ना० पु० वैद्यविशेष जो स्वर्ग वासियों के वैद्य हैं।

धन्वयाया० ना० स्त्री० जवासा।

धन्वी० गु० धनुर्द्धर।

धप०
धप्पा० } ना० पु० चपेटा, थप्पड़, छलावा।

धब्बा० ना० पु० कपड़े में जो लील, कपड़े का दाग।

धमक० ना० स्त्री० भयका सूचक शब्द, पैरों का शब्द विशेष।

धमकना० अ० क्रि० टीसना, धकड़ना, जगमगाना, स० क्रि० पटकना।

धमका० ना० पु० बड़ीधूप, सांस, भारी वस्तु के गिरनेका शब्द।

धमकाना० स० क्रि० झिड़कना, डांटना।

धमकाहट०
धमकी० } ना० स्त्री० घुड़की, डाट।

धमधूसड़० गु० मोटा, स्थूल।

धमन० ना० पु० नड़कुल।

धमनी० ना० स्त्री० नारी, नली।

धमाका० ना० पु० तोप विशेष जो हाथी पर रखते हैं, भारी वस्तु गिरनेका शब्द।

धमाचौकड़ी० ना० स्त्री० रौला, बखेड़ा।

धमाधम० ना० पु० पांवपीटनेका शब्द, लगातार पीटना।

धमार०
धमाल० } ना० पु० तालविशेष वा गीतविशेष जो होली में गाते हैं।

धमिना० ना० पु० सांप विशेष।

धमोका० ना० पु० खंजरी विशेष।

धम्मिल्ल० ना० पु० केशपास, बेणी।

धर० ना० स्त्री० धरती, ना० पु० धड़।

धरक० ना० स्त्री० धड़क।

धरका० ना० पु० धड़का।

धराणि०
धरणी० } ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन।

धरणीधर० ना० पु० शेषादि, सांप।

धरती० ना० स्त्री० पृथ्वी, जमीन।

धरधरा० ना० पु० धड़ाका।

धरन० ना० स्त्री० कड़ी।

धरना० स० क्रि० रखना, सौंपना, पकड़लेना ना० पु० किसी के द्वारपर अड़ना।

धरनी० ना० स्त्री० धरणी, धरन।

धरैनत० ना० पु० धरना, देनेवाला।

धरपना० स० क्रि० दबाना, डपटना, झपटना।

धररुह० ना० पु० वृक्ष, पौधामात्र जो पृथ्वीपर उगे।

धरषना० स० क्रि० घिसना, रगड़ना।

धरहर० ना० स्त्री० सहाय, मदद, सहजराम

कृत प्रह्लाद चरित्रे यथा, (यहि संसार असार महँ राम नाम अतिसार, रविसुत पुर धरहरके नरहरि नाम उद्धार)।

धरा० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी क्रि० भू० रक्खा, पकड़ा।

धरातल० ना० पु० पृथ्वीतल, रूप, ज़मीन।

धराधर० ना० पु० शेषादि।

धराना० अ० क्रि० ऋणी होना, स० क्रि० रखवाना, पकड़ाना, लदाना।

धरासुर० ना० पु० ब्राह्मण।

धरित्री० ना० स्त्री० पृथ्वी, भूमि।

धरोहर० ना० स्त्री० थाती, सौंप, अमानत।

धरौना० ना० पु० पुनर्विवाह।

धर्त्तव्य० गु० ग्राह्य।

धर्त्ता० ना० पु० ऋणी, धारणिक।

धत्तूर० ना० पु० धतूरा, जिस के फल में विष होता है।

धर्म० ना० पु० न्याय, कीर्ति, पुण्य, व्यवहार, चाल, गुण, काम, मज़हब।

धर्मकूप० ना० पु० काशीजी में स्थान विशेष।

धर्ममूल० ना० पु० वेद शास्त्र, गुरु।

धर्मराज० ना० पु० यमराज, नीतियुत राज्य, राजा युधिष्ठिर।

धर्मशाला० ना० स्त्री० धर्मविचारने का स्थान।

धर्मशील० ना० गु० भक्तिमान्, कीर्तिमान्, साधु।

धर्माधिकार० ना० पु० पुण्य कर्म की पदवी, भण्डार का काम।

धर्माधिकारी० गु० जो पुण्य कर्म का सिरताज हो।

धर्मात्मा० गु० कीर्तिमान्, साधु, ना० पु० ईश्वरत्व में जो तीसरा है उसका नाम।

धर्माध्यक्ष० गु० न्यायी० विचारकर्त्ता।

धर्मावतार० ना० पु० धर्मका अवतार।

धर्माज्ञा० ना० स्त्री० धर्मकी आज्ञा।

धर्मिष्ठ०
धर्मी० } गु० धर्ममेंजिनकी निष्ठाहै, पुण्यवान्।

धर्षण० ना० पु० धांसन, रगड़न।

धर्षना० स० क्रि० कोपना रगड़ना।

धवल० ना० पु० शुक्लवर्ण.।

धवलाख्य० ना० पु० पियाज।

धवलागिरि० ना० पु० पर्वत विशेष।

धसकना० अ० क्रि० गड़ना, धसजाना।

धसन० ना० पु० धसान, धसने की अवस्था।

धसना० अ० क्रि० घुसड़ना, चुभना, छिदना, पैठना।

धसान० ना० पु० दलदल, गड़न, धसन।

धसाना० स० क्रि० घुसेड़ना, घुसेड़वाना, पैठालना, पैठवाना, पिलाना।

धसाव० ना० पु० धसान।

धांधल० ना० पु० नटखटी, फरफन्द, झगड़ा।

धांधली० गु० झगड़ालू, नटखट।

धांगर० ना० पु० जाति विशेष।

धांयधांय० ना० स्त्री० तोपोंका शब्द, धड़ाका।

धांसना० स० क्रि० खांसना, खोंखना।

धांसी० ना० स्त्री० खांसी, खोंखी।

धाई० ना० स्त्री० दूध पिलाने हारी।

धाक० ना० स्त्री० ठाट, प्रताप, कीर्ति, भय, डर, ढाक।

धागा० ना० पु० सूत, डोरा।

धाता० ना० पु० ब्रह्मा, सूर्य।

धातु० ना० पु० तांबा आदि, वीर्य्य, क्रियावाचक शब्द, मसदर।

धातुमाक्षिक० ना० पु० सोनामक्खी।

धातुसाधित० गु० जो धातु से बनाया गया।

धात्वितर० गु० धातु से रहित।

धान० ना० पु० अन्न विशेष।

धाना० अ० क्रि० दौड़ना, टहलकरना, स० क्रि० पूजना, अर्चन।

धानी० ना० स्त्री० धान विशेष, धान के सदृश, रंग विशेष।

धानुक० ना० पु० धनुहार, कमानदार और जातिविशेष।

धानेय० ना० पु० धनिया।

धान्य० ना० पु० धनिया, धान, धन, माल।

धान्यक० ना० पु० धनिया।

धाप० ना० स्त्री० हाथ से दो तिहाई का माप, जहांतक मनुष्य एक सांस में दौड़सके।

धाम० ना० पु० घर, स्थान, तेज, तन, किरण, ज्योति, वैकुण्ठ, ब्रह्म।

धामा० ना० पु० बेतका टोकरा।

धामिन्० ना० पु० सूर्य।

धाय० ना० स्त्री० धाई।

धायमारना० अ० क्रि० पुकार के रोना, दौड़के मारना।

धार० ना० स्त्री० लकीर, बहाव, अस्त्र की बाढ़।

धारक० ना० पु० ऋणी।

धारण० ना० पु० धारने की अवस्था, मानलेना, स० क्रि० धारना, मंजूर करना।

धारणा० स० क्रि० रखना, संभालना, धराना, ना० स्त्री० योगकर्मविशेष।

धारना० स० क्रि० धारणा।

धारस० ना० स्त्री० ढाढ़स, धीरज।

धारा० ना० स्त्री० प्रवाह, बहाव, रीति।

धारावाहिक० गु० विच्छेद बिनु।

धारि० ना० स्त्री० डाकूकी सेना।

धारित० गु० जो धारण कियागया।

धारी० ना० स्त्री० लकीर, पौधाविशेष।

धार्त्तराष्ट्र० ना० पु० कालाहंस, यथा—राजहंसास्तुतेचञ्चुचरणैर्लोहितैःसिताः। मलिनैर्मल्लिकाख्यास्तेधार्त्तराष्ट्राःसितेतरैः १ इत्यमरः, धृतराष्ट्र का पुत्र सुयोधन।

धाव० ना० पु० पौधाविशेष, दौड़।

धावच्छशः० ना० पु० दौड़नेवाला खरगोश।

धावन० ना० पु० सन्देशिया, दूत, हरकारह।

धावना० अ० क्रि० दौड़ना, फिराकरना, चढ़ना, रबड़ना, अर्चना।

धावनी० ना० स्त्री० दूती, छोटी कटाई, श्वेत।

धावमान० गु० दौड़ताभया।

धावा० ना० पु० दौड़, चढ़ाई, वृक्षविशेष।

धाह० ना० स्त्री० शराटा, कूक।

धात्री० ना० स्त्री० धरती, सरस्वती, धाई, ना० पु० आंवला।

धिक्० अव्य० निन्दा का बोधक शब्द फिट, लानत, कुछ न भये।

धिक्कार० ना० पु० फिटकार, निन्दा, शाप, लानत।

धिक्कारना० स० क्रि० निन्दाकरना, फिटकारना, लानत करना।

धिक्कारी० गु० शापित, निन्दित, फिटकारी।

धिग्० अव्य० धिक्।

धिया० ना० स्त्री० बेटी, पुत्री।

धिरयो० क्रि० धमकाया, डांटा।

धिराना० स० क्रि० धमकाना, डांटना।

धिषण० ना० पु० ब्रह्मा, बृहस्पति।

धिषणा० ना० स्त्री० बुद्धि।

धी० ना० स्त्री० बुद्धि, बेटी।

धीति० ना० स्त्री० प्रतीति, विश्वास, कविवाक्ये यथा-मोहिंद्वारबैठायसखि तुकितजलहितजाय, धीतिलालतेरोकहा दधिचुराय व्रजखाय।

धीम० ना० पु० ढील, कोमलता।

धीमर० ना० पु० कहारजातिविशेष।

धीमा० गु० ढीला, कोमल, मध्यम।

धीमाई० ना० स्त्री० ढील, धीरज, सुस्ती।

धीमान्० गु० बुद्धिमान्, चतुर।

धीमेधीमे० अव्य० हौलेहौले।

धीय० ना० स्त्री० बुद्धि, कन्या।

धीर० गु० ढीला, सन्तोषी, जीवटा, स्थिर, ना० पु० धीरज।

धीरज० ना० पु० धैर्य्य, स्थिरता, साहस, सन्तोष।

धीरजी० गु० दृढ़, सन्तोषी, स्थिर।
धीरता० ना० स्त्री० धैर्य्य, स्थिरता, साहस।
धीरा० गु० कोमल, सन्तोषी, साहसी, विचारशील।
धीरिया० ना० स्त्री० बेटी।
धीरी० ना० स्त्री० नेत्रकी पुतली।
धीरु० गु० दृढ़, धीरजी, बहादुर।
धीवर० ना० पु० धीमर, कैवर्त्त।
धुंगार० ना० पु० छौंकन, बघार।
धुंगारना० स० क्रि० बघारना, छौंकना।
धुंधकार० ना० पु० अंधेरा।
धुंधकारना० अ० क्रि० धुवां समेत आग का जलना।
धुंधारना० अ० क्रि० अन्धाहोना।
धुंधला० गु० अंधा, अन्धला, ना० पु० अन्धेरा।
धुंधलाई० ना० स्त्री० अन्धेरा, चुंधलाई।
धुंधेला० गु० छली, ठग।
धुकड़ी० ना० स्त्री० छोटी थैली पैसा रखने की होती है।
धुकधुकी० ना० स्त्री० कंठका भूषणविशेष, घबराहट, सन्देह, ध्यान।
धुत्ता० ना० पु० धूर्त्तता।
धुन० ना० स्त्री० चसका, लौ, अभ्यास, परिश्रम, दहक, उमंग।
धुनकना० स० क्रि० तूमना, धुनना।
धुनना० स० क्रि० तूमना, पीटना, मारना।
धुनिया० ना० पु० बिहना, तूमनेवाला।
धुन्ना० स० क्रि० धुनना।
धुमला० गु० धुंधा, अन्धा, अंधेरा।
धुमलाई० ना० स्त्री० अंधियारा।
धुर० ना० पु० आरम्भ, अवधि, पास, बोझ।
धुरपद० ना० पु० गीतविशेष।
धुरसांझ० ना० स्त्री० गोधूली, सायंकाल।
धुरंधर० गु० धुरी धरनेवाला, ना० पु० धववृक्ष।
धुरवा० ना० पु० मेघ, काव्येयथा, धुंधुआरे धुरवा चहुँ पासा, समुझि परै नहिं अवनि अकासा।
धुरव्य० ना० पु० मेघ।
धुरियाना० स० क्रि० मटियाना, धूललगाना, धूल फेंकना।
धुरी० ना० स्त्री० काष्ठ वा लोहे की वस्तु जिस पर पहिया फिरता है।
धुलना० अ० क्रि० स्वच्छहोना, पाकहोना, धोजाना।
धुलवाना० स० क्रि० धुलाना।
धुलाई० ना० स्त्री० वस्त्र धोने का काम वा पैसा।
धुलाना० स० क्रि० मैल निकलाना, वस्त्र को स्वच्छ करवाना।
धुलेंड़ी० ना० स्त्री० होलीका दूसरा दिन।
धुस्सा० ना० पु० लोई, ऊर्णवस्त्रविशेष।
धूआं० } धूंवा० } ना० पु० धुवां, धूम।
धूंवारा० ना० पु० धुआं निकलनेका स्थान।
धूंधरा० ना० पु० अन्धेरा।
धूत० गु० धूर्त्त।
धूति० ना० स्त्री० ठग, छली, यथा तुलसी रघुवर सेवकहि सकै न कलियुग धूति।
धूना० ना० पु० राल।
धूनी० ना० स्त्री० धुवां, आग जो साधु लोग तापते हैं गु० स्थिर।
धूप० ना० स्त्री० घाम, सुगन्धि, द्रव्य जो पूजा में जलाके चढ़ाते हैं, वृक्षविशेष वा उसका काष्ठविशेष।
धूपना० स० क्रि० राललगाना, धूपजलाना।
धूपित० गु० धूप दियागया।
धूम० ना० पु० धुवां ना० स्त्री० रौला, बखेड़ा, उत्पात, भीड़।
धूमकेतु० ना० पु० अग्नि।
धूमधाम० ना० पु० धुवांका घर, हुल्लड़, रौला, बनाव।

धूमपुष्पा० ना० स्त्री० अग्नि जिह्वा विशेष।
धूमयोनि० ना० पु० मेघ, बादल।
धूमर०
धूमरा०
धूमल०
धूमला० } गु० मदमैला, धुमैला, धुवां का रंग।
धूमशिखा० ना० पु० अग्नि।
धूमशीर्षा० ना० स्त्री० अग्नि जिह्वा विशेष।
धूमा० गु० धूमला।
धूमी० गु० उत्पाती जिसकी धून होरही।
धूम्र० ना० पु० धुवां, ऊंट।
धूम्रपान० ना० पु० धुवां का पीना।
धूम्रपानयंत्र० ना० पु० हुक्का।
धूम्रयोनि० ना० पु० मेघ, बादल।
धूम्राक्ष० ना० पु० राक्षस विशेष।
धूर० ना० स्त्री० धूल।
धूरा० ना० पु० जो रोगी के हाथ पांव आदि में रगड़ते हैं।
धूरि० ना० स्त्री० धूलि।
धूरी० ना० स्त्री० धुरी।
धूर्त्त० गु० नटखट, शठ, ठग, ना० पु० धतूरा।
धूर्त्तता० ना० स्त्री० ठगई, शठता।
धूल०
धूलि० } ना० स्त्री० रज, रेणु, खाक।
धूसना० स० क्रि० ठांसना, भरना, दबाना।
धूसर० गु० मिट्टी लगाये हुये ना० पु० जाति विशेष।
धूसरि० ना० स्त्री० धूलि।
धूहा० ना० पु० धोखा, पक्षी आदि के डराने के लिये खेतमें गाड़ते हैं, तूदा।
धृक्०
धृग्० } अव्य० धिक्।
धृत० गु० जो धारण कियाजाय रक्खागया।
धृतराष्ट्र० ना० पु० दुर्योधन का पिता।
धृति० ना० स्त्री० दृढ़ता कामों में धीरज।

धृष्ट० गु० विशारद, चतुर, परिपूर्ण, पण्डित, शाली।
धेंगामुष्टि० ना० स्त्री० घूसमघूसा।
धेनु० ना० स्त्री० गाय या बछड़ासमेत गाय, दुधार गाय।
धेनुक० ना० पु० खररूपी दैत्य विशेष।
धेनमति० ना० स्त्री० गोमती नदी।
धेला० ना० पु० अधेला।
धेली० ना० स्त्री० अधेली, आधा रुपया।
धैर्य० ना० पु० धीरता, धीरज।
धैर्य्यवान्० गु० धीरजी, सन्तोषी।
धैवत० ना० पु० रागका स्वर विशेष।
धोआ० ना० पु० फलकी भेंडाली।
धोई० ना० स्त्री० भिगोई हुई दाल।
धोंवाला० ना० पु० धुवांनिकलने का मार्ग।
धोक० ना० स्त्री० देवता के आगे झुकना, आड़, तकिया।
धोकड़० गु० महाबली।
धोखा० ना० पु० भ्रम, छल, धांधल।
धोता० ना० पु० धूर्त्त, पाखण्डी।
धोती० ना० स्त्री० कटिमें पहिरने का वस्त्र विशेष।
धोना० स० क्रि० पखारना, फींचना।
धोप० ना० स्त्री० खड्ग विशेष।
धोब० ना० स्त्री० पछालन, धोनेका काम।
धोबिन० ना० स्त्री० धोबीकी स्त्री।
धोबी० ना० पु० कपड़ा धोनेवाला।
धोरी० ना० स्त्री० मुख्यबैल जो गाड़ी में सब से पहिले मचाया जाता है।
धौ० ना० पु० वृक्ष विशेष।
धौं० अव्य० अथवा, वा, मानो, या।
धौंक० ना० स्त्री० हंफाहट, काश, आश।
धौंकना० स० क्रि० धौंकनी से आगिफूकना।
धौंकनी० ना० स्त्री० धौंकी खलैती जिस से आगिको प्रचण्ड करते हैं, निगाली।
धौंकी० ना० स्त्री० धौंकनी।

धौंताल॰ गु॰ धनवान्, बलवान्,सूरमा, दुर्जन।
धौंताली॰ ना॰ स्त्री॰ धन, बल, सूरमापन, दुष्टता।
धौन॰ ना॰ पु॰ चारि पंसेरी का परिमाण।
धौंस॰ ना॰ पु॰ दौड़, धंकी।
धौंसा॰ ना॰ पु॰ बड़ाडंका।
धौंसिया॰ ना॰ पु॰ दौड़करनेहारों का प्रधान।
धौर॰ ना॰ पु॰ कपोत की जाति विशेष।
धौरा॰ गु॰ धौला।
धौल॰ ना॰ स्त्री॰ टीप, थप्पड़।
धौलधप्पा॰ ना॰ पु॰ धप्पाधप्पी।
धौला॰ गु॰ श्वेत, सफेद।
धौलाई॰ ना॰ स्त्री॰ उज्ज्वलता, गोराई।
धौलाना॰ } स॰ क्रि॰ थप्पड़ मारना, मु-
धौलियाना॰ } कियाना।
ध्यान॰ ना॰ पु॰ विचार, सोच, चिन्ता।
ध्यानी॰ गु॰ विचारवान्, सोची।
ध्याना॰ } स॰क्रि॰ सोचना, बिचारना, मा-
ध्यावना॰ } नना, भजना, गाना यशका।
ध्रुव॰ ना॰ पु॰ धूरी, योग राग विशेष, दैत्य विशेष, उत्तर दक्षिणकेन्द्र स्थान में प्रायस्थिर एक तारा उत्तानपादका पुत्र भक्त विशेष, गु॰ स्थिर, अचल, सनातन, निश्चय।
ध्रुवतारा॰ ना॰ पु॰ उत्तर दक्षिण केन्द्र में प्रायस्थिर एकतारा।
ध्रुवनन्दा॰ ना॰ स्त्री॰ श्रीगंगाजी।
ध्रुवपद॰ ना॰ पु॰ धुरपद गीत विशेष।
ध्रुवमत्स्ययंत्र॰ ना॰ पु॰ कुतुबनुमा।
ध्रुवा॰ ना॰ स्त्री॰ शालपर्णी, कील, लगाव।
ध्वंस॰ ना॰ पु॰ नाश।
ध्वंक्षोली॰ ना॰ स्त्री॰ काकोली।
ध्वज॰ ना॰ स्त्री॰ झण्डा, पताका, ध्वजा।
ध्वजिनी॰ ना॰ स्त्री॰ सेना, फौज।
ध्वजा॰ ना॰ स्त्री॰ पताका।
ध्वनि॰ ना॰ स्त्री॰ शब्द, बाजेका शब्द।
ध्वनित॰ गु॰ संक्षेप से कथित।
ध्वनी॰ ना॰ स्त्री॰ नदी, गु॰ शाब्दक।
ध्वन्यात्मक॰ गु॰ शब्दविशेष, जिसमेंवर्ण विवरण हो।
ध्वस्त॰ गु॰ भ्रष्ट, खराब।
ध्वान॰ ना॰ पु॰ शब्द।
ध्वान्त॰ ना॰ पु॰ अंधियारा, काव्येयथा, यथा ध्वान्त विध्वंस आदित्य कारी, तथा देवि विघ्नौघ शोकप्रहारी।

(न)

न॰ अव्य॰ अ॰ नहीं।
नक॰ ना॰ स्त्री॰ नाक।
नकचढ़ा॰ गु॰ क्रोधी, चिड़चिड़ा।
नकछिकनी॰ ना॰ स्त्री॰ पौधा विशेष।
नकटा॰ गु॰ नाक कटा।
नकड़ा॰ ना॰ पु॰ नाकमें रोग विशेष।
नकतोड़ा॰ गु॰ हंसोड़, धूर्त।
नकसीर॰ ना॰ स्त्री॰ नाक की शिरा।
नकार॰ अव्य॰ ना॰ पु॰ अस्वीकार।
नकारना॰ स॰ क्रि॰ नकार, करना, मुकरना।
नकुल॰ ना॰ पु॰ न्यौला सांपका बैरी, बगुला, पांडुका पांचवां पुत्र।
नकुआ॰ ना॰ पु॰ नाक, अणि।
नकेल॰ ना॰ स्त्री॰ काठ की वस्तु विशेष जो ऊंटकी नाकमें पहिनाते हैं।
नक्का॰ ना॰ पु॰ पाँसे वा तासका इक्का।
नक्की॰ ना॰ स्त्री॰ नाकसे बोलना, द्यूप में एक बढ़ना गण्डे से।
नक्कीमूठ॰ ना॰ स्त्री॰ द्यूतविशेष, जुआविशेष।
नक्कू॰ गु॰ अपयशी, बदनाम।
नक्र॰ ना॰ पु॰ कुम्भीर, मगर, नाका।
नख॰ } ना॰ पु॰ अँगुलियों के अग्रपर का
नखर॰ } अस्थिभाग, नाखून, नह।
नखरेखा॰ ना॰ स्त्री॰ खसोट, बकोट।
नखियाना॰ स॰ क्रि॰ खसोटना, बकोटना।
नखी॰ गु॰ नखधारी, नखवाला पशु।

नग० ना० पु० अंगूठीका पाषाणविशेष, मणि, पर्वत, वृक्ष, धाम।

नगचाई० ना० स्त्री० अवाई।

नगचाना० अ० क्रि० पास आना।

नगचाहट० ना० स्त्री० नगचाई।

नगदौना० ना० पु० पौधा विशेष।

नगन० ना० पु० हाथी, गु० नग्न।

नगभिन्नक० ना० पु० पाषाण भेद।

नगर० ना० पु० शहर, पुरी, ग्राम।

नगरकोट० ना० पु० कोटकांगड़ा।

नगरनारी० ना० स्त्री० गणिका, वेश्या।

नगरवर्त्ती० ना० पु० नगरबासी।

नगरबासी० गु० पुरी वा शहरका बासी।

नगरी० ना० स्त्री० छोटानगर, बस्ती।

नगा० ना० स्त्री० नारी, स्त्री।

नग्न०
नंग० } गु० दिगम्बर, वस्त्रहीन।
नंगा०

नंगी० ना० स्त्री० नग्न स्त्री।

नचवाना० स० क्रि० नचाना, नाचकराना।

नचवैया० ना० पु० नाचने हारा।

नचाना० स० क्रि० नाचकराना।

नट० ना० पु० डीठबन्दों वा नाचनेहारोंकी जाति विशेष, कौतुकी, स्वांगी।

नटखट० गु० धूर्त्त, कपटी, छली, फरफन्दिया।

नटखटी० ना० स्त्री० धूर्त्तता, कपट, छल, फरफन्द।

नटत० क्रि० अस्वीकार करता है, नाचता है।

नटना० अ० क्रि० नमानना, अस्वीकारकरना।

नटनागर० ना० पु० चतुर नट, डीठबंद, टोनहा।

नटभूषण० ना० पु० हरताल, नटकाभूषण।

नटवर०
नटवा० } ना० पु० डीठबन्द, टोनहा।

नटसाल० ना० पु० टूटाकांटा।

नटिन०
नटिनी० } ना० स्त्री० नटकी स्त्री।

नटी० ना० स्त्री० वेश्या, नाचनेहारी।

नटुआ०
नटुवा० } ना० पु० नटवा।

नठना० अ० क्रि० नशना, बिगड़ना, स० क्रि० नाशना, बिगाड़ना।

नत० गु० नम्र० ना० पु० तगरु, औषधि, अव्य० नतरु, नहीं तौ।

नतरु० अव्य० नहीं तो।

नतांगी० ना० स्त्री० ककरासिंगी।

नति० ना० स्त्री० प्रणाम, नमस्कार।

नतिनी० ना० स्त्री० नातिन, दौहित्री।

नतैत० ना० पु० नातेदार, सम्बन्धी, गोतैत।

नथ० ना० स्त्री० नाकमें का गहनाविशेष, नथुनी।

नथना० अ० क्रि० छिदना, फसना, ना० पु० नथुना।

नथनी० ना० स्त्री० नाथने का अस्त्र विशेष, नथुनी।

नथी० गु० छिदी, फँसी।

नथुआ० ना० पु० छिदुआ।

नथुई० ना० स्त्री० छिदुई।

नथुना० ना० पु० नाकका मार्ग।

नद० ना० पु० ब्रह्मपुत्रादि जलप्रवाह विशेष।

नदिया० ना० स्त्री० छोटी नदी, ना० पु० नगर विशेष।

नदी० ना० स्त्री० जो जलकी धारा पर्वतादि से निकलकर देशान्तरों में होकर समुद्र में जावै जैसे गंगा और सिन्धु आदि।

नदीकान्ता० ना० स्त्री० काकजंघा बूटी।

नदोला० ना० पु० नाद।

ननद०
ननदिया० } ना० स्त्री० ननदी, पतिकीबहिन।

ननदी० ना० स्त्री० पतिकी बहिन।

ननिहाल० ना० पु० नानाकाघर वा घराना।

नन्द० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र के कथित पिता, बेटा, नौ ९।
नन्दन० ना० पु० देव उपवन, देववन, चन्दन, लड़का, गु० आनन्ददाता।
नन्दलाल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।
नन्दिग्राम० ना० पु० बस्तीविशेष, जहां भरत जी तपस्या करते थे।
नन्दिनी० ना० स्त्री० पार्वती, पुत्री, पत्नी की बहिन, प्रियंगु, सोंठि, इर्रे।
नन्दी० ना० पु० शिवजी का बाहन।
नन्दीगण० ना० पु० शिवजीका गण।
नन्दीघोष० ना० पु० रथ जो, अग्निदेवने अर्जुन को दियाथा।
नन्दोई० ना० पु० पतिकी बहिन का स्वामी; ननद का पति।
नन्दोला० ना० पु० नांद।
नन्दोसी० ना० पु० नन्दोई।
नन्हा० गु० छोटा, लघु।
नपुंसक० ना० पु० क्लीब, हींजड़ा, मोर।
नपुंसकलिंग० ना० पु० तीसरालिंग।
नभः ना० पु० आकाश, आश्रय, और श्रावण मास।
नभग० गु० पक्षी, नक्षत्र, ग्रह, देवता।
नभगनाथ० ना० पु० गरुड़, चन्द्रमा।
नभगामी० गु० पक्षीआदि, नभग।
नभगेश० ना० पु० नभगनाथ, गरुड़, चन्द्रमा।
नभश्चर० ना० पु० आकाश में उड़नेहारे, यथा पक्षी, तारागण, ग्रह, देवता।
नभस्य० ना० पु० भाद्रपद।
नभस्वत० ना० पु० पवन, वायु।
नमः० ना० पु० नमस्कार, त्याग।
नमत० गु० प्रणाम करते।
नमन० गु० सदृश, समान।
नमस्कार० ना० पु० प्रणाम, सन्मान का बोधक।
नमस्कारी० ना० पु० लजारू।
नमस्य० गु० नमस्कार के योग्य।
नमामि० क्रि० नमस्कार करता हूं।
नमित० गु० नीचे शिर किये, शिरझुकाये, नमस्कार करते।
नमो० ना० पु० नमस्कार वा प्रणाम करता हूं, दोहा, नमोनमो शुकदेवजी करौंप्रणाम अनन्त, तुव प्रसाद स्वरभेद को चरणदास बरनन्त १० इतिस्वरोदये।
नम्र० गु० विनयी, मिलनसार, आधीन, नर्म।
नम्रता० ना० स्त्री० आधीनता, विनय, नर्मी।
नय० ना० पु० नीति, कानून।
नयन० ना० पु० नेत्र, आंख।
नयनअमिय० ना० पु० नेत्रोंका अमृत, यथा, श्रीगुरुपदरजमंजुलअंजन, नयनअमियदृगदोष विभंजन। इतिरामायणे।
नया० गु० नवीन, ताज़ा।
नर० ना० पु० मनुष्य, पुरुष, पुंस।
नरक० ना० पु० पापों के भोग फलका स्थान, दैत्य विशेष जिसे भौमासुर भी कहते हैं।
नरकट० ना० पु० सरकण्डा, तृणविशेष जिसकी चटाई बनती है।
नरकसी० ना० स्त्री० हलक, गला।
नरकुल० ना० पु० नरकट।
नरपति० ना० पु० मनुष्योंका रक्षक, राजा।
नरपुर० ना० पु० मर्त्यलोक।
नरवाहन० } **नरयानी०** } ना० पु० कुबेर, यक्षराज।
नरसिंगा० ना० पु० बाजा विशेष, तुरही।
नरसिंगिया० ना० पु० नरसिंगाबजानेहारा।
नरसिंह० ना० पु० विष्णुका चौथाअवतार।
नरसों० अव्य० बीताहुआ चौथादिन, चौथा दिन आनेवाला।
नरहड्ड० ना० पु० पिण्डली की हड्डी।
नरहरि० ना० पु० नरसिंह जी, कवि विशेष।
नरहरिदास० ना० पु० गोसाईं, तुलसीदास के सद्गुरु।

नरान्तक॰ ना॰ पु॰ नरोंकाकाल, दैत्यविशेष।

नरिया॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी नाली, खपरा।

नरी॰ ना॰ स्त्री॰ चर्म विशेष लोहे का यंत्र विशेष, जिसमें बीने का सूत रखते हैं।

नरूख॰ गु॰ पुल्लिंग।

नरेट॰ ना॰ पु॰ }
नरेटा॰ ना॰ पु॰ } सांसी, नली, नटई।
नरेटी॰ ना॰ स्त्री॰ }

नरेन्द्र॰ } ना॰ पु॰ राजा, बहुतदेश का प्र-
नरेश॰ } तिपालक।

नरोत्तम॰ गु॰ अच्छामनुष्य, ना॰ पु॰ श्रीकृष्णजी।

नर्त्तक॰ ना॰ पु॰ नाचनेहारा।

नर्त्तकी॰ ना॰ स्त्री॰ नीच, नाचनेवाली।

नर्त्तन॰ ना॰ पु॰ नाच, नृत्य।

नर्मदा॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष।

नल॰ ना॰ पु॰ मुख्य वानर, मुख्यराजा, कुबेर का पुत्र, नड़कुल, फोफी, खोखल।

नलकूबर॰ ना॰ पु॰ कुबेर के बालक।

नलपुरष्टिक॰ ना॰ पु॰ कलिहारी।

नला॰ ना॰ पु॰ उदर में स्थान विशेष।

नलिका॰ ना॰ स्त्री॰ नली, नाड़ी।

नलिन॰ ना॰ पु॰ कमल।

नलिनी॰ ना॰ स्त्री॰ बहुत नलिनका संयोग स्थान वा कमलिनी।

नली॰ ना॰ स्त्री॰ नरेटी, फोफी, नाल, नरहड़, लोहे का यंत्र जिसमें सूत रखकर बिनते हैं।

नलुआ॰ ना॰ पु॰ भारी बांसका एक पोड़ जो पत्रा आदि रखने के काम आता है।

नव॰ गु॰ गिनती विशेष, ९ नया।

नवखण्ड॰ ना॰ पु॰ पृथ्वीके नौ भाग अर्थात् भरतखण्ड, इलावर्त्त, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हिरण्य, रम्य, हरि, कुरुखण्ड।

नवजल॰ ना॰ पु॰ प्रथम वर्षा, नया पानी।

नवयौवना॰ ना॰ स्त्री॰ यौवनवती।

नवद्वार॰ ना॰ पु॰ शरीर के नौ द्वार अर्थात् आंख २ कान २ नाक २ मुख, गुदा, लिंग।

नवधा॰ गु॰ नौप्रकार।

नवधाभक्ति॰ ना॰ स्त्री॰ नौ प्रकार की भक्ति अर्थात् सत्संग, हरिकथा, गुरुसेवा, हरिगुण गान, वेदपाठ, सज्जनधर्म, समभाव, लाभा लाभसम, हरिशरण।

नवधाभजन॰ ना॰ पु॰ नौ प्रकारका भजन अर्थात् हरिगुण श्रवण, हरिगुण कीर्त्तन, हरि स्मरण, हरिपदसेवन, हरिअर्चन, हरिपदवन्दन, दास्यभाव, मित्रभाव, आत्मज्ञान ९।

नवनाडिका॰ ना॰ स्त्री॰ नौश्वासा अर्थात् इड़ा, पिंगला, सुषुम्णा, पयस्विनी, कुहू, गन्धारी, शंखिनी, पूषा, अलम्बुषा।

नवनि॰ ना॰ स्त्री॰ झुकनि, प्रणाम।

नवनिधि॰ ना॰ स्त्री॰ कुबेर का धन।

नवनीत॰ ना॰ पु॰ मक्खन, नैनू, मसका।

नववधू॰ ना॰ स्त्री॰ नईबधू, नई दुलहिन।

नवबाला॰ ना॰ स्त्री॰ नवयौवना।

नवम॰ गु॰ नवां ९।

नवमांश॰ ना॰ पु॰ नवांभाग।

नवमी॰ ना॰ स्त्री॰ नवींतिथि, नवीं।

नवरंग॰ ना॰ पु॰ कामदेव, नयारंग, नौरंग।

नवरत्न॰ ना॰ पु॰ बाहुमें पहिरनेके लिये भूषण विशेष।

नवरस॰ ना॰ पु॰ नयारस वा नौप्रकारकारस अर्थात् शृंगाररस, वीररस, वीभत्स, शान्तरस, भद्ररस, करुणारस, अद्भुत, हास्य, भयानक९।

नवल॰ गु॰ सुन्दर, नया, ना॰ पु॰ केड़ापौधा।

नवला॰ ना॰ स्त्री॰ नवबाला, नवयौवना।

नवा॰ ना॰ गु॰ नया।

नवाड़ा॰ ना॰ पु॰ नाव विशेष।

नवाना॰ स॰ क्रि॰ झुकाना, झुकना, दोहरा, आधीनकराना।

नवाना॰ अ॰ क्रि॰ रमना, भटकना।

नवारी॰ ना॰ स्त्री॰ पुष्प विशेष वा उसकावृक्ष।

नवासी॰ गु॰ अस्सी और नौ ८९।

नवी० ना० स्त्री० रस्सी जिससे गाय के पांव दूध दुहते समय बांधते हैं।
नवीन० गु० नया, ताज़ा।
नवीनता० ना० स्त्री० नवापन।
नवोढ़ा० ना० स्त्री० नई स्त्री, नवयौवना।
नवोद्भिद० ना० पु० अंकुर, अंखुआ।
नव्य० गु० नया, नवीन, उपरा।
नब्बे० गु० नवदहाई ९०।
नश्वर० गु० नाशवान्, विनाशी, झूठ।
नशाया० क्रि० मिटाया, नाश दिया।
नखत० ना०पु० नक्षत्र, तारागण, तारा।
नष्ट० गु० जिसका नाश होगया, भ्रष्ट।
नष्टता० ना० स्त्री० भ्रष्टता।
नष्टा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी।
नस० ना० स्त्री० नाड़ी, रग।
नसाना० स० क्रि० नाशकरना, बिगाड़ना।
नसी० ना० स्त्री० फालेका अग्रभाग, वा फाला जो लोहे का हल में लगता है।
नस्य० गु० सानुनासिक, हुलास, जो नासिका से सूंघते हैं।
नह० ना० पु० नख, नाखून।
नहक० गु०-दुबला, पतला, सुखटा।
नहट्टा० ना० पु० बकोट खसोट।
नहनी० ना० स्त्री० नहनीं, रुखानी विशेष।
नहरवा० ना० पु० रोग विशेष।
नहनीं० ना० स्त्री० नख काटने का अस्त्र विशेष।
नहलाना० स० क्रि० स्नान कराना, नहाना।
नहान० ना० पु० स्नान।
नहाना० अ० क्रि० स्नान करना।
नहारहमुह० अव्य० बिनाखाये।
नहारु० ना० पु० चमड़े का टुकड़ा।
नहियर० ना० पु० स्त्रीकी ससुराल वा मैका।
नहीं० अव्य० निषेध, न।
नक्षत्र० ना० पु० तारा, तारागण।
ना० अव्य० नहीं।

नाईं० अव्य० प्रकार, सदृश, समान।
नाइन० ना० स्त्री० नाई की जोरू।
नाई० नाऊ० } ना० पु० नापित, जातिविशेष, क्षौरक।
नाक० ना० पु० आकाश, स्वर्ग, स्त्री, नासिका।
नाकड़ा० ना० पु० नाक में रोगविशेष।
नाकपति० ना० पु० इन्द्र।
नाकनटी० ना० स्त्री० अप्सरा, परी।
नाका० ना० पु० मार्ग वा पैंड़े का अन्त, सूई का छेद, गली, नक्र, जलजन्तु विशेष।
नाकिन० ना० स्त्री० नाककी स्त्री।
नाग० ना० पु० सांप, पत्र, हाथी, दुष्टनर, सूक्ष्म वायुभेद।
नागउरग० ना० पु० सीसा, धातु।
नागकन्या० ना० स्त्री० कन्या जो पाताल में रहती है सुलोचना, मेघनाद की बीबी।
नागकेसर० ना० पु० पुष्प विशेष।
नागगर्भ० ना० पु० सिन्दूर बन्दन।
नागचाम्पेय० ना० पु० नागकेसर।
नागज० ना० पु० सिन्दूर बंदन।
नागदन्ती० ना० स्त्री० इन्द्र बारुणी।
नागदमनी० ना० स्त्री० नागदौन।
नागदौन० ना० पु० पौधा विशेष, मरुआ।
नागन० ना० स्त्री० सांपिनी।
नागनी० ना० स्त्री० पान, नागकी स्त्री।
नागपंचमी० ना० स्त्री० श्रावणशुक्लपंचमी का पर्व्व विशेष।
नागपत्नी० ना० स्त्री० सांपिन, नागिन।
नागपाश० नागपास० } ना० पु० पांसा वा बन्धन विशेष।
नागपुर० ना० पु० नगर विशेष, नागलोक।
नागफांस० ना० स्त्री० फांसीविशेष।
नागबला० ना० स्त्री० गँगेरुआ।
नागबल्ली० ना० स्त्री० नागबेलि।
नागबेलि० ना० स्त्री० पानआदि।
नागभाषा० ना० स्त्री० प्राकृत भाषा जोपा-

तालके रहने हारे बोलते हैं।

नागमाता॰ ना॰ स्त्री॰ कद्रू, मनसिल।

नागर॰ ना॰ पु॰ गुजराती ब्राह्मणकी जाति विशेष, नागरोत्पन्न अर्थात् चतुर, और पानी, औंरा, सोंठि।

नागरंग॰ ना॰ पु॰ नारंगी।

नागरमोथा॰ ना॰ पु॰ सुगन्धि तृण विशेष का मूल।

नागरि॰ / नागरिन॰ ना॰ स्त्री॰ चतुर स्त्री, नागरकी स्त्री।

नागरिपु॰ ना॰ पु॰ न्यौला, मोर, गरुड़, सिंह।

नागरी॰ ना॰ स्त्री॰ संस्कृत के अक्षर, चतुर स्त्री।

नागल॰ ना॰ पु॰ हल खेत जोतने का।

नागा॰ ना॰ पु॰ संन्यासी, नम्बर।

नागाह्वा॰ ना॰ स्त्री॰ नागदौन।

नागारि॰ ना॰ पु॰ नागरिपु।

नागार्जुन॰ ना॰ पु॰ सहस्रबाहु राजाविशेष।

नागिन॰ / नागिनी॰ ना॰ स्त्री॰ सांपकी स्त्री।

नागौर॰ ना॰ पु॰ मारवाड़ देशके पासकाप्रदेश।

नाघना॰ / नांघना॰ स॰ क्रि॰ लांघना, पारजाना।

नाच॰ ना॰ पु॰ नृत्य।

नाचना॰ अ॰ क्रि॰ नाचकरना, कूदना।

नाज॰ ना॰ पु॰ अन्न, अनाज।

नाट॰ ना॰ पु॰ बासा।

नाटक॰ ना॰ पु॰ ग्रन्थविशेष।

नाटा॰ गु॰ ठिंगना, टेनी।

नाटिका॰ ना॰ स्त्री॰ नाड़ी।

नाटी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी, ठिंगनी।

नाठि॰ ना॰ स्त्री॰ नाश, विनाश।

नाठी॰ गु॰ नाशगई।

नाड़॰ ना॰ स्त्री॰ ग्रीवा, नाली।

नाड़िका॰ ना॰ स्त्री॰ एकघड़ी।

नाड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ पेटमेंकीनस, रोगपरीक्षा के लिये हाथ में की एकरग, श्वासा, नस, नली।

नाड़ीतिक्त॰ ना॰ पु॰ चिरायता।

नाड़ीधम॰ ना॰ पु॰ सोनार, स्वर्णकार।

नाड़ीमण्डल॰ ना॰ पु॰ नाड़ियों का समूह।

नाड़ीज्ञान॰ ना॰ पु॰ रोगपरीक्षा, और श्वासा का ज्ञान।

नात॰ ना॰ पु॰ सम्बन्ध, रिश्तह, बिरादरी।

नातर॰ / नातरु॰ ~~अव्य॰~~ अन्यथा, नहीं तो।

नाता॰ ना॰ पु॰ सम्बन्ध।

नातिन॰ ना॰ स्त्री॰ कन्या की कन्या, बेटा की बेटी।

नाती॰ ना॰ पु॰ बेटीका पुत्र, बेटा का पुत्र, रामायणे यथा, उत्तमकुल पुलस्ति के नाती, शिवविरंचि पूजेबहुभांती।

नाथ॰ ना॰ पु॰ स्वामी, प्रभु, ना॰ स्त्री॰ बैलको नाककीरस्सी, घाव की बत्ती।

नाथना॰ स॰ क्रि॰ छेदना, बैल को नाकमेंरस्सी डालना।

नाथित॰ गु॰ जो नाथागया।

नाद॰ ना॰ पु॰ शब्द, गरज, गीत, राग।

नादना॰ स॰ क्रि॰ आरम्भ करना।

नादिया॰ ना॰ पु॰ नन्दी, पशु विशेष जो जोगियों के पास होता है।

नाधना॰ स॰ क्रि॰ जुये में लगाना, आरम्भ करना।

नाधा॰ ना॰ पु॰ तालाब, वा नदी में से पानी निकालने का गढ़ा।

नानक॰ ना॰ पु॰ शिक्खों का गुरु विशेष।

नाना॰ ना॰ पु॰ माताका पिता, गु॰ अनेक, बहुत, समूह।

नानाकार॰ गु॰ बहुत रूपके, अनेकप्रकारके।

नानाकारण॰ ना॰ पु॰ अनेकप्रकार के कारण।

नानाप्रकार॰ / नानाभाँति॰ गु॰ अनेक प्रकार।

नानारूप॰ ना॰ पु॰ अनेक रूप।

नानार्थ० ना० पु० अनेक अर्थ।

नानाविधि० गु० अनेक प्रकार।

नानी० ना० स्त्री० माता की माता।

नान्द० ना० स्त्री० नांद, मिट्टी का बड़ा बर्त्तन विशेष।

नान्दिया० ना० पु० शिवका वाहन, वृषभ।

नान्दीमुख० ना० पु० श्राद्ध विशेष, जो पुत्र जन्म के पीछे होता है वा विवाहादि में।

नान्धना० स० क्रि० आरम्भ करना।

नान्यतर० } **नान्यथा०** } अव्य० अन्यथा नहीं, असत्य नहीं।

नाप० ना० स्त्री० माप, परिमाण।

नापना० स० क्रि० मापना, परिमाण करना।

नापित० ना० पु० नाई, हज्जाम।

नाभि० ना० स्त्री० पेटके मध्यका स्थान, ढोंढ़ी, तोंदी, ना० पु० राजा विशेष।

नाम० ना० पु० कीर्ति, यश, विख्याति, संज्ञा।

नामकरण० ना० पु० संस्कार विशेष, नाम रखना।

नामानि० ना० पु० नामका बहुवचन।

नामी० गु० प्रसिद्ध, कीर्त्तिमान् विख्यात, यशी, मशहूर।

नायक० ना० पु० मुखिया, प्रधान, स्वामी, सुन्दर रीति से गायक वा नर्त्तक बनजारों का प्रधान।

नायका० ना० स्त्री० नायिका।

नायिन० ना० स्त्री० नाई की जोरू।

नायकी० ना० स्त्री० नायक की स्त्री, धर्मी, त्रिया कुट्टनी।

नार० ना० स्त्री० नारि, नाल, झुण्ड, ग्रीवा।

नारक० ना० पु० नरक।

नारकी० गु० नरक निवासी, नरकी।

नारंगक० ना० पु० } **नारंगी०** ना० स्त्री० } फल विशेष।

नारद० ना० पु० मुनि विशेष।

नारा० ना० पु० नाला, कमरबन्द।

नाराच० ना० पु० बाण, तीर।

नारायण० ना० पु० श्रीभगवान्।

नारायणी० ना० स्त्री० लक्ष्मी, छतावर, पौधा नारायण सम्बन्धी ज्योति विशेष।

नारि० ना० स्त्री० अबला, नाड़ी, जिस में बाने का सूत रखकर बुनते हैं, बन्दूक बिना काठ, बांसका पोर जिसमें लोन पानी आदि भरके बैल गाय आदिको पिलाते हैं।

नारिकेर० } **नारिकेल०** } **नारियल०** } ना० पु० फल विशेष।

नारियली० ना० पु० नारियल का हुक्का।

नारी० ना० स्त्री० अबला, स्त्री, नाड़ीसाग विशेष, जिसेकरमुआ कहते हैं।

नाल० ना० पु० कमलादि की दण्डी, नारु, फोंफा नल, नली।

नालकी० ना० स्त्री० पालकी विशेष।

नाला० ना० पु० जल निकलने का मार्ग।

नालिसिंदुक० ना० पु० संभालू।

नाली० ना० स्त्री० मुहरी, छोटा नाला, जिसगदे में दण्डे करते हैं, जिसकाठको उड़ाते हैं।

नाव० ना० स्त्री० नौका, तरनी।

नावना० स० क्रि० झुकाना, डालना, नवाना।

नावरि० ना० पु० निवारा, जलक्रीड़ा।

नाविक० ना० पु० मांझी, नाव वा जहाज चलाने हारा, मल्लाह, कपतान।

नाशक० गु० नाशकरनेहारा, मिटानेहारा।

नाशन० ना० पु० मिटावन, मेटन।

नाशना० स० क्रि० मिटाना, ध्वंसकरना, नाशना।

नाशपाती० ना० स्त्री० फल विशेष।

नाशा० ना० स्त्री० नासिका।

नाशासंभेदन० ना० पु० नकछीकनी पौधा।

नाशिका० ना० स्त्री० नासिका, नाक।

नाश० ना० पु० सुंघनी, हुलास।

नाशना० अ० क्रि० भागना, स० क्रि० नाश करना।

नासा० ना० स्त्री० नाक, नाकड़ा।

नासिका० ना० स्त्री० नाक।

नास्ति० अव्य० जो नहीं है।

नास्तिक० | ना० पु० जिनके मत में पर-
नास्तिकी० | लोक की बात को नहीं मानते हैं, जैनी।

नाह० ना० पु० नाथ, स्वामी।

नाहर० ना० पु० शेर, व्याघ्र।

नाहीं० अव्य० नहीं।

निः० अव्य० यह शब्द जिसशब्द के पहिले संयोगी होवे उसका अर्थरहितकरे,यथा, निःशंक अर्थात् शङ्करहित, निषेध।

निःपाप० गु० अदोष।

निःशंक० गु० निडर, अभय।

निःशेष० गु० शेषरहित अर्थात् सम्पूर्ण।

निःपठ० गु० अति मूर्ख।

निःसंग० गु० संग रहित अर्थात् अकेला।

निःशरण० ना० पु० शरणहीन, अर्थात्, मृत्यु उपाय, विदा।

निःस्व० गु० दरिद्री, अधन।

नि० अव्य० में भीतर, ऊपर, रहित।

निष्कंटक० गु० सुगम, बेखटके, निर्द्वेष, सीध सुखी, बेधड़के।

निकन्द० गु० स्कन्द रहित, अर्थात् उखड़, निर्मूल।

निकन्दन० गु० निर्मूलकर्त्ता, उखाड़नेहारा।

निकट० अव्य० पास, समीप करीब।

निकटवर्त्ती० ना० पु० पासही, समीप में।

निकटी० ना० स्त्री० छोटी तराजू।

निकम्मा० गु० निर्गुणी जो किसीकामका नहीं है, शिथिल।

निकर० ना० पु० समूह, झुण्ड, सारे, सब।

निकरना० अ० क्रि० निकलना।

निकरम्ब० ना० पु० समूह, गिरोह।

निकलचलना० अ० क्रि० भागजाना, बढ़के बोलना, अधिके होजाना।

निकलना० अ० क्रि० निकसना, बहना, आगे जाना, भागना, उठाना, उखड़ना।

निकलपड़ना० अ० क्रि० बाहर आना।

निकसना० अ० क्रि० निकालना।

निकाना० स० क्रि० खेतकी घास निकालना।

निकाम० गु० अति कामना रहित, बेकाम।

निकाय० ना० पु० सब, समस्त, समूह।

निकारना० स० क्रि० निकालना, अस्वीकार करना।

निकाल० ना० पु० उभार, निकास, जोड़तोड़।

निकालना० स० क्रि० उतारना, बिनना, चुनना, उठाना, उखाड़ना।

निकास० ना० पु० कगर, नगरके आसपास, मार्ग निकलनेका, चुकौता, मूल।

निकासना० स० क्रि० निकालना।

निकासी० ना० स्त्री० कर, महसूल, बैठ।

निकासू० गु० जो निकालागया।

निकेत० ना० पु० घर।

निकुच० ना० पु० बड़हल।

निकुंज० ना० पु० कुंज, मड़वा।

निकुटी० ना० स्त्री० छोटी इलायची।

निकुम्भिला० ना० स्त्री० राक्षसोंका खोहरा।

निकृष्ट० गु० अधम, नीच, खराब।

निषंग० ना० पु० तूणी, तरकश।

निखट्टू० गु० आलसी, उड़ाऊ, लुटाऊ।

निखण्ड० गु० मध्य।

निखरना० अ० क्रि० छिलका उतारना, उजला होना, चमड़ा उधड़ना।

निखराना० स० क्रि० उजलाकराना, फचींना।

निखर्ब० गु० १० खर्ब, १००००००००००००।

निखारना० स० क्रि० उजला करना, कपड़ेकी माड़ी निकालना।

निखारा० गु० स्वच्छ, उज्ज्वल।

निखिल० गु० सर्व, सम्पूर्ण, बिलकुल।

निखोट० ना० पु० खोट रहित मनुष्य।

निखोड़ना० स० क्रि० छीलना, उधेड़ना।

निगड़० ना० पु० कटिबन्धन, बेड़ी पैकड़ी काठ।
निगत० गु० नंगा।
निगन्दना० स० क्रि० तागना।
निगन्दा० ना० पु० } तागने का काम।
निगन्दाई० ना० स्त्री० }
निगम० ना० पु० वेद,नीचे, जहां जान सके।
निगमनदी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
निगमनिवासी० ना० पु० ब्रह्मा वेदनिवासी।
निगर० ना० पु० दीर्घ बड़ा ठोस।
निगलना० स० क्रि० लीलना, घूंटना।
निगाली० ना० स्त्री० हुक्का पीने की नली, फुकनी।
निगुण० गु० निर्गुण।
निगूढ़० अतिअगम, दुर्गम, अतिकठिन, अप्रकट, गुप्त।
निगोड़ा० ना० पु० अकर्मी, चाण्डाल।
निग्गर० गु० ठोस।
निग्रह० ना० पु० त्याग, रोंक, घिन, चिढ़, कुपथ्य दण्ड।
निग्रही० गु० ताड़नेहारा, रोंकने हारा।
निघटत० क्रि० घटतेही।
निघटना० अ० क्रि० घटना।
निघटाना० स० क्रि० घटवाना।
निघटी० क्रि० भू० घटी वा बहुत घटगई।
निघण्ट० ना० पु० औषधि वर्णन, रोगपरीक्षा।
निघरघटा० ना० पु० दुलखना, ढ़ढाई करना, ढिठाई करना।
निचय० ना० पु० समूह।
निचिन्त० गु० चिन्ता रहित, अचिन्त, अशोच।
निचिन्ताई० ना० स्त्री० प्रमाद, सुभीता। बेखटके।
निचोड़० ना० पु० काम का पूरा होना वा कुछ शेषरहना।
निचोड़ना० स० क्रि० दबाना गारना,चूसलेना।
निचोड़ू० गु० लुटेरा, गाऊखप।
निचोलनि० ना० स्त्री० चोलनी, कपड़ा, वस्त्र।
निछावर० ना० स्त्री० उतारा, बलि।
निज० गु० आप निश्चय, उत्कृष्ट।
निजका० गु० अपना।
निजगति० ना० स्त्री० अपनी दशा वा चाल।
निजगुरु० ना० पु० अपना गुरु।
निजतन्त्र० गु० निजइच्छा, स्ववश।
निजपति० ना० स्त्री० अपनी प्रतिष्ठा, ना० पु० अपना स्वामी।
निजवर्त्ती० गु० निजाश्रित, स्वतन्त्र।
निजसन्धि० ना० स्त्री० अवसर, निजसमय।
निजस्थान० ना० पु० अपना घर वा स्थान।
निजानन्द० ना० पु० अपने सुख में, निज में मग्न।
निजाश्रित० गु० स्ववश, निजवश, अथवा निज भरोसे।
निझाना० स० क्रि० निरेखना, झांकना।
निझोटना० स० क्रि० खसोटना, झटकना।
निझोल० गु० झोलरहित, अर्थात् सुडौल, चलने हारा।
निठुर० गु० कठोर, निर्दय, स्नेही बिनप्रीति।
निठुरता० } ना० स्त्री० कठोरता, निर्दयता।
निठुराई० }
निडर० गु० निर्भय, अशंक।
निढाल० } गु० स्थावर, अचल।
निढोल० }
नित० अव्य० नित्य, प्रतिदिन।
नितनय० गु० नितनया।
नितप्राति० अव्य० नित्य, प्रतिदिन।
नितम्ब० ना० पु० चूतड़, कटिके पीछे का नीचला भाग।
नितम्बिनी० ना० स्त्री० युवती, स्त्री, औरत।
नितान्त० अव्य० अत्यन्त, अधिक।
नित्य० अव्य० नितप्रति, सदा, सत्य, पवित्र, अमर।

नित्यकर्म० ना० पु० स्नानपूजादि कर्त्तव्य कर्म शुक्रकर्म ।

नित्यता० ना० स्त्री० सदापन, सदैव ।

नित्यदान० ना० पु० प्रतिदिनदेना, सत्यदान, सात्त्विकदान ।

नित्यानन्द० ना० पु० सर्वदाकाल आनन्द ।

निथम्भ० ना० पु० स्तम्भ, पीलपाया ।

निथरा० गु० फर्चा, फर्छा ।

निथारना० स० क्रि० उड़ेलना, फर्छा करना ।

निदग्धिका० ना० स्त्री० श्वेत छोटी कटाई ।

निदरहि० क्रि० निन्दाकरे, नामाने ।

निदरना० स० क्रि० निन्दा करना ।

निदरि० अ० क्रि० निरादरकरके अपमानकर ।

निदाघ० ना० पुं० ग्रीष्म, गर्मी ।

निदान० अव्य० अन्त, पीछे, पूरा, निपट, ना०पु० रोगपरीक्षा, औषधि कथन, अन्तविचार, कारण ।

निदेश० ना० पु० आज्ञा, अनुशासन, कौन्हेसि-मोरिनिदेशनिमेटू, देउदवायनागतरपेटू, इतिप्रह्लाद चरित्रे सहजरामकाव्ये ।

निद्रा० ना० स्त्री० औंघाई, नींद ।

निद्रारि० ना० पु० चिरायता ।

निद्रालु० गु० स्वभाववश, जो अधिक सोवे ।

निद्रित० गु० निंदासा, सोवासा ।

निधड़क० गु० निर्भय, अव्य० अचानक ।

निधन० ना० पु० मृत्यु, नाश, धनहीन ।

निधरक० गु० निधड़क ।

निधान० ना० पु० स्थान, घर, धन, आधार, भांड़ा ।

निधि० ना० स्त्री० कुबेरका एक रत्न, सम्पत्ति,ना० पु० समुद्र, गु० नौ ९ ।

निधिजात० ना० पु० चन्द्रमा आदि ।

निधिसुता० ना० स्त्री० श्रीलक्ष्मी जी ।

निनन्द० } ना० पु० शब्द, घण्टा, ध्वनि ।
निनाद० }

निनाया० ना० पु० खटमल ।

निनायी० ना० पु० विशेष, रोगविशेष ।

निन्दक० गु० निन्दा करनेहारा, नींदनेहारा ।

निन्दकाई० ना० स्त्री० निन्दकता, निन्दा ।

निन्दना० स० क्रि० दोषदेना,कलंकलगाना ।

निन्दनीय० निन्दा के योग्य ।

निन्दा० ना० स्त्री० दोष. कलंक,बुरा कहना ।

निन्द्य० गु० निन्दा के योग्य ।

निनावा० ना० पु० रोगविशेष ।

निन्नानबे० गु० एकोनशत, ९९ ।

निपट० अव्य० निरानिर, अधिक, बहुत, अति, सरासर, सर्व ।

निपटना० अ० क्रि० चुकना, पूराकरना ।

निपटाना० स० क्रि० चुकाना, पूराकरना, ठहराना, निबड़ना ।

निपटारा० ना० पु० निबेड़ा, फैसला ।

निपटारू० ना० पु० निबेरू ।

निपात० ना० पु० मृत्यु, नाश गिरना ।

निपाता० क्रि० नाश किया, मिटाया ।

निपान० ना० पु० जलाशय, दोहनी ।

निपुण० गु० प्रवीण, चतुर, दाना ।

निपूता० गु० जिसके सन्तान नहीं ।

निफल० गु० निरर्थ, फलरहित ॥

निबटेरा० ना० पु० निस्तोक, छुटानी ।

निबड़ना० अ० क्रि० निपटना, होचुकना ।

निबन्ध० ना० पु० बन्धेजे, इकरार गु० जो ठहर गया ।

निबन्धन० ना० पु० बन्धन, ठहराव ।

निबन्धित० गु० जो ठहरगया, बन्धित ।

निबल० गु० निर्बल, लाचार बुड्ढा ।

निबाह० ना० पु० समाप्त, निबेड़ा, निर्वाह, बात का पूरा करना ।

निबाहू० गु० टिकाऊ ना० पु० निपटारू ।

निबेड़ना० स० क्रि० निपटाना ।

निबेड़ा० ना० पु० निबटेरा, निपटारा ।

निबेड़ि० गु० निबाहू ।

निभ० ना० पु० तुल्य, बराबर ।

निभना० अ० क्रि० निबाहहोना, पारहोना।

निभाना० स० क्रि० निबाहना, पारकरना।

निमकी० ना० स्त्री० लोनका निम्बू।

निमकौड़ी० ना० स्त्री० नींबका फल।

निमन० गु० ठोस, पोढ़ा, सुन्दर।

निमनाई० ना० स्त्री० पोढ़ाई।

निमनाना० स० क्रि० पोढ़ाकरना, संभालना।

निमंत्र०
निमंत्रण० } ना० पु० न्योता।

निमाना० गु० भोला, मैदान।

निमि० ना० पु० राजाविशेष।

निमित्त० ना० पु० कारण, लिये, भाग, हेतु।

निमिष० ना० पु० थोड़ीदेर, पलक, चाल।

निमिषमात्र० ना० पु० अत्यन्त थोड़ाकाल।

निमीलन० ना० पु० मृत्यु, झपकी, पलक।

निमेष० ना० पु० पलक, विपल।

निम्न० गु० नीचास्थान, नीचान, अधो।

निम्नगा० ना० स्त्री० नदी।

निम्ब० ना० पु० नींब वृक्ष।

निम्बक० ना० पु० निम्बू।

निम्बरक० ना० पु० नींब, वा महानींब।

निम्बू०
निम्बूक० } ना० पु० नींबू।

नियत० गु० जो ठेकागया, मुकर्रर, कायम।

नियन्ता० ना० पु० स्वामी, अध्यक्ष, सारथी, नियतकर्ता।

नियम० ना० पु० प्रण, वचन, अंगीकार, जो कुछ धर्म की क्रियाकरे, यथाव्रत।

नियमित० गु० निश्चित, प्रणकिया गया।

नियमन० ना० पु० नीम वृक्ष, रोक।

नियर०
नियरे० } अव्य० समीप, पास।

नियराई० ना० स्त्री० समीपता, निकटता।

नियामक० ना० पु० नाविक, नियन्ता।

नियुक्त० गु० नियोजित, स्थापित।

नियुत० गु० दशलाख, १००००००।

नियोग० ना० पु० प्रेरण, आज्ञा, तथा मुकर्रर करना।

नियोजन० ना० पु० स्थापन, आज्ञा।

नियोजित० गु० स्थापित, रक्खा।

निर० अव्य० निः।

निरखना० स० क्रि० देखना, विलोकना।

निरंकार० गु० निराकार।

निरंकुश० गु० स्वेच्छाचारी, निडर।

निरंजन० गु० निर्मल, राग रहित, अविद्या रहित, ना० पु० ईश्वर।

निरत० गु० अति प्रीतिमय, लीन।

निरतक० ना० पु० नचवैया।

निरर्थ० गु० झूठ, निष्प्रयोजन, बेफ़ायदह।

निरन्त० गु० अन्तरहित, अपरम्पार, ना० पु० आकाश, ईश्वर।

निरन्तर० अव्य० नित्यप्रति, जिसमें वियोग नहीं, सत्य, अन्तर बिन।

निरन्ध० गु० द्रष्टा, देखने वाला।

निरपराध०
निरपराधी० } गु० अपराध रहित, निर्दोष।

निरम्बु० गु० जलरहित।

निरय० ना० पु० नरक, दोज़क।

निरर्थक० गु० ढीला, प्रमादी, अनरीति, अर्थ रहित, निष्प्रयोजन।

निरवग्रह० गु० स्वच्छन्द, स्वतन्त्र।

निरवद्य० गु० आनन्दित, अकथ्य।

निरवारण० ना० पु० उधारन, बचाव, सुलझावट।

निरवारना० स० क्रि० खोलना, छेड़ना।

निरस० गु० रसहीन, फीका, बदमज़ह।

निरस्त० गु० त्यागित, जिसका अस्त न हो।

निरस्त्र० गु० अस्त्रहीन।

निरस्य० गु० त्यागने के योग्य, त्यागकिये।

निरा० गु० केवल, सारा, ठेठ, रूखा।

निराकांक्षी० ना० पु० निस्पृह, आकांक्षारहित

निराकार० गु० आकारहीन, यथा ईश्वर।

निरादर० गु० आदररहित, अवज्ञायुत, वा अवज्ञा करने हारा।
निराधार० गु० सहारा रहित, आधार हीन।
निरामिष० गु० मांसरहित भोजन।
निरालम्ब० गु० आलम्बरहित, अवलम्बहीन।
निरालस्य० गु० आलस्य हीन, कामकाजी, मिहनती, उपायी।
निराश० गु० भरोसारहित, आशा टूटगई।
निराहार० गु० भोजनहीन, बिनकुछखाये।
निरिच्छा०, निरिच्छित० } गु० इच्छारहित बिन इच्छा, जिसको कुछ चाहनहीं।
निरीश० गु० स्वामीरहित, जिसका मालिक न हो पतिहीन, ना० पु० जीवअर्थात् ईशनहीं।
निरीह० गु० चेष्टारहित यथा ईश्वर।
निरीक्षण० ना० पु० ताक, दृष्टि।
निरुत्तर० गु० उत्तरहीन, लाजवाब।
निरुपधि० गु० निष्प्रयोजन।
निरुपम०, निरुपमा० } गु० उपमा हीन, दृष्टान्त रहित।
निरुपधि० गु० उपाधि रहित, बेखटके।
निरुपाय० गु० उपायहीन, विना उपायकिये।
निरूप० गु० रूपहीन, निराकार।
निरूपण० ना० पु० दृष्टि, निर्णय, जवाब, विस्तार पूर्वक कथन।
निरूपित० गु० जो विस्तारपूर्वककहागया वा निर्णय कियागया, निश्चययुत, स्थापित।
निरेखना० स० क्रि० विलोकना, झांकना।
निरोग०, निरोगी० } गु० निरोग, भला चंगा, रोग रहित।
निरोध० ना० पु० घेरना, फाँसना।
निर्गत० गु० निकला।
निर्गता० गु० निकलकर, ना० स्त्री० निकली।
निर्गम० ना० पु० जहां जाय न सके, अगम।
निर्गुण० गु० गुण हीन, निकम्मा, मूर्ख।
निर्गुण्डी० ना० स्त्री० संभालू।
निर्घण्ट० ना० पु० सूचीपत्र।
निर्घात० ना० पु० वज्र, शब्द।
निर्घृणा० गु० निर्दया कठोर।
निर्घोष० ना० पु० ध्वनि, शब्द।
निर्जर० ना० पु० देवता, जो बूढ़ा न हो।
निर्जन० गु० मनुष्य हीन, जनरहित।
निर्जननदी० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।
निर्जल० गु० जलहीन, सूखा, पायाब।
निर्जीव० गु० जिसमें जीवनहीं है यथामिट्टी पत्थर आदि, मृतक।
निर्जास० गु० सार, सिद्धान्त।
निर्झर० ना० पु० झरना।
निर्झरिणी० ना० स्त्री० नदी।
निर्णय० ना० पु० निश्चय, ठिकाना, न्याय, झगड़ा मिटाना।
निर्णीत० गु० निश्चित, निर्णय किया गया।
निर्दई०, निर्दय०, निर्दया०, निर्दयी० } गु० जिसमें दया नहीं है, कठोर, बेरहम।
निर्दिष्ट० गु० जो अच्छी विधि देखा गया वा निरूपित हुआ वा वर्णन हुआ।
निर्दोष०, निर्दोषी० } गु० दोषहीन, अकलंकी, अदोष।
निर्द्वन्द्व० गु० विना झगड़ा, बेखटके।
निर्धन० गु० धनहीन, दरिद्री।
निर्धार०, निर्धारण० } ना० पु० निश्चय, निर्णय।
निर्धारित० गु० निश्चित, निर्णीत।
निर्वंश० गु० वंश रहित, असन्तान, लावल्द।
निर्बन्धु० गु० बन्धु रहित, अकेला।
निर्बल० गु० लाचार, बुड्ढा, जिसको सामर्थ्य नहीं है।
निर्वश० गु० वश रहित, असमर्थ।
नर्बीज० ० बीज रहित, पुत्रहीन।
निर्बुद्धि० गु० बुद्धिहीन, मूर्ख।

निर्बुद्ध० गु० जो समझ में न आवे, मूर्ख।
निर्भय० गु० अभय, निडर।
निर्भर० गु० पूर्ण, पूरा।
निर्मम० गु० ममता रहित।
निर्मल० गु० मलहीन, स्वच्छ, शुद्ध, साफ, फर्छा।
निर्मलता० ना० स्त्री० पवित्रता, स्वच्छता, सफाई।
निर्मली० ना० पु० बीज विशेष जिससे पानी को स्वच्छ करते हैं।
निर्माण० ना० पु० बनावट, रचना, बनाना, कर्त्तव, सार।
निर्माल्य० ना० पु० प्रसाद, निवेदित वस्तु, स्वच्छता, शुद्धता।
निर्मित० गु० रचित, बनाया गया, निर्माणकिया गया।
निर्मूल० गु० हीन मूल, विना जड़।
निर्मोह० } गु० मोहरहित, उदासी।
निर्मोही० }
निर्यास० ना० पु० शिलाजीत, वृक्षका रस अर्थात् गोंद, काथ।
निर्याण० ना० पु० यात्रा, प्रस्थान।
निर्लज्ज० गु० लज्जा रहित, बेहया, नकटा।
निर्लिप्त० गु० स्पर्शहीन, जो लिप्त नहीं है।
निर्लेप० } गु० जिसका चिह्न नहीं वा लेश
निर्लेश० } नहीं, विना लाग, सर्व।
निर्लोभ० गु० लोभ रहित, दाता।
निर्बन्ध० गु० छूटाहुआ।
निर्वाण० ना० पु० मोक्ष, अपवर्ग, लय, गु० बैकुंठवासी, मोक्ष होगया।
निर्वाणमुक्ति० ना०पु० मोक्ष, मुक्ति, बैकुंठवास।
निर्बाधा० गु० बाधा रहित, अकंटक।
निर्वाह० गु० निबाह।
निर्बाहक० गु० निबाह करनेहारा।
निर्विकल्प० गु० भेद रहित, अतर्क्य, कल्पना हीन।

निर्विकार० गु० विकारहीन, निर्बाध, अरोग।
निर्विघ्न० गु० विघ्नरहित, सानन्द, निर्बाधा।
निर्वृत्ति० ना० स्त्री० मुक्ति, मृत्युआनन्द, मुक्त मार्ग, तरीक, पन्थ।
निर्वैर० गु० वैर भाव हीन।
निर्व्याज० गु० अचल, अस्वारथ।
निर्व्याधि० गु० व्याधि हीन, अरोग, अकंटक।
निर्हर० ना० पु० हरनेवाला।
निलज्ज० गु० निर्लज्ज, लज्जाहीन।
निलय० ना० पु० घर।
निवान० गु० नीचान।
निवाना० स० क्रि० नवाना।
निवार० ना० स्त्री० कोर, पट्टी सूतकी।
निवारक० गु० बचानेवाला, रोकनेवाला।
निवारण० ना० पु० निषेध, रोंक, बचाव।
निवारना० स० क्रि० रोंकना, बचाना, बरजना।
निवारत० क्रि० बचावत, रोंकत, बर्जत।
निवारि० क्रि० बचाय कर, रोंकि, बरजि।
निवारित० गु० बचायागया, बर्जागया।
निवावना० स० क्रि० नवाना।
निवास० ना० पु० बसने का स्थान, बास, घर।
निवासी० ना० पु० बसनेहारा, रहनेवाला।
निबिड़० गु० अधिक, सघन, निहायत।
निबुकि० अ० क्रि० झपटि, कूदि।
निवृत्ति० ना० स्त्री० रहाव, रुकावट, विश्राम, चैन।
निवेदन० ना० पु० प्रार्थना, बिनती, अर्ज़ी।
निवेदनपत्र० ना० पु० अर्ज़ी, विनयपत्र।
निवेदित० गु० अर्पित, विनय किया गया।
निवेशन० ना० पु० विवाह, शादी।
निशंक० गु० निडर, निस्सन्देह, बिनप्रयास।
निशा० ना० स्त्री० रात्रि।
निशाकर० ना० पु० चन्द्रमा।
निशागम० ना० पु० रात्रिका आगम, सन्ध्या, सांझ, शाम।

निशाचर॰ ना॰ पु॰ राक्षस, चोर, उल्लूकादि, चन्द्रमा आदि नक्षत्र।

निशाटन॰ ना॰ पु॰ निशाचर।

निशि॰ ना॰ स्त्री॰ निशा।

निशिचर॰ ना॰ पु॰ निशाचर।

निशिनाथ॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा, चांद।

निशिमुख॰ ना॰ पु॰ सन्ध्या, सांझ।

निशिभानु॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा।

निशीथ॰ ना॰ पु॰ आधीरात।

निशीश॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा, चांद।

निश्चय॰ ना॰ पु॰ निर्णय, विश्वास, गु॰ठीक।

निश्चल॰ गु॰ स्थिर, अचल।

निश्चित॰ गु॰ निर्णीत।

निश्चिन्त॰ गु॰ चिन्तारहित, विनाखटके।

निश्चेष्ट॰ गु॰ चेष्टारहित मूर्च्छित।

निश्छिद्र॰ गु॰ निर्दोष छेदरहित।

निःश्रेणी॰ ना॰ स्त्री॰ निसेनी, सीढ़ी, जीना।

निश्श्वास॰ ना॰ पु॰ श्वास, प्राणवायु।

निश्शेष॰ गु॰ अशेष, समस्त, सब।

निषाद॰ ना॰ पु॰ गाने में पहिला स्वर, चाण्डाल संकरवर्णी, केवट, मल्लाह।

निषिद्ध॰ गु॰ जोकर्त्तव्यनहीं, वर्जित।

निषिद्धता॰ ना॰ स्त्री॰ निवारण, कर्त्तव्य रहित, इन्कार।

निषेद॰ ना॰ पु॰ अटुल, दुविधा।

निषेध॰ ना॰ पु॰ इन्कार, निवारण, कर्त्तव्य रहित।

निषेधित॰ गु॰ वर्जित, निवारित।

निष्क॰ ना॰ पु॰ हीरा, १६ द्रम्मका प्रमाण।

निष्कण्टक॰ ना॰ पु॰ उपाधिरहित, बेधड़क।

निष्कपट॰ गु॰ सत्य, सच्चा, छलहीन, भोला।

निष्कर्ष॰ ना॰ पु॰ निश्चय।

निष्कारण॰ गु॰ विना प्रयोजन, बे सबब।

निष्केवल॰ गु॰ एकही, सत्यकर।

निष्क्रमण॰ ना॰ पु॰ संस्कार विशेष।

निष्ठ॰ गु॰ स्थापित, तत्पर, उत्तम, उत्कर्ष।

निष्ठमति॰ ना॰ स्त्री॰ उत्तम बुद्धि, उत्तमज्ञान।

निष्ठा॰ ना॰ स्त्री विश्वास, भरोसा।

निष्ठुर॰ गु॰ निठुर, निर्दय, कठोर, अप्रीति।

निष्ठुरता॰ ना॰ स्त्री॰ }
निष्ठुरत्व॰ ना॰ पु॰ } कठोरता, निर्दयता, निठुरता।

निष्पत्ति॰ ना॰ स्त्री॰ सिद्धि,समाप्ति।

निष्पन्न॰ गु॰ कृत, बना, सिद्ध।

निष्पादन॰ ना॰ पु॰ सम्पादन।

निष्पाप॰ }
निष्पापी॰ } गु॰ पापरहित, निर्दोष।

निष्प्रपंच॰ गु॰ छलहीन।

निष्प्रयोजन॰ गु॰ व्यर्थ, विनाप्रयोजन।

निष्फल॰ गु॰ फलहीन, वृथा, बेफायदह।

निस॰ ना॰ स्त्री॰ निशा।

निसक्त॰ गु॰ असक्त, पौरुषरहित।

निसंक॰ गु॰ निश्शंक।

निसंकट॰ गु॰ संकटरहित।

निसन्धि॰ गु॰ ठोस, सन्धिरहित।

निसरना॰ अ॰ क्रि॰ निकसना।

निसांस॰ गु॰ आहभरना।

निसांसी॰ गु॰ तंग, हैरान।

निसान॰ ना॰ पु॰ तूर्य, नक्कारह।

निसास॰ ना॰ पु॰ विश्वास।

निसि॰ ना॰ स्त्री॰ निशि।

निसित॰ गु॰ पैनी॰ तेज, बाढ़िदार।

निसेनी॰ ना॰ स्त्री॰ सीढ़ी, जीना।

निसोत॰ ना॰ पु॰ औषधि विशेष, गु॰ ठोस।

निस्तार॰ ना॰ पु॰ मुक्ति, मोक्ष, उद्धार।

निस्तारा॰ ना॰ पु॰ निपटारा।

निस्तारना॰ स॰ क्रि॰ निस्तार करना।

निस्तेज॰ गु॰ प्रताप हीन, तेजरहित।

निस्तोक॰ ना॰ पु॰ चुकौता, निपटारा।

निस्पंद॰ ना॰ पु॰ निःचेष्ट, ढिसाव।

निस्पृह॰ गु॰ लालसाहीन।

निस्व॰ गु॰ निर्धन, दरिद्री।

निस्वना० गु० ध्वनि, शब्द।
निस्सन्देह० गु० सन्देहरहित, बेखड़के।
निहंग० गु० नंगा, अचिन्त।
निहत्था० गु० औछा, अस्त्र रहित, लूला, हाथ रहित।
निहाई० ना० स्त्री० लोहे की वस्तु विशेष जिसपर सोना आदि गढ़तेहैं।
निहारी० ना० स्त्री० रज, कपड़े।
निहार० ना० पु० अन्धकार, कुहिरा, रामायणे यथा, जिमिनिहार में दिनकरदुरा, दृष्टि।
निहारना० स० क्रि० देखना, विलोकना,झांकना।
निहारा० स० क्रि० देखा।
निहुरना० अ० क्रि० लचना, झुकना, दबना।
निहुराना० स० क्रि० लचाना, झुकाना, दबाना।
निहोर० } ना० पु० कृपा, उपकार, बिनती,
निहोरा० } फुसलाहट, खुशामद।
निःक्षिप्त० गु० जो निःक्षेप, कियाजावे, त्यागित।
निःक्षेप० ना० पु० परित्याग, धरोहर।
नींद० ना० स्त्री० औंघाई, निद्रा।
नींदना० अ० क्रि० सोना, स० क्रि० मुकरना।
नींदू० ना० पु० सोवैया।
नींब० ना० पु० वृक्ष विशेष, निम्ब।
नींबू० ना० पु० लीमू, फल विशेष।
नीक० गु० भला, अच्छा।
नीका० } गु० सुन्दर, भला, अच्छा।
नीको० }
नीच० गु० छोटा, कमीना, हीन, कुत्सित, निकम्मा, तले, हेठ।
नीचगामी० गु० जो नीचे जाता है, यथा जल।
नीचा० गु० ऊंचके विरुद्ध, नशेब।
नीचाई० ना० स्त्री० छोटाई, नीचापन।
नीचे० अव्य० तले।
नीठ० गु० तुम्हारा।
नीति० ना० स्त्री० उचित, व्यवहार, रीति, क़ानून।
नीतिज्ञ० गु० धार्मिक, न्यायी।
नीद० ना० स्त्री० नींद।
नीदना० स० क्रि० नामानना, मुकरजाना।
नीप० ना० पु० कदमवृक्ष।
नीपुर० ना० पु० लिंग।
नीबी० ना० स्त्री० कोछी, जोस्त्रियांआगे बांधतीहैं।
नीबू० ना० पु० निम्बू।
नीम० ना० पु० नींब।
नीमन० गु० निमन।
नीमावत० ना० स्त्री० नीमानन्दसंन्यासीकापन्थ।
नीर० ना० पु० जल, पानी।
नीरज० ना० पु० कमल, जो जलजातहो।
नीरथ० गु० निरर्थ, निष्फल।
नीरद० ना० पु० मेघ।
नीरधर० ना० पु० मेघ, समुद्र।
नीरस० गु० निरस, रसहीन, फीका।
नीरोग० गु० निरोग, आरोग्य।
नीरोगी० गु० चंगा, भला, रोगहीन।
नील० गु० कृष्णवर्ण विशेष, काला, ना० पु० वस्तु विशेष जो वृक्षके पत्तों से बनाते हैं मुख्य बानर सौ खर्व, १००००००००००००००।
नीलक० गु० नीला, ना० पु० नीलरंग का हरिण विशेष, बीजगणित में विशेष प्रमाण।
नीलकण्ठ० ना० पु० पक्षी विशेष, मोर, अग्नि और श्रीशंकरजी।
नीलगवय० ना० पु० नीलगाव, रोझ।
नीलगाय० ना० पु० रोझ।
नीलता० ना० स्त्री० } श्यामता, कालापन।
नीलत्व० ना० पु० }
नीलपर्बत० ना० पु० विन्ध्यका एकभाग, जो उड़ीसाके दक्षिणहै, हरिद्वार के समीप तीर्थ विशेष।
नीलपुष्पी ना० स्त्री० विष्णुक्रान्ता, अलसी।
नीलबट्टी० ना० स्त्री० नीलकी बट्टी।
नीलम० } ना० पु० मणि विशेष।
नीलमणि० }

नीलरक्त० ना० पु० नीलम।
नीललोहित० ना० पु० श्रीमहादेव जी।
नीलवर्ण० गु० श्यामरंग, आकाशी रंग।
नीला० गु० जो नीलरंग का है।
नीलाई० ना० स्त्री० श्यामता, नीलापन।
नीलाण्डक० ना० पु० नीलगाव, रोझ।
नीलाथोथा० ना० पु० तूतिया।
नीलाम० ना० पु० बिक्री, बिकाव।
नीलाम्बर० ना० पु० नील वर्ण वस्त्र, और श्री-बलदेव जी।
नीलार्त्त० ना० पु० पियाबांसा।
नीलोत्पल० ना० पु० नीलकमल।
नीलोपल० ना० पु० नीलम।
नीवा० ना० पु० सुनाहट, मन्दाई।
नीसारना० स० क्रि० निसारना, निकालना।
नीहार० ना० पु० शिशिर, ओस, कुहिरा।

नूत०
नूतन०
नूत्न० } गु० नया, नवीन।

नूधा० ना० पु० तमाकू विशेष।
नून० ना० पु० लोन।
नूनी० ना० स्त्री० छोटे बालक का लिंग।
नूपुर० ना० पु० स्त्रियों के पैरका गहना अर्थात् बिछुआ वा नेवर वा पायजेब।
नृग० ना० पु० राजा विशेष जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने सरट तनु से उद्धार किया था।
नृत्य० ना० पु० नाच नाचना।

नृत्यक०
नृत्यकारी० } पु० गु० नाचनेवाला।

नृदेव०
नृदेवता०
नृप०
नृपति०
नृपाल० } ना० पु० राजा, बादशाह।

नृशंसी० गु० दुष्ट, कुवादी।

नृसिंह० ना० पु० चौथा विष्णु का अवतार और मनुष्यों का शिरोमणि।
ने० अव्य० सकर्मकक्रिया के भूतकाल में कर्त्ता के अन्त में यह चिह्न आता है, यथा, उस ने मारा।
नेई० ना० स्त्री० नींव दीवारकी, भीतर की जड़।

नेक०
नेकु० } गु० तनिक, अल्प, थोड़ा।

नेग० ना० पु० विवाह में जो दान दियाजाता है अथवा जो नेगी नाऊ पाते हैं वा जो पटवारी गांव में पाता है।
नेटा० ना० पु० पोंटा, रेंटा।
नेठमी० गु० स्थिर, एकठामी, कायम।
नेतक० ना० पु० नड़कुल।
नेता० ना० पु० नींबकावृक्ष।
नेति० अव्य० नाइति, नहीं।
नेती० ना० स्त्री० रस्सी जो मथानी में बांधते हैं सूत जो नाक में डालकर मुखमें निकालकर नाक को स्वच्छ करते हैं, उसका नाम।
नेम० ना० पु० नियम, संयम, प्रण, शौच।
नेमी० गु० संयमी, नियमी, प्रणी।
नेरे० अव्य० निकट।
नेव० ना० स्त्री० भीतिकी जड़ अव्य० नाइव।
नेवतना० स० क्रि० न्योतादेना, भोजन के लिये किसी को बुलाना।
नेवता० ना० पु० बुलाना, निमन्त्रण।
नेवताना० स० क्रि० न्योता दिलाना।
नेवर० ना० पु० घोड़े के पांवका रोग विशेष, भूषण विशेष।

नेवल०
नेवला० } ना० पु० नकुल जन्तु विशेष, जो सांप का वैरी होता है।

नेह० ना० पु० स्नेह, प्रीति, तेल।
नेही० गु० स्नेही, ना० पु० मित्र।
नेत्र० ना० पु० नयन, आंख, पट, कस्तूरी, ज्ञान।
नेत्रपुत्रिका० ना० स्त्री० आंख की पुतली।
नेत्रलोत० ना० पु० बन्धुआ।

नेत्राम्बु० ना० पु० आंसू।

नेत्रोपमा० ना० स्त्री० बादाम, आंखोंकी उपमा।

नैऋत्य० ना० पु० पश्चिम और दक्षिण का कोण, राक्षस।

नैकट्य० ना० पु० निकटता।

नैक० गु० थोड़ा, अल्प।

नैजाना० अ० क्रि० झुकना, निहुरना।

नैना० ना० पु० नैन, पगहा।

नैपाल० ना० पु० तांबा, देश विशेष, नीति का प्रतिपाल।

नैपाली० ना० पु० मनसिल, नैपालवासी।

नैपुण० गु० निपुण।

नैपुण्य० ना० पु० निपुणता।

नैमित्तिक० गु० समयी, निमित्तका।

नैमित्तिकदान० ना० पु० समयपाय देना।

नैया० ना० स्त्री० नावछोटी, खेवट, डांड़ी।

नैयायिक० ना० पु० न्यायशास्त्र का ज्ञाता, तार्किक।

नैर्मल्य० ना० पु० निर्मलता।

नैवेद्य० ना० पु० देवता के भोजन की सामग्री, गुड़अर्पण।

नैष्ठिक० गु० विश्वासी, निष्ठायुत।

नैहर० ना० पु० स्त्री का मैका।

नो० अव्य० नहीं।

नोखा० } गु० अनूठा, अजायब।
नोखो० }

नोच० ना० पु० बकोट, चुटकी।

नोचना० स० क्रि० बकोटना, चुटकी लेना।

नोन० ना० पु० लोन।

नोना० स० क्रि० दुहने के समय गाय के पैर बांधना, ना० पु० सीताफल विशेष।

नोनापानी० ना० पु० लवणांबु, समुद्रकाजल।

नोनिया० ना० पु० लोनिया।

नोय० क्रि० दुहते समय गायके पांवबांधना।

नौका० ना० स्त्री० नाव।

नौखण्ड० ना० पु० पृथ्वीके नौ खण्ड।

नौगरी० ना० स्त्री० नवगिरी।

नौछावर० ना० पु० निछावर।

नौढ़ना० अ० क्रि० झुकना, निहुरना, आधीन होना।

नौढ़ाना० स० क्रि० झुकाना, निहुराना।

नौतना० स० क्रि० नेवतना।

नौता० ना० पु० नेवता।

नौमासा० ना० पु० गर्भ से नवें मास का उत्सव।

नौमि० क्रि० नमस्कार करताहूं।

नौमी० ना० स्त्री० नवमी, नवीं तिथि।

नौरतन० ना० पु० नवरत्न।

नौल० ना० पु० नवल।

नौसादर० ना० पु० औषधि विशेष।

न्यक्कार० ना० पु० कुरता।

न्यग्रोध० ना० पु० बर्गद का वृक्ष।

न्यस्त० गु० सौंपाभया, सौंपित।

न्याय० ना० पु० धर्म, विचार, तर्कशास्त्र, विशेष फैसला।

न्यायक० ना० पु० न्याय करनेहारा।

न्यायशास्त्र० ना० पु० तर्कशास्त्र।

न्यायी० ना० पु० न्यायक, न्यायशास्त्र का जाननेहारा।

न्यार० ना० पु० चारा।

न्यारा० गु० अलग, निराला, अनूठा।

न्यारिया० गु० सचेता, चौकस।

न्यून० गु० छोटा, घाट, हीन, कम।

न्यूनकोण० ना० पु० छोटा कोना।

न्यूनता० ना० स्त्री० } घटती, कमी।
न्यूनत्व० ना० पु० }

न्यूनवय० गु० कम उमर।

न्यूनाधिक० ना० पु० छोटा बड़ा।

न्यौतना० स० क्रि० नेवतना।

न्यौता० ना० पु० नेवता।

न्यौताना स० क्रि० नेवताना।

न्यौला० ना० पु० जन्तु विशेष।
न्वस्तांभड़ी० ना० स्त्री० निसोत।

[प]

पकड़० ना० स्त्री० ग्रहण, गिरिफ्त।
पकड़ना० स० क्रि० गोचना, रोकना, गहना, ग्रहणकरना, धरलाना।
पकड़ाना० स० क्रि० ग्रहण कराना, सौंपना, गहाना।
पकना० अ० क्रि० रंधाना, पक्काहोना, पीबियाना।
पकवाई० ना० स्त्री० पकाने का काम वा पैसा।
पकवान० ना० पु० पाक जो घी में पकाया गया, यथा पूरी, समोसा आदि मिठाई।
पकवाना० स० क्रि० रंधाना, पक्का कराना, चुरवाना।
पका० गु० पक्का।
पकाई० ना० स्त्री० पूराई, सिद्धता, तैयारी।
पकाना० स० क्रि० पकवाना, पक्का करना, रांधना, चुराना।
पकाव० ना० पु० पीबियाहट, पुरुतगी।
पकोड़ा० ना० पु०, पकोड़ी० ना० स्त्री०, पकौड़ी० ना० स्त्री० } बेसन की बनीहुई, वस्तु विशेष अर्थात् पाक विशेष फुलौरी।
पक्क०, पक्का० } गु० रांधा, रंधा, पूरा, खड़ा, तैयार।
पख० ना० पु० पक्ष।
पखड़ी० ना० स्त्री० फूल की पत्ती।
पखरौटा० ना० पु० पानपर लगायाहुआ स्वर्ण वा रौप्य का पत्र।
पखवारा० ना० पु० पक्ष १६ दिनका प्रमाण।
पखा० ना० पु० पंख, पक्ष, ज्ञानदीपके यथा (पखामोरधारे जटा शीश सोहै)
पखान० ना० पु० पाषाण, दोहा (ज्यौं पनिहारी जेवरी खैंचतकटतपखान। तुलसी रसना रामकहु पापकितिक अनुमान)
पखारना० स० क्रि० धोना।
पखारे० स० क्रि० धोये।
पखाल० ना० पु० चमड़े का जलपात्र जो बैलपर लादकर लाते हैं।
पखावज० ना० पु० ढोल वा बड़ा मृदंग।
पखावजी० ना० पु० पखावज बजानेहारा।
पखेडू०, पखेरू० } ना० पु० पक्षी, परिन्द।
पखेस० ना० पु० छापा, चिह्न।
पखोर० ना० पु० ठोकर, लातकी ठेल।
पखोरन० ना० पु० पखोर का बहुवचन।
पखोरना० स० क्रि० ठोकर मारना, लात का धक्का लगाना।
पग० ना० पु० पद, पांव, पैर।
पगड़ी० ना० स्त्री० सिरबन्द, दस्तार, शिरपर बांधने का वस्त्रविशेष।
पगदण्डी० ना० स्त्री० छोटी वा संकेतराह।
पगना० अ० क्रि० किसी रस में डूबना वा पकना वा मनलगाना।
पगला० गु० मूर्ख, सिड़ी, बावला।
पगहा० ना० पु० बड़ीरस्सी।
पगहिया०, पगही } ना० स्त्री० छोटापगहा।
पगा० गु० किसी रस में डूबाहुआ, ना० स्त्री० नदी।
पगार० ना० पु० भीति बनाने के लिये भीगी मिट्टी वा पांवतक पानी का आना।
पगारनि० ना० स्त्री० मुंडेरी रामचन्द्रिकायां यथा (अति उच्च अगारनि बनी पगारनि जनु चिन्तामणि नारि)
पगिया० ना० स्त्री० पगड़ी।
पगु० ना० पु० पग, पांव।
पगुराना० अ० क्रि० जुगाली करना।
पंक० ना० पु० पानी मिली मिट्टी, कीचड़।
पंकज० ना० पु० कमल।
पंक्ति० ना० स्त्री० पांति, सतर, कतार।
पंख० ना० पु० पखना, पर, पक्ष।

पंखा ना० पु० बेना, बिजना।

पंखिया० गु० बखेड़िया, झगड़ालू।

पंखी० ना० पु० पंखा छोटा, छोटा पक्षी, पखेरू।

पंगत० }
पंगति० } ना० स्त्री० पंक्ति, श्रेणी, धरी।

पंगुला० गु० लंगड़ा।

पचक० ना० स्त्री० सूल।

पचकना० अ० क्रि० सूखना, सूजन उतरना।

पचखना० गु० पांचखण्ड वाला।

पचघरा० ना० पु० घर विशेष जिस में पांच घर हों।

पचतोरिया० }
पचतोलिया० } ना० पु० वस्त्रविशेष अर्थात् सारी ओढ़ने की।

पचना० अ० क्रि० सड़ना, गलना, भस्महोना, परिश्रम करना।

पचपचाना० अ० क्रि० गीला वा ढीला वा भीगा होना, पसीजना, सड़ना।

पचपन० गु० पचास और पांच, ५५।

पचमिल० गु० मिश्रित, मिलित।

पचमेल० गु० पचमिल।

पचस्पचा० ना० स्त्री० दारुहल्दी।

पचलड़ा० ना० पु० }
पचलड़ी० ना० स्त्री० } गु० जिसमें पांचलड़ेंहों।

पचलोना० ना० पु० औषधि विशेष।

पचाडालना० स० क्रि० पचाना, सड़ाना और खायजाना, हजमकरजाना।

पचानबे० गु० नब्बे और पांच, ९५।

पचाना० स० क्रि० पकाना, सड़ाना, हज़म करना।

पचास० गु० पांच दहाई, ५०।

पचासी० गु० अस्सी और पांच, ८५।

पचीस० गु० बीस और पांच, २५।

पचीसी० ना० स्त्री० खेल विशेष।

पचूका० ना० पु० पिचकारी।

पचत्० क्रि० पचता है, दुखपाता है, पकता है।

पचोतर० }
पचोतरा० } ना० पु० सैकड़ा पीछे पांच लेना, पांच रुपये सैकड़ा।

पचौनी० ना० स्त्री० ओझ, झोझ।

पचर० ना० स्त्री० फणी, ठेक।

पच्छम० }
पच्छिम० } पु० पश्चिम।

पछड़ना० }
पछरना० } अ० क्रि० गिरजाना, हटजाना, आधीन होना।

पछताना० स० क्रि० पश्चात्ताप करना, पीछे को शोचना, अफ़सोस करना।

पछतावा० ना० पु० पश्चात्ताप, शोच।

पछना० ना० पु० गोंटी, खोदवाई, चीरा, अस्त्र विशेष।

पछनी० ना० स्त्री० शरीर के चमड़े में चीरा करना।

पछरा० गु० गिरपड़ा, पीछे को हटा।

पछुवा० ना० पु० पवन जो पश्चिम से आता है।

पछाड़० ना० स्त्री० पटकन, पटकनेका काम।

पछाड़ना० }
पछारना० } स० क्रि० गिरा देना, आधीन करना, पटकना।

पछाह० ना० पु० पश्चिम।

पछयाना० स० क्रि० पीछा करना।

पछियाव० ना० पु० पश्चिम का पवन।

पछाड़० ना० स्त्री० फटकन, फटकाव, फटकने का काम।

पछोड़ना० }
पछोरना० } स० क्रि० फटकना, सूप में डालके उछालना।

पजोड़ा० गु० निकम्मा, पाजी।

पंच० गु० पांच ५ ना० पु० जाति के चौधरी, कार्य्यादि के विचारक, सभा, ५ मनुष्य, कमान का रोदा।

पंचक० ना० स्त्री० चिल्ला, रोदइ पांचकरना।

पंचकोश० ना० पु० पांचीश अर्थात्, अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्द।

पंचगव्य० ना० पु० पांचपदार्थ जो गाय से प्राप्त होते हैं अर्थात् दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोमल।

पंचज्योनार॰ ना॰ पु॰ पांचप्रकार की ज्योनार अर्थात् भोज्य, भक्ष्य, लेह्य, चोष्य, पेय, ५।

पंचतत्त्व॰ ना॰ पु॰ पांचतत्त्व अर्थात् आकाश, वायु, अग्नि, जल, मिट्टी, ५।

पंचतंत्र॰ ना॰ पु॰ पांचतंत्र अर्थात् वशीकरण, मारण, उच्चाटन, मोहन, आकर्षण।

पंचत्व॰ गु॰ मृत्यु।

पंचदश॰ गु॰ पन्द्रह, १५।

पंचदशानर्थ॰ ना॰ पु॰ पन्द्रह अनर्थ अर्थात् चोरी, हिंसा, मिथ्या, दम्भ, काम, क्रोध, विस्मरण, वैर, अप्रतीति, भेद, भय, खेद, चिन्ता, लोभ, सर्वस्पर्द्धा, १५।

पंचनखी॰ ना॰ स्त्री॰ गोह।

पंचपल्लव॰ ना॰पु॰ पाँच वृक्षों की पत्ती वा डाली।

पंचपात्र॰ ना॰ पु॰ पूजाका पात्रविशेष।

पंचपुराणलक्षण॰ ना॰ पु॰ पुराणके पांच लक्षण अर्थात् सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, वंशानुचरित।

पंचप्राण॰ ना॰ पु॰ पांचप्राण अर्थात् प्राण, अपान, उदान, समान, व्यान, ५।

पंचभूत॰ ना॰ पु॰ पंचतत्त्व।

पंचम॰ गु॰ पांचवां, रागका स्वरविशेष।

पंचमांश॰ गु॰ पांचवांभाग।

पंचमी॰ ना॰ स्त्री॰ पांचवीं तिथि, व्याकरण में पांचवांकारक।

पंचमुख॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी।

पंचम्यन्त॰ गु॰ जिसके अन्तमें पंचमीका प्रत्ययहै।

पंचवक्त्र॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेव जी।

पंचविंश॰ } गु॰ पच्चीस, २५।
पंचविंशति॰ }

पंचविंशतितम॰ गु॰ पच्चीसवां।

पंचविंशप्रकृति॰ ना॰ स्त्री॰ पच्चीस प्रकृति अर्थात् अस्थि, मांस, त्वक्, रोम, नाड़िका, वीर्य, मूत्र, रक्त, वसा, लार, भूख, प्यास, नींद, क्रांति, आलस्य, दौड़ना, चलना, पसारना, समेटना, कूदना, राग, द्वेष, लाज, भय, मोह, २५।

पंचनख॰ ना॰ पु॰ सिंह, व्याघ्र।

पंचविरोधी॰ गु॰ सबका वैरी, दुष्ट।

पंचशर॰ कामदेव।

पंचशाखा॰ ना॰ पु॰ हाथ।

पंचसूक्ष्मवायु॰ ना॰ पु॰ पांचसूक्ष्म वायु अर्थात् नाग, कूर्म, कृकर, देवदत्त, धनंजय।

पंचांगुल॰ ना॰ पु॰ दोनों अरण्ड, पांचअंगुल।

पंचांगुली॰ ना॰ स्त्री॰ पांच अंगुली अर्थात् अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका।

पंचाध्यायी॰ ना॰ स्त्री॰ श्रीमद्भागवत के रासमण्डल के पांच अध्याय का समुदाय।

पंचानन॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी, सिंह।

पंचामृत॰ ना॰ पु॰ दही, दूध, घी, मधु, शकर की मिलोनी जो देवता हेतु बनाते हैं।

पंचायत॰ ना॰ स्त्री॰ बहुत मनुष्यों की मति वा मनुष्यों का समूह, जिसमें झगड़ा निपटायाजाता है, वा जातिकी सभा वा समुदाय।

पंचाल॰ ना॰ पु॰ देश विशेष।

पंचालिका॰ ना॰ स्त्री॰ वेश्या, पतुरिया।

पंचाली॰ ना॰ स्त्री॰ वेश्या, द्रौपदी।

पंचावन॰ गु॰ पचपन, ५५।

पंचास॰ गु॰ पचास, ५०।

पंचास्य॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेव जी, सिंह, गु॰ पांच मुखवाला।

पंचीकरण॰ } गु॰ पांचकाकियाहुआ, वा पांच
पंचीकृत॰ } पांच कियागया।

पंछी॰ ना॰ पु॰ पक्षी, चिड़िया।

पंजर॰ ना॰ पु॰ पांसली, पांजर, पिंजरा।

पंजरगत॰ गु॰ पिंजरे में।

पंजाब॰ ना॰ पु॰ देशविशेष जिसमें पांच नदियां हैं अर्थात् सतलज, ब्यासा, रावी, चिनाब, जिहलम्।

पंजाबी० गु० पंजाब देशका मनुष्य वा वस्तु।

पंजीरी० ना० स्त्री० औषधिविशेष, जो जच्चा खाती है।

पट० ना० पु० कपड़ापद्धति, गिरने वा मारने का शब्द, द्वार का किवाड़ आदि ढकन, गु० उलटा पुलटा पत्र।

पटकन० ना० स्त्री० पछाड़ चोट।

पटकना० स० क्रि० देमारना, पटकदेना, अ० क्रि० चरचराना, फटना, ना० पु० कोड़ा।

पटका० ना० पु० कर्धनी, कमर बांधने का कपड़ा।

पटकाजाना० अ० क्रि० दबका, पतितहोना, गिरना।

पटकाना०
पटकारना० } स० क्रि० पटकना, देमारना।
पटकींदना०

पटच्चर० ना० पु० पुराना वस्त्र, यथा पटच्चरं जीर्णवस्त्रमित्यमरः।

पटड़ा० ना० पु० सिली बैठने के लिये काठका आसन, चौकी, पीढ़ी, पीढ़ा, तख्ता।

पटतर० ना० पु० तुल्य, सदृश, बराबर।

पटन० ना० पु० पटने का काम।

पटना० स० क्रि० छतका बनना, ढपना, भरजाना, भरना, भरपाना, ना० पु० नगर विशेष।

पटनी० ना० पु० नैया।

पटपट० ना० पु० भुनने का वा मारने का वा पीटने का शब्दविशेष, चटचट।

पटरा० ना० पु० पटड़ा, ऊजड़।

पटरानी० ना० स्त्री० रानी, शाहजादी।

पटरी० ना० स्त्री० छोटापटरा, पटीया, खपरा।

पटल० ना० पु० अभ्रक, अबरक, ढकन, समूह।

पटवा० ना० पु० जातिविशेष, पटुआ।

पटवाना० स० क्रि० पाटना, भरवाना।

पटवारा०
पटवारी० } ना० पु० धरती का लेखा लगानेहारा।

पटा० ना० पु० गदका, पीढ़ा, पीढ़ी, पट्टलिया।

पटाक० ना० पु० धड़ाक, शराट।

पटाका० ना० पु० छछूंदर, आतशबाजी विशेष, धड़ाका।

पटाना० स० क्रि० भराना, चौका गोबर से लगाना, मिट्टी से लीपना।

पटापट० ना० पु० चटाचट।

पटाव० ना० पु० सींचाव, भराव, पटरा जो द्वार वा छतपर डालते हैं।

पटिया० ना० स्त्री० पटरी।

पटीना० ना० पु० पक्षीविशेष।

पटीमा० ना० पु० वस्त्र छापने का बड़ा पटरा।

पटीलना० स० क्रि० मारना, पीटना, आधीन करना।

पटु० गु० चतुर, निपुण, ना० पु० वस्तु, नकछिकनी, गु० सुन्दर।

पटुता० ना० स्त्री० चतुराई, निपुणता, सुन्दरता।

पटुआ० ना० पु० पाट, सन।

पटेर० ना० पु० पौधाविशेष, गोंदी।

पटेरा० ना० पु० बूढ़ाविशेष।

पटेल० ना० पु० लठियाने का काम, प्रभुता, कुरमी, जातिमें प्रधान, महाराष्ट्र की पदवी।

पटेला० ना० पु० नावविशेष, ना० स्त्री० सरावन।

पटेली० ना० स्त्री० छोटा पटेला।

पटैला० ना० पु० पटरा।

पटोतन० ना० पु० पटन।

पटोर० ना० पु० रेशमीवस्त्र, पाट।

पटोल० ना० पु० परवल।

पटोहिया० ना० पु० उल्लू।

पटौनी० ना० स्त्री० नैया, पटनी।

पट्ट० ना० पु० पट, पत्र।

पट्टन० ना० पु० नगर, पुर।

पट्टवस्त्र० ना० पु० रेशमी कपड़ा।

पट्टा० ना० पु० घोड़ेकी पेटी, कुत्ते के गले में बांधनेका चमड़ा, कानों परके रखायेहुये बाल,

लिखतंग अर्थात् खेत आदि की सनद ।

पट्टी० ना० स्त्री० पाटी, बंधनी, पनकपड़ा, किसी स्थान आदिका भाग, शीराकागुड़ ।

पट्टू० ना० पु० बनात की चादर, ऊर्णवस्त्र विशेष ।

पट्ठ० ना० स्त्री० नवयौवना, थोड़े दिन की बकरी ।

पट्ठा० ना० पु० नवयौवन, पाठा, कुश्ती लड़ने हारा, रागविशेष, जिसका लंबापत्ताहो ।

पठ० ना० पु० पढ़न्त ।

पठकायन्० ना० स्त्री० पाठक की पत्नी ।

पठन० ना० स्त्री० पढ़न ।

पठवाना० } स० क्रि० भेजवाना ।
पठाना० }

पठिया० ना० स्त्री० नवयौवना स्त्री, नई बकरी ।

पठौना० ना० पु० } पठाना ।
पठौनी० ना० स्त्री० }

पड़ना० अ० क्रि० गिरना, देश करना, छावनी करना, लेटना ।

पड़पड़ाना० अ० क्रि० बड़बड़ाना, टीसना ।

पड़ाना० स० क्रि० गिराना, लिटाना ।

पड़ापड़० अव्य० वारंवार मार ।

पड़ापाना० स० क्रि० सहज से पाना, कोई वस्तु मार्ग आदि में पाना ।

पड़ाव० ना० पु० ठहराव, टिकाव, टिकासर, टिकने का स्थान, सेना, भीड़ ।

पड़ावना० स० क्रि० पड़ाना ।

पड़िया० ना० स्त्री० भैंस की बछिया ।

पड़ोस० ना० पु० समीपता, निकटता ।

पड़ोसिन्० ना० स्त्री० पड़ोसिनकी स्त्री, समीप वासी स्त्री ।

पड़ोसी० ना० पु० निकटवासी, पड़ोस रहने हारा ।

पढ़न० ना० स्त्री० पढ़ने का मार्ग ।

पढ़ना० स० क्रि० बांचना, पाठकरना, जपना ।

पढ़न्त० } ना० स्त्री० अध्याय, संस्था, विद्या,
पढ़न्ति० } टोटका ।

पढ़ा० गु० चतुर, पण्डित, बुद्धिमान् ।

पढ़ाना० स० क्रि० शिक्षा देना, सिखलाना, बताना ।

पढ़िन० ना० पु० मत्स्यविशेष, मछलीविशेष ।

पढ्य० } गु० पढ़ने के योग्य ।
पढ्यमान० }

पण० ना० पु० प्रतिज्ञा, अवस्था, कमाई, मोल चार काकिणी अर्थात् बीसगण्डा कौड़ी ।

पण्डा० ना० पु० पुजारी, देवालय का प्रधान ।

पण्डित० गु० विद्वान्, गुणवान्, पढ़ा, बुद्धिमान् ।

पण्डिताई० ना० स्त्री० पंडितकाकाम वा विद्या ।

पण्डितायन्० ना० पु० पंडितकी जोरू ।

पण्डियायन्० ना० स्त्री० पांड़े की जोरू ।

पंडुब्बी० ना० स्त्री० जलपक्षी, मुर्गाबी ।

पंडुखी० ना० स्त्री० कपोताकृति पक्षीविशेष, फ़ाखतह ।

पंडूरी० ना० स्त्री० पक्षीविशेष ।

पतग० ना० पु० पक्षी, चिड़िया ।

पतंग० ना० पु० छोटा उड़नेवाला जन्तु, तृणविशेष, लकड़ीविशेष, रंगविशेष, सूर्य्य, पक्षी, अग्नि, वृक्षविशेष ।

पतंगा० ना० पु० चिंगारी, जन्तु पतंगविशेष ।

पतझड़० गु० पत्तोंका गिरजाना, ना० स्त्री० ऋतुविशेष ।

पतन० ना० पु० पटकन, पछाड़, गिरन ।

पतना० अ० क्रि० पड़ना, गिरपड़ना ।

पतला० गु० दुबला, झीना, जो गाढ़ा न हो ।

पतलाई० ना० स्त्री० दुर्बलता, दुबलापन् ।

पतवार० } ना० पु० कनहर नाव के पिछाड़ी
पतवाल० } का डांड़विशेष ।

पतत्रि० ना० पु० पक्षी, चिड़िया ।

पता० ना० पु० चिह्न, निशान ।

पताका० ना० स्त्री० ध्वजा, छोटी झंडी ।

पताल॰ ना॰ पु॰ पाताल।

पति॰ ना॰ स्त्री॰ प्रभु, स्वामी, इज्जत, सुख्याति।

पतित॰ गु॰ भ्रष्ट, दोषी, जो गिरगया।

पतिदेव॰ } ना॰ स्त्री॰ पतिव्रता स्त्री, राम-
पतिदेवता॰ } चन्द्रिकायां, तू पतिदेवनकी गुरु बेटी, तेरी यम मृत्यु कहावत चेटी।

पतिमा॰ ना॰ स्त्री॰ प्रतिमा।

पतिया॰ ना॰ स्त्री॰ पत्री, चिट्ठी।

पतियाना॰ स॰ क्रि॰ प्रतीति करना, भरोसा रखना।

पतियारा॰ ना॰ पु॰ भरोसा, प्रतीति, विश्वास।

पतिव्रता॰ ना॰ स्त्री॰ साध्वी, कुलवन्ती और सुधर्म स्त्री।

पतीरी॰ ना॰ स्त्री॰ चटाई विशेष।

पतील॰ गु॰ पतला।

पतीला॰ ना॰ पु॰ बड़ी बटलोई, तौली, तसला।

पतीली॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा पतीला।

पतुकी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी कराही, पत्तों का पात्र।

पतुरिया॰ ना॰ स्त्री॰ वेश्या, गणिका।

पतुहिया॰ ना॰ स्त्री॰ पतोहू, बहू।

पतोहू॰ } ना॰ स्त्री॰ बहू, पुत्रकी स्त्री।
पतोहू॰ }

पतौरा॰ ना॰ पु॰ सेंठाकी पत्ती।

पतौवा॰ ना॰ पु॰ पत्ती।

पत्तन॰ ना॰ पु॰ नगर।

पत्तर॰ ना॰ पु॰ पत्र, वर्क।

पत्तल॰ ना॰ स्त्री॰ पत्तोंका पात्र भोजनके लिये।

पत्ता॰ ना॰ पु॰ पात, दल, भगली, गहनाविशेष।

पत्ती॰ ना॰ स्त्री॰ पाती, भंग।

पत्थर॰ ना॰ पु॰ पाषाण, शिला।

पत्नी॰ ना॰ स्त्री॰ भार्य्या, विवाहितानारी।

पत्यारो॰ ना॰ पु॰ पतियारा।

पत्र॰ ना॰ पु॰ पत्ता, चिट्ठी, पत्तर, चांदी सोने आदि का पंख।

पत्ररथ॰ ना॰ पु॰ पक्षी, चिड़िया।

पत्रा॰ ना॰ पु॰ तिथिपत्र, यंत्री।

पत्रांक॰ ना॰ पु॰ पत्रकी संख्या।

पत्रिका॰ ना॰ स्त्री॰ चिट्ठी, पत्री।

पत्री॰ ना॰ स्त्री॰ चिट्ठी, पक्षी, वृक्ष, बाण, कमल।

पथ॰ ना॰ पु॰ मार्ग, बाट, राह।

पथरकला॰ ना॰ पु॰ बन्दूकविशेष।

पथरचटा॰ ना॰ पु॰ पौधाविशेष।

पथराना॰ अ॰ क्रि॰ पत्थर होजाना, कड़ा होना।

पथरी॰ ना॰ स्त्री॰ किरकिर, आंकर, कंकरी चकमकका पत्थर, पत्थर जो मूत्रको बंदकरता है, बूटीविशेष, पक्षीका भीतरीअंगविशेष।

पथरीला॰ गु॰ भूमि जिसमें बहुत पत्थरहों।

पथिक॰ गु॰ पु॰ बटोही, मुसाफिर, राही।

पथ्य॰ ना॰ पु॰ रोगीका आहार, लाभकारी, उपकारी, वस्तु, मुफीद।

पथ्या॰ ना॰ स्त्री॰ हड़।

पद॰ ना॰ पु॰ चरण, पांव, अधिकार, महिमा, पति, स्थान, शब्द, स्वरूप, कलिमा।

पदग॰ } गु॰ पैदल, पियादा।
पदचर॰ }

पदच्युत॰ गु॰ महिमासे जो भ्रष्ट, अधिकार से बदलजाना, बदलना।

पदज॰ ना॰ पु॰ पांवकी अंगुली।

पदना॰ ना॰ पु॰ } पदकर, पादू, डरपोंक-
पदनी॰ ना॰ स्त्री॰ } ना।

पदपटी॰ ना॰ स्त्री॰ एकप्रकारका नृत्य।

पदपत्र॰ ना॰ पु॰ पुहकरमूल, कमल के पत्ता, अधिकारका पत्र।

पदपीठ॰ ना॰ पु॰ खड़ाऊं, जूता।

पदम॰ ना॰ पु॰ पद्म।

पदवी॰ ना॰ स्त्री॰ पति, वंशकानाम, आस्पद, मार्ग, अधिकार।

पदवृत्त० ना० पु० शब्द, जो दो शब्दोंसे मिलित हो।

पदस्थ० ना० गु० जो अपनीपदवीपर स्थिरहै।

पदत्राण० ना० पु० जूता।

पदात० ना० पु० पैरकी मारु, चरणकाघात।

पदाति० ना० पु० पैदल, पियादह, सेवक।

पदाना० स० क्रि० वायु छोड़ाना, डराना, खेल में हराना।

पदाभिषिक्त० ना० पु० राज्यस्थान में जो अभिषेकितहो।

पदार्थ० ना० पु० वस्तु, अनूप वस्तु और शब्द का अर्थ, द्रव्य १ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४ विशेष ५ समवाय ६ अभाव ७, ये सात।

पदिक० ना० पु० जड़ाऊ चौकी, हीरा।

पदुत्तम० ना० पु० सेंधवलोन, उत्तमपदवी।

पदोड़ा० गु० पादू, पदक्कड़, डरपोंक।

पद्दराग० ना० पु० पतंगवृक्ष।

पद्ली० ना० स्त्री० पांडुरवृक्ष।

पद्धति० ना० स्त्री० पदवी, मार्ग, दस्तूर, रीति।

पद्म० ना० पु० कमल, चिह्न जो चरणादि में होता है, विष्णु का अस्त्रविशेष, सौनील, १०००००००००००००००।

पद्मक० ना० पु० पदमाक, मुख्य सांप।

पद्मकर्कटी० ना० पु० कमलगट्टा।

पद्मनाभि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रका एकनाम।

पद्मराग० ना० पु० लालमणि, माणिक।

पद्मा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, भार्ङ्गी, नदीविशेष।

पद्माकर० ना० पु० कमलयुक्त तालाब, समुद्र, धनवान्।

पद्माह्व० ना० पु० कमलगट्टा।

पद्मावती० ना० स्त्री० पुस्तकविशेष, पद्मिनी, छन्दविशेष, नदीविशेष।

पद्मिनी० ना० स्त्री० कमलिनी, उत्तम स्त्री।

पद्मी० ना० पु० हाथी।

पद्य० ना० पु० श्लोक, छन्द, नज्म।

पधारना० अ० क्रि० बिदाहोना, जाना, स्थिर करना।

पन० ना० पु० पण, अवस्थाबोधक यथा बालपन, पानी।

पनघट० ना० पु० पानी भरनेका घाट।

पनच० ना० स्त्री० रोदह, चिल्ला।

पनचक्की० ना० स्त्री० वह चक्की जो पानी से चलाते हैं।

पनचोरा० ना० पु० पात्रविशेष।

पनपना० अ० क्रि० मोटा होजाना, प्रफुल्लित होना।

पनपनाहट० ना० स्त्री० सनसनाहट।

पनभत्ता० ना० स्त्री० पानी और भातकी मिलोनी।

पनव० ना० पु० ढोल।

पनवार० ना० पु० पौधाविशेष, राजपूतों में जातिविशेष।

पनवारा० ना० पु० पत्तल।

पनवारी० ना० स्त्री० जिस स्थान में पान उपजता है।

पनस० ना० पु० कटहल।

पनसल्ला० ना० पु० पियाऊ, जहां पथिकादि को पानी पिलाते हैं।

पनसा० गु० फीका, अलोना, ना० पु० छालादा।

पनसारा० ना० पु० औषधि, किराना आदि।

पनसारी० ना० पु० किराना बेचनेवाला।

पनसाल० ना० पु० पनसल्ला।

पनसोई० ना० स्त्री० छोटी नावविशेष।

पनहा० ना० पु० पता, चिह्न, सुराग, चौड़ाव वस्त्रका।

पनहाना० अ० क्रि० दूध उतरना, पल्हाना।

पनहारा० ना० पु० पनभरा।

पनहारिन्० } ना० स्त्री० पानी भरनेहारी स्त्री।
पनहारी० }

पनही० ना० स्त्री० जूती।

पनारा० } ना० पु० मोरी, नाबदान, बद-
पनाला० } ररौ।

पनाली० ना० स्त्री० छोटा पनाला।

पनिया० ना० पु० पानी, जलका सांप।

पनियाना० स० क्रि० सींचना, भिगोना, अ० क्रि० पानी भर आना।

पनियाला० ना० पु० फलविशेष।

पनीहा० ना० पु० जलजन्तु।

पन्थ० ना० पु० मार्ग, मत, धर्म, अर्जन।

पन्था० ना० पु० पन्थ।

पन्थान० ना० पु० मार्ग, बाट, सड़क।

पन्थी० ना० पु० हरनी, माया, जीव ईश्वर, अभिमन्यु, पथिक, मतावलम्बी।

पन्नग० ना० पु० सांप।

पन्नगपति० ना० पु० शेष, सर्पराज।

पन्नगारि० ना० पु० गरुड़, मोर, नेवला।

पन्ना० ना० पु० रत्नविशेष, पत्र।

पन्नी० ना० स्त्री० सुवर्ण इत्यादि का बहुत सूक्ष्म पत्र।

पपड़ा० ना० पु० टुकड़ा, चूर।

पपड़िया० ना० स्त्री० छोटा पपड़ा।

पपड़ियाकथ० ना० पु० श्वेतकत्था।

पपड़ी० ना० स्त्री० देवली, छिलका, परत, पाक विशेष।

पपड़ीला० गु० परतीला, पपड़ीदार।

पपनी० ना० स्त्री० बरनी।

पपरा० ना० पु० पपड़ा।

पपरी० ना० स्त्री० पपड़ी।

पपीहा० ना० पु० चूहेमार, तुर्मती, पक्षी विशेष जो कभी पानी नदी आदिका नहीं पीताहै।

पपैया० ना० पु० खिलौनाविशेष, वृक्षविशेष वा उसका फल।

पय० } ना० पु० दूध, पानी, अमृत, दोष अव्य०
पयः० } ऊपर, तौभी।

पयद० ना० पु० मेघ, गाय।

पयोब्धि० ना० पु० समुद्र।

पयोदधि० } ना० पु० क्षीरसमुद्र अर्थात्
पयोनिधि० } दूध वा जलका समुद्र।

पयस्विनी० ना० स्त्री० विदारीकन्द, दुधारगाय आदि, श्वास जो बायेंकानमें प्रकाशित है।

पयान० } ना० पु० चाला, बिदा।
पयाना० }

पयार० ना० पु० तृणविशेष।

पयोधर० ना० पु० स्तन, चूची, मेघ, तृणविशेष, मदारवृक्ष, पर्वत, समुद्र, राजा।

पर० गु० दूसरा, दूर, पराया, शिरोमणि, परे, अव्य० ऊपर, द्वारा, उपरान्त, तत्पर।

परकना० अ० क्रि० सधना, अभ्यासी होना।

परकाज० ना० पु० परायाकार्य्य, और का काम।

परकाजी० गु० पराया काम करनेवाला वा शोचनेवाला, परार्थी।

परकाना० स० क्रि० सधाना, सिखाना।

परकीय० गु० दूसरेका, आनका।

परकीया० ना० स्त्री० पराईस्त्री वा परपुरुष रत स्त्री।

परख० ना० स्त्री० परीक्षा, तजरुवा।

परखना० स० क्रि० परीक्षा करना, जांचना।

परखाई० ना० स्त्री० परखनेका काम वा उसका पैसा।

परखाना० स० क्रि० परीक्षाकराना, जंचवाना।

परखा० } गु० परीक्षक, परखनेहारा।
परखैया० }

परचा० ना० पु० परीक्षा, इम्तहान।

परचून० ना० पु० आटा दालि आदि।

परचूनिया० ना० पु० बनिया, परचून बेचने हारा।

परचौ० ना० पु० परीक्षा, परखकरना, इम्तहान।

परछिद्र० ना० पु० परायाछेद, परायाभेद।

परजंक० ना० पु० खाट, सेज।

परजा० ना० स्त्री० प्रजा।

परत० ना० पु० लड़, पपड़ा, तह।

परतंत्र० ना० पु० पराधीन जो और के क़ाबू है।

परतल० ना० पु० डेराडण्ड।

परतला० ना० पु० डाब, जिसमें तलवार रखते हैं।

परता० ना० पु० परेता, चरखी, बाछ।

परती० ना० स्त्री० बंजर, पड़ीहुई धरती, वा कपड़े से पवन करके अन्न साफ़ करना।

परतीत० ना० स्त्री० प्रतीत, निश्चय।

परदादा० ना० पु० दादाका बाप।

परदादी० ना० स्त्री० दादे की माता।

परदार०
परदारा० } ना० स्त्री० पराई स्त्री।

परदेश० ना० पु० आनदेश, विदेश।

परदेशी० गु० अन्यदेशी, अनजान, विदेशी।

परद्रोह० ना० पु० परायबैर, आनका विरोध।

परद्रव्य० ना० पु० परायाधन।

परधन० ना० पु० पराया द्रव्य, परायाधन।

परन० ना० पु० प्रण, प्रतिज्ञा, परण।

परनाना० ना० पु० नाना का बाप, प्रमातामह।

परनाला० ना० पु० } मोरी, नाबदान,
परनाली० स्त्री० } नाला।

परन्तु० अव्य० किन्तु, लेकिन।

परपंच० ना० पु० प्रपंच, छल, धोखा, कपट।

परपंची० गु० प्रपंची, छली, कपटी, लपाटी।

परपराना० अ० क्रि० चरपराना।

परपराहट० ना० स्त्री० चरपराहट।

परपुष्टा० ना० स्त्री० कोयल पक्षी।

परपूरन० गु० परिपूर्ण, भरपूर।

परपठ० ना० पु० हुण्डीका उतारा।

परब० ना० पु० पर्व्व, उत्सव, अध्याय, त्योहार।

परबल० गु० प्रबल।

परम० गु० उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, अत्युत्तम, बड़ा।

परमल० ना० पु० विर्वणविशेष।

परमविरत० गु० योगेश्वर, सिद्ध, अतिलीन।

परमहंस० ना० पु० योगीविशेष।

परमज्ञान० ना० पु० शुद्धविज्ञान।

परमा० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति।

परमाणु० ना० पु० अत्यन्त सूक्ष्मवस्तु।

परमात्मा० ना० पु० परब्रह्म, भगवान्, ईश्वर।

परमान्न० ना० पु० पायस, क्षीर।

परमायु० } ना० स्त्री० जीवनकाल,
परमायुष० } समस्त आयु।

परमार्थ० ना० पु० कार्य्य वा व्यवहार जो सब से उत्तम है, कीर्त्ति, पुण्यतत्त्व वस्तु।

परमार्थी० गु० भक्त, कीर्तिमान् उत्तमकार्य्यी।

परमीश० } ना० पु० परमात्मा, सर्व्वेप-
परमेश्वर० } रिस्थ, ईश्वर।

परमेष्ठी० ना० पु० ब्रह्मा।

परमोधु० मूर्च्छना, बेहोशी।

परम्परा० ना० स्त्री० क्रमागत, प्राचीन।

परलोक० ना० पु० स्वर्ग, मरने के पीछे जो लोक।

परवर० }
परवल० } ना० पु० पलवल, तरकारीविशेष।

परवश० }
परबस० } गु० अस्वाधीन, पराधीन।

परब्रह्म० ना० पु० परमेश्वर।

परशाद० ना० पु० प्रसाद।

परशु० ना० पु० फरसा।

परशुधर० } ना० पु० विष्णु नारायण का
परशुराम० } छठा अवतार।

परश्वः० अव्य० परसों।

परस० ना० स्पर्श, छुआवट।

परसना० स० क्रि० छूना, परोसना।

परसिया० ना० पु० हसिया।

परसी० ना पु० मच्छी मार, रामचन्द्रिकायां यथा, वंक हिये न प्रभा सरसीसी, कर्दम काम कछू परसीसी, कामना कामिनि डोरि गसीसी, मीनमनुष्यन की बनसीसी, क्रि० छुई, मिली।

परसूत॰ ना॰ पु॰ रोगविशेष।

परसूतिया॰ } गु॰ जिसको परसूतरोगहो।
परसूती॰ }

परसों॰ अव्य॰ अगिला वा पिछला, तीसरादिन।

परस्पर॰ अव्य॰ आपुस में।

परहित॰ ना॰ पु॰ परायाकाम, परस्वार्थ।

परत्र॰ अव्य॰ परलोक में।

परा॰ अव्य॰ जिस शब्दके प्रथम में यह मिलता है उसका अर्थ कभी प्रभुता, कभी उलटाई, कभी अहंकार, कभी अधिकाईआदि होता है, ना॰ पु॰ श्रेणी, पंक्ति, कतार।

पराक्रम॰ ना॰ पु॰ सामर्थ्य, पौरुष।

पराक्रमी॰ गु॰ सामर्थी, बलवान्।

पराग॰ ना॰ पु॰ फूलकी रज वा धूलि।

परामुख॰ ना॰ पु॰ विमुख, मुखफिरा।

पराजय॰ ना॰ पु॰ पराभव, भगेल, हार।

पराजयी॰ गु॰ पराजयकरनेवाला।

पराजित॰ गु॰ जिसका पराजयहुआ, जो हार गया।

पराजिता॰ ना॰ स्त्री॰ विष्णुक्रान्ता, पौधा।

पराठा॰ ना॰ पु॰ एकप्रकार की रोटीविशेष।

परात॰ ना॰ पु॰ बड़ीथाली, प्रात।

परातिक्ता॰ ना॰ स्त्री॰ लाल पुनर्नवा।

पराती॰ ना॰ स्त्री॰ परात, थाल।

पराधीन॰ गु॰ जो निजवशमें नहीं है, अस्वतंत्र।

पराना॰ अ॰ क्रि॰ भागना, पंजरियाना।

परानी॰ ना॰ पु॰ प्राणी, जीवधारी।

परान्न॰ ना॰ पु॰ औरका अन्न अर्थात् दूसरेकी कमाई वा लागत का भोजन।

पराभव॰ ना॰ पु॰ पराजय, निरादर, हार।

पराभूत॰ गु॰ जो पराजय होगया, जो हारगया।

परामर्श॰ ना॰ पु॰ विचार, मंत्र, उपदेश।

परामोधना॰ ना॰ पु॰ फुसलाहट।

परायण॰ ना॰ पु॰ किसी काममें मनकी लगावट होनी, गु॰ लीन, गटपट, तत्पर।

पराया॰ गु॰ और का, द्वितीय का।

परारा॰ गु॰ पराया।

परालब्धि॰ ना॰ स्त्री॰ भाग्य, दैवगति, द्वितीय जन्म अर्थात् पिछले जन्म कर्म का फल भोग।

परावती॰ ना॰ स्त्री॰ कागजंघा बूटी।

परावह॰ ना॰ पु॰ मुख्य पवन।

पराशर॰ ना॰ पु॰ वेदव्यास जी के पिता मुनि विशेष।

परास॰ ना॰ पु॰ पलास वा रस्सी जो उसकी छाल से बनती है।

परासर॰ ना॰ पु॰ पराशर।

परास्त॰ गु॰ खराब, नष्ट, तहबाला।

पराह॰ ना॰ स्त्री॰ भागाभाग, देशत्याग।

पराह्ण॰ ना॰ पु॰ दोपहर दिन चढ़े के उपरान्त।

परि॰ अव्य॰ अति, पास, जिस शब्दकी आदि में यह युक्तहोता है उसका अर्थ कभी चौदिशा, कभी भाग, कभी त्याग, कभी अवधि, और कभी अधिक आदि होजाता है।

परिकर॰ ना॰ पु॰ कमरफेंट।

परिक्रमा॰ ना॰ स्त्री॰ प्रदक्षिणा।

परिखा॰ ना॰ स्त्री॰ खाई।

परिगणन॰ ना॰ पु॰ मापना, गिनना।

परिग्रह॰ ना॰ पु॰ पड़ोसी, निकटवासी।

परिघ॰ ना॰ पु॰ बज्र, पर्वत, बाण, सूर्य्य, चांद, शेष, जल और ब्योंडा।

परिचय॰ ना॰ पु॰ मेल मिलाप, जान पहिंचान।

परिचर॰ ना॰ पु॰ परिधिस्थ, परिसेवक।

परिचर्य्या॰ ना॰ स्त्री॰ सेवा, खिदमत।

परिचारक॰ ना॰ पु॰ सेवक, ढंढोरिया, जमादार।

परिचारी॰ ना॰ स्त्री॰ दासी, सेवकिन।

परिच्छिन्न॰ ना॰ पु॰ परिमित, छीन, क्षीण।

परिच्छेद॰ ना॰ पु॰ विभाग, अध्याय, पर्व।

परिजन० ना० पु० परिवारकेलोग, निकटवासी।
परिणाम० ना० पु० अन्त, समाप्ति, अवस्थान्तर की प्राप्ति।
परिणाह० गु० विशाल, मोटा, स्थूल।
परितः० अव्य० चारों ओर सर्वत्र।
परिताप० ना० पु० सन्ताप, दुःख,शोक,पीड़ा।
परितोष० ना० पु० सन्तोष, प्रसन्नता।
परित्राण० ना० पु० रक्षा,रखवाली, पालना।
परित्राता० गु० रक्षक, पालनेवाला।
परित्यक्त० गु० जो सर्वप्रकारत्यागित।
परित्याग० ना० पु० जो भलीभांति त्याग।
परिदेवन० ना० पु० विलाप, शोक, रोना।
परिधन० } ना०पु० कपड़ापहिरनेके, रामायण,
परिधान० } जटा मुकुट परिधन मुनि चीरा।
परिधि० ना० स्त्री० वेष्टनकीमाप,मण्डल,घेरा।
परिधेय० गु० पहिरायागया।
परिन० } ना० पु० विवाह, नाम माला, परि-
परिनैन० } ननिवेशन, परिनैन, उद्वाह, जुग, विवाह।
परिपक्व० गु० पक्का, पट्ठ।
परिपन्थी० गु० वैरी, शत्रु।
परिपाक० गु० पक्का, ना० पु० समाप्ति और अन्त।
परिपाटी० ना० स्त्री० अनुक्रम, उत्क्रम, रीति, दस्तूर।
परिपिष्टक० ना० पु० सीसाधातु।
परिपूरण० }
परिपूरन० } गु० समस्त, सम्पूर्ण, सर्व्व, सब।
परिपूर्ण० }
परिवाह० ना० पु० मुख्य पवन।
परिभद्र० ना० पु० नींबवृक्ष।
परिभव० ना० पु० पराभव, अनादर, बदनामी।
परिभाषा० ना० स्त्री० व्याकरणादि शास्त्र का संकेत।
परिभ्रमण० ना० पु० फिरना, घूमना।
परिभृत० ना० पु० कोकिला, अच्छा सेवक, यथा, वनप्रियाः परिभृतः कोकिलापिकइत्यपि, इत्यमरः रामचन्द्रिकायां, देखो शुभगिरिवर स-कल छोबावर फूलबरण बहु बारनिकरे, संगसरस भक्ष जन केशरिकेवन मनहु धरनि सुग्रीव धरे, संगशिवा विराजै जग सुखगाजै परिभृतबोलै चित्त हरे, शिरशुभचन्द्रकधर परम दिगम्बर मानौहर अहिराज धरे, इस छन्द में श्लेष है इसलिये परिभृत के दोनों अर्थ सिद्ध हैं।
परिमल० ना० पु० सुगन्धि, सुवास।
परिमाण० ना० पु० परिच्छेद करना, बाट, बटखरा।
परिमित० गु० जो नापागया, मिलाहुआ।
परिवर्त्त० ना० पु० बदल, एराफेरी, भागाभाग।
परिवर्त्तन० ना० पु० बदलना, एराफेरीकरना।
परिवाद० ना० पु० गाली, उलहन, निन्दा।
परिवार० ना० पु० घराने के लोग, पोष्यजन, वंश।
परिवृढ़० ना० पु० स्वामी, नायक, मालिक।
परिवृत्त० गु० चारों ओर से घिराहुआ।
परिवेष० ना० पु० घेरा, गोलाई, परिधि।
परिवेषण० ना० पु० लपेटना, भोजन का परोसना।
परिवेष्टित० गु० जो लपेटागया, घेरागया।
परिव्राजक० ना० पु० संन्यासी।
परिव्राजी० ना० स्त्री० म्योंढ़ी, पौधा, मुण्डी।
परिशोध० ना० पु० ऋणको चुकायदेना।
परिश्रम० ना० पु० आयास, श्रम, थकान, क्लेश, मिहनत।
परिश्रमी० गु० कामकाजी, धुनी, मिहनती।
परिष्कार० ना० पु० शोभा, आभूषण।
परिष्कृत० गु० शोभित, आभूषित।
परिहरना० स० क्रि० त्यागना, छोड़ना,खेलना।
परिहार० ना० पु० अवज्ञा, अपमान, और राजपूतों में जाति विशेष।

परिहास० ना० पु० व्यंग वाक्य, हँसी, ठट्ठा, खिल्ली, कौतुक।

परी० ना० स्त्री० तेल भांड़े से निकालने का पात्र विशेष, पारसी भाषा में अप्सरा को कहते हैं।

परीच्छित० गु० दूसरे की इच्छानुसार।

परीक्षक० ना० गु० परीक्षा करनेहारा।

परीक्षा० ना० स्त्री० जांच, खोज, इम्तहान।

परीक्षित० गु० जो जांचा गया, परीक्षा किया गया, ना० पु० अर्जुनका पोता, राजा विशेष।

परु० ना० पु० पोर, गांठ।

परुष० गु० कठोर, ना० पु० कुवचन, गाली, निरसवचन, असह वचन।

परुषाक्षर० ना० पु० कुवचन, असहवचन।

परुष०
परुषक० } ना० पु० फालसा वृक्ष।

परे० अव्य० उधर।

परेखा० ना० पु० पछितावा।

परेतना० स० क्रि० अटेरना।

परेतराट० ना० पु० जमराज।

परेता० ना०पु० अटेरन, चरखी।

परेवा० ना० पु० कबूतर, प्रतिपात्तिथि।

परेश० ना० पु० श्रीभगवान्।

परेह० ना० पु० पलेव।

परोपकार० ना० पु० पराया स्वारथ करना।

परोपकारी० गु० जो पराया उपकार करे।

परोस० ना० पु० निकट, पास, समीप, पड़ोस।

परोसना० स० क्रि० भोजन थाली आदि में रखना।

परोसा० ना० पु० पाक जो किसी को भेजें वा देवें।

परोसी० ना० पु० निकटवासी, पड़ोसी।

परोसैया० ना० पु० परोसनेवाला।

परोहन० ना० पु० वाहन, रथ, बहल, घोड़ा आदि।

परोहा० ना० पु० चरस, मोट।

परोक्ष० ना० पु० वनवासी, वानप्रस्थ, गु० गुप्त, अगोचर।

पर्चा० ना० स्त्री० परीक्षा।

पर्चाना० स० क्रि० भेटकरवाना, बातचीत करना, सुलगाना, जलाना।

पर्चूनिया० ना० पु० आटादाल बेचनेवाला।

पर्चौनी० ना० स्त्री० आटादाल बेचनेकाकाम।

पछती० ना० स्त्री० छोटी छानिया जो भीतकी भीतिपर डालते हैं।

पर्छा०
पर्छाई०
पर्छांवा० } ना० स्त्री० प्रतिबिम्ब, प्रतिरूप, अक्स।

पर्ज० ना० स्त्री० ढालका हथकड़ा, रागिनीविशेष।

पर्ण० ना० पु० पत्ता, पान, प्रतिज्ञा, प्रण।

पर्णकुटी०
पर्णशाला० } ना० स्त्री० पत्तोंसे छाया हुआ, झोंपड़ा।

पर्दादा० ना० पु० दादाका बाप, प्रपितामह।

पर्दादी० ना० स्त्री० दादा की माता, प्रपितामही।

पर्पट०
पर्पटक० } ना०पु० पित्तपापड़ा।

पर्यङ्क०
पर्य्यंक० } ना० पु० सेज, खाट, पलँग।

पर्य्यटन० ना० पु० भ्रमण।

पर्य्यटित० गु० भ्रमित, घूमाभया।

पर्य्यन्त० अव्य० तक, लग, ना० पु० अन्त्य की सीमा।

पर्य्यवसान० ना० पु० चरम, समाप्ति।

पर्य्याय० ना० पु० क्रम, डौल, अवसर, टीप।

परला० गु० फासला, उसपारका।

पर्व० ना० पु० त्योहार, उत्सव, बड़ादिन, नहान, अध्याय, मणि, हीरा, कुसमय।

पर्वत० ना० पु० पहाड़, तरकारीविशेष, मुनि वि०।

पर्वतनन्दिनी० ना० स्त्री० श्रीपार्वतीजी।

पर्वतारि० ना० पु० इन्द्र।

पर्वतिया० ना० पु० लौकी, लौवा, पर्वतवासी।

पर्वती॰ ना॰ पु॰ पहाड़िया, स्त्री, लौकी।
पर्वतीय॰ गु॰ पहाड़िया, जिस देश में बहुत पर्व्वत हैं।
पर्वाल॰ ना॰ पु॰ अंजनहारी, कंजिया।
पर्वी॰ ना॰ स्त्री॰ पर्व।
पर्शुका॰ ना॰ स्त्री॰ पांसली।
पल॰ ना॰ पु॰ दण्डका साठवां भाग है॰ निमेष, मांस, गोश्त, पलक।
पलक॰ ना॰ पु॰ आंखों का ढक्कन, पपनी, निमेष, फारसी शब्द।
पलंग॰ ना॰ पु॰ खाट।
पलंगड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी खाट।
पलटन॰ ना॰ स्त्री॰ एकसहस्र पैदल की सेना।
पलटना॰ स॰ क्रि॰ बदलना, अ॰ क्रि॰ लौटना, फिरना, बहुरना।
पलटा॰ ना॰ पु॰ बदला, प्रतिकार, फल, पैंचा, पौधा।
पलटाखाना॰ अ॰ क्रि॰ फिरना, उलटना।
पलटाना॰ स॰ क्रि॰ बदलाना, फिराना, लौटाना।
पलटालेना॰ स॰ क्रि॰ बदला लेना।
पलटाव॰ ना॰ पु॰ फिराव।
पलड़ा॰ ना॰ पु॰ तखड़ीका एक पल्ला।
पलथा॰ ना॰ पु॰ लोट पोट।
पलथामारना॰ अ॰ क्रि॰ लोटना पोटना, पैर समेट के बैठना।
पलथी॰ ना॰ स्त्री॰ एक प्रकार का आसन।
पलन॰ ना॰ पु॰ पलकी बहुतात, पलक, पलावट, प्रतिपालन।
पलना॰ अ॰ क्रि॰ प्रतिपालन होना, मोटाहोना, बढ़ना, पनपना, ना॰ पु॰ हिण्डोला।
पलभक्ष॰ ना॰ पु॰ सिंह, मांसभक्षी।
पलल॰ ना॰ पु॰ पीना वा खली।
पलवल॰ ना॰ पु॰ तरकारी विशेष।
पलवाना॰ स॰ क्रि॰ पोषवाना, पालनकराना।
पलवार॰ ना॰/स्त्री॰ नाव विशेष।
पलवारी॰ ना॰ पु॰ नाव, पलवार के खेवक।
पलक्ष॰ ना॰ पु॰ द्वीप विशेष।
पला॰ ना॰ पु॰ कछी, गु॰ मोटा।
पलाण्डु॰ ना॰ पु॰ पियाज, कन्द विशेष।
पलान॰ ना॰ पु॰ पालान, जो घोड़े आदिपर रखते हैं।
पलानना॰ स॰ क्रि॰ पलान रखना।
पलाना॰ अ॰ क्रि॰ भागजाना, बराना, छाना, छाजना, प्रतिपालन कराना।
पलानी॰ ना॰ स्त्री॰ परछती, जो ऊपर पर डालते हैं, वा छाने का काम।
पलायन॰ ना॰ पु॰ भागाभाग।
पलाव॰ ना॰ पु॰ पलानी, झांखरआदि भीतिपर रखना बचाव के लिये।
पलाश॰ ना॰ पु॰ ढाखकावृक्ष, पत्ता।
पलाशपापड़ा॰ ना॰ पु॰ पलाश का बीज।
पलाशी॰ ना॰ स्त्री॰ कचूर भेद।
पलास॰ ना॰ पु॰ पलाश. पालने का काम।
पलित॰ गु॰ शिथिल, ढीला, पालागया।
पली॰ ना॰ स्त्री॰ तैलादि निकालनेकीकरछी।
पलीत॰ ना॰ पु॰ भूत, प्रेत, यहशब्द फारसी का है।
पलीता॰ ना॰ पु॰ बत्ती, यह शब्द फारसीकाहै।
पलुवा॰ ना॰ पु॰ पालाभया।
पलेथन॰ ना॰ पु॰ लोई बेलने के लिये सूखा आटा।
पलेव॰ ना॰ पु॰ जूस, पोह।
पलोटना॰ स॰ क्रि॰ दाबना, सेवना।
पलौठा॰ ना॰ पु॰ पहिलौठा।
पल्लव॰ ना॰ पु॰ नये पत्ता, पत्तों समेत शाखा।
पल्लवित॰ गु॰ नये पत्ते लगेहुये।
पल्ला॰ ना॰ पु॰ अन्तर, फर्क, पलड़ा, फारसी में।
पल्ली॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा गांव।
पल्लू॰ ना॰ पु॰ वस्त्र आदि के खूंट।

पल्वग० ना० पु० प्लवग, वानर।
पवन० ना० पु० वायु, वायुकोण का स्वामी।
पवनसखा० ना० पु० अग्नि, आग।
पवनावर्त्ती० ना० स्त्री० कश्यप की एक स्त्रीका नाम।
पवमान० ना० पु० पवन, वायु, हवा।
पवाई० ना० पु० घोड़े के पैरकी सांकर, पैकड़ी, जूते का एक पल्ला।
पवाज० ना० पु० नीच लोग।
पवांर० ना० पु० राजपूत, जातिविशेष।
पवोरना० स० क्रि० चलाना, पठाना, फेंकना।
पवि० ना० पु० वज्र।
पविपात० ना० पु० वज्रपड़ना, बीजलीपड़ना।
पवित्र० ना० पु० शुद्ध, पाक, निर्मल, अदोष।
पवित्रता० ना० स्त्री० शुद्धता, पाकी, निर्मलता।
पवित्रा० ना० पु० यज्ञोपवीत, कुश।
पवित्री० ना० स्त्री० मुद्रिका कुशकी जो संकल्पादि पूजा के समय पहिनते हैं वा पंचधातु रचित।
पशु० ना० पु० जन्तु, जीवधारी, चतुःपदादि।
पशुपति० ना० पु० श्रीमहादेवजी, ग्वालादि।
पशुपाल० } **पशुपालक०** } ना० पु० ग्वाल, अहीर।
पश्चात्० अव्य० पीछे, अनन्तर।
पश्चात्ताप० ना० पु० पछतावा, अफसोस।
पश्चात्तापी० गु० पछितानेवाला।
पश्चिम० ना० पु० पछांह।
पश्यति० } **पश्यन्ति०** } क्रि० देखता।
पश्यतोहर० ना० पु० सामने चोरी करनेहारा, सुनार।
पषान० ना० पु० पाषाण, दोहा, ज्यों पनिहारी जेवरी खैंचत कटतपषान, तुलसी रसना रामकहु पाप किंतिक अनुमान।
पसरना० अ० क्रि० फैलना।
पसली० ना० स्त्री० पांजर की हड्डी।
पसा० ना० पु० दोमुठ्ठीभर।
पसाई० ना० स्त्री० चावल विशेष, तृणविशेष, जिसकाफल धान के सदृश होता है।
पसाउ० } **पसाऊ०** } ना० पु० दया, कृपा, मेहरबानी।
पसाना० स० क्रि० भातका मांड़ निकालना, काढ़ना।
पसार० } **पसारा०** } ना० पु० फैलाव, बिछाव।
पसारी० ना० पु० पनसारी।
पसारना० स० क्रि० फैलाना, बिछाना।
पसीजना० अ० क्रि० स्वेद, छूटना सितली छूटना, दयालु होना।
पसीना० ना० पु० स्वेद, सितली।
पसूज० ना० स्त्री० सीवना, तुर्पन।
पसूजना० स० क्रि० सीना, तुर्पना, तागना, तुर्पाना।
पसेव० ना० पु० पसीना।
पह० ना० पु० तड़का, भोर, अव्य० पास।
पहचान० ना० स्त्री० ज्ञान, चिन्हारी।
पहचानना० स० क्रि० जानना, चीन्हना।
पहनना० स० क्रि० पहिरना, ओढ़ना।
पहनावा० ना० पु० वस्त्र, कपड़ा।
पहर० ना० पु० समयका परिमाण जो तीनघंटे का होता है, एक दिन वा रातका चतुर्थांश।
पहरा० ना० पु० चौकी।
पहराना० स० क्रि० पहिराना, ओढ़ाना।
पहरावनी० ना० स्त्री० जो विवाह आदि में लोगों को कपड़े पहनाते हैं।
पहरिया० } **पहरुआ०** } **पहरू०** } ना० पु० अगोरिया, चौकीदार, कोटवार, रखवारा।
पहरना० स० क्रि० पहनना।
पहल० ना० पु० रुई का पर्त्त, षट्दाष, तिकोनादिकी एक ओर।
पहला० गु० प्रथम, अव्वल।
पहाड़० ना० पु० पर्व्वत।

पहाड़ा० ना० पु० जोड़ौती, गुणन।
पहाड़िया० गु० पहाड़ का निवासी।
पहाड़ी० ना० स्त्री० छोटा पहाड़, पहाड़िया।
पहिया० ना० पु० चक्र, पैया, फिरकी, चर्ख।
पहिरावन० } गु० पहरावनी, ना० स्त्री०।
पहिरावनी० }
पहिरना० स० क्रि० पहनना।
पहिला० गु० पहला, प्रथम, आदिका।
पहिली० ना० स्त्री० प्रथमा।
पहिले० अव्य० आगे।
पहिलौठा० गु० पहिला लड़का।
पहुंच० ना० स्त्री० आवन, बैठ, प्रवेश, रसीद।
पहुंचना० अ० क्रि० आना, उतरना।
पहुंचा० ना० पु० कलाई।
पहुंचाना० स० क्रि० भेजवाना, पठाना।
पहुंची० ना० स्त्री० पहुंचा में पहिरने का गहना विशेष।
पहुड़ना० अ० क्रि० लेटना, सोना।
पहुड़ाना० स० क्रि० लेटाना, सुवाना।
पहुनई० ना० स्त्री० अतिथिपालना, पाहुन का सत्कार करना।
पहुना० ना० पु० पाहुना, महिमान।
पहुनाई० ना० स्त्री० महिमानी।
पहुप० ना० पु० पुष्प, पुहप, फूल।
पहेली० ना० स्त्री० कहानी, दृष्टकूट, पहेलिका।
पक्ष० ना० पु० मासार्द्ध, पाख, तड़, आड़, रक्षा, पंख, ओर, तरफदारी।
पक्षपात० ना० पु० अपने वा अपनों के लिये आग्रह वा रक्षा वा विवाद वा तर्क।
पक्षहीन० गु० पंखरहित, अनाथ।
पक्षाघात० ना० पु० रोगविशेष।
पक्षिराज० ना० पु० गरुड़।
पक्षी० ना० पु० पखेरू, चिड़िया, सहायक।
पा० ना० पु० पांव।
पाउ० ना० पु० सेरका वा प्रत्येक वस्तु का चतुर्थभाग, पद, चरण।

पाई० ना० स्त्री० एक पैसा, वा पैसे का तृतीय भाग, वा पतली छड़ी जिसपर बाना लपेटते हैं।
पांक० ना० पु० कीचड़, दलदल।
पांगा० ना० पु० लवणविशेष।
पांच० गु० पंच ५।
पांचवां० गु० पंचम, ५।
पांजर० ना० पु० पसली, कांख के नीचे दोनों ओर के हाड़।
पांड़े० ना० पु० ब्राह्मण का आस्पद विशेष शिक्षक।
पांति० } ना० स्त्री० धारी, श्रेणी, लकीर,
पांती० } पंक्ति।
पांव० ना० पु० पैर, चरण।
पांवड़ा० ना० पु० बिछौना विशेष, जिस पर बड़े मनुष्य चलते हैं।
पांवपांव० गु० पैदल।
पांस० ना० पु० खाद, सार, धूरा।
पांसना० स० क्रि० सारना, खादडालना।
पांशु० ना० स्त्री० रज, धूली।
पांसु० ना० स्त्री० पांजर की हड्डी, पसली।
पाक० ना० पु० रसोई, भोजन, औषधिविशेष।
पाककार० } गु० रसोइया, बावर्ची।
पाककारी० }
पाकड़० } ना० पु० गूलर विशेष, वृक्ष
पाकड़िया० } विशेष।
पाकना० अ० क्रि० रस में उबलना और पक जाना।
पाकरिपु० ना० पु० इन्द्र।
पाकरी० ना० स्त्री० पकड़िया वृक्ष, कचनार।
पाकशासन० ना० पु० इन्द्र, देवराज।
पाकालय० ना० पु० रसोई, जहाँ खाना पकाया जावे।
पाकरा० ना० स्त्री० सज्जीलवण।

पाख० ना० पु० पक्ष, १५ दिनका, भीति, विशेष जिसपर बरेंड़ी रखते हैं।

पाखण्ड० ना० पु० छल, धूर्त्तता, बनाव।

पाखर० ना० पु० घोड़े वा हाथी के ओढ़ने की झूल विशेष, जो लोहमय होती है।

पाखा० ना० पु० ओसारा, पाख।

पाग० ना० स्त्री० पगड़ी, रस,चासनी, मिलित।

पागना० अ० क्रि० रसमिलित होना, सनना, मिलना, स० क्रि० पकाना।

पागल० गु० उन्मत्त, सिड़ी।

पागा० ना० पु० घोड़ों का झुण्ड।

पागुर० ना० पु० चबाई, जुगाली।

पागुराना० स० क्रि० चाबना, जुगाली करना।

पाचक० } **पाचन०** } ना० गु० रसोइयां, स्वच्छ, अग्नि कारक औषधि, हाजिम।

पाछ० ना० पु० टीका, गोटी खुदवाई।

पाछना० स० क्रि० टीका देना, गोटी खोदना।

पाछें० } **पाछे०** } अव्य० पीछे।

पाञ्चाल० ना० पु० देश विशेष।

पाञ्चाली० ना० स्त्री० द्रौपदी।

पाट० ना० पु० सनकी जाति विशेष, पट्टा, चौड़ाई, टसर, रेशम, सिंहासन।

पाटकृमि० ना० पु० रेशम का कीड़ा।

पाटन० ना० स्त्री० छान, छत, पटना।

पाटना० स० क्रि० छतबनाना, भरदेना, छाना, किसी वस्तु की बहुतायत करना, थोपना।

पाटमहिषी० ना० स्त्री० पटरानी।

पाटम्बर० ना० पु० चेवली, रेशमी कपड़ा।

पाटल० ना० पु० वर्ण विशेष, फूलवाले वृक्ष, लाल सफेद अर्थात् गुलाब।

पाटला० ना० पु० पुष्प विशेष, ना० स्त्री० कुम्भी।

पाटलिपुत्र० ना० पु० शोणभद्र के पास एक प्राचीन नगर।

पाटा० ना० पु० पट्टा।

पाटी० ना० स्त्री० खाट में का लम्बा काठ, पटिया, मिठाई विशेष, चटाई विशेष, तख्ती लिखने की।

पाटीर० ना० पु० चन्दन।

पाठ० ना० पु० सन्था, अध्याय,अध्ययन,सबक।

पाठक० गु० शिक्षक, ना० पु०विप्रजातिविशेष।

पाठशाला० ना० स्त्री० पढ़ने पढ़ाने का घर, चटशाल।

पाठा० ना० पु० युवाजन्तु, मल्लयुद्ध करनेहारा।

पाठी० ना० स्त्री० युवाबकरी, ना० पु० ब्रह्मा, पाठक।

पाठीन० ना० पु० सहस्र दाढ़का मच्छ विशेष।

पाठ्य० गु० जो पढ़ने के योग्य है।

पाड़० ना० स्त्री० गरगज, डोंजा।

पाड़ना० स० क्रि० गिराना, काजलनिकालना।

पाड़ा० ना० पु० भैंसका बच्चा, टीला।

पाढ़ा० ना० पु० मृग विशेष।

पाढ़ी० ना० स्त्री० नदीके पार जाना।

पाण० ना० पु० पीना, पत्ता, नये कपड़े की माड़ी।

पाणि० ना० पु० हाथ।

पाणिग्रहण० ना० पु० विवाह, कन्यादान लेना।

पाणिनि० ना० पु० व्याकरणशास्त्रकर्त्ता, मुनि विशेष।

पाणिनीय० गु० पाणिनि, मुनिका व्याकरण वा उसका पढ़ाने वा पढ़नेहारा।

पाण्डव० ना० पु० पांडुराजा के पांचपुत्र अर्थात् युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव।

पाण्डु० ना० पु०राजा युधिष्ठिर का पिता।

पाण्डुपुत्री० ना० स्त्री० रेणुका औषधि।

पांडुर० ना० पु० वर्णविशेष, अर्थात् उज्ज्वल, पड़की पक्षी, वृक्ष विशेष, पीला, सीठा।

पाण्डुरा० ना० स्त्री० मसूरान्न, पक्षी विशेष।

पाण्डे० ना० पु० ब्राह्मण की जाति वा पदवी विशेष।

पात० ना० पु० पतन, पत्र, पत्ता, कानका गहना विशेष।

पातक० ना० पु० पाप, पापकर्त्ता।

पातकी० गु० पापी, दोषी।

पातर० ना० स्त्री० वेश्या, गु० पतला, दुर्बल।

पातंजल० ना० पु० शास्त्र विशेष।

पाता० ना० पु० पत्ता, रक्षिता।

पाताल० ना० पु० नागलोक, नरक।

पातालाय० गु० पाताल वासी।

पाती० ना० स्त्री० पत्री, चिट्ठी, पत्ती।

पात्र० ना० पु० बर्त्तन, भांड़ा, गु० उचित, योग्य, उत्तम।

पाथ० ना० पु० जल, पानी।

पाथना० स० क्रि० गोबरसे कण्डे कण्डी बनाना, थोपना, जोड़लगाना।

पाथर० ना० पु० पत्थर।

पाथेय० ना० पु० पथमें व्ययकरनेकी सामग्री।

पाथोज० ना० पु० कमल।

पाथोद० ना० पु० मेघ।

पाथोधि० ना० पु० समुद्र।

पाद० ना० पु० पद, चरण, चौथाभाग, गुदशब्द, ठुसकी।

पादकटक० ना० पु० बिछुआ।

पादना० अ० क्रि० टर्रमारना, पादमारना, ठुसकना, गुदा से शब्द मारना।

पादप० ना० पु० वृक्ष, पेड़।

पादांगद० ना० पु० बिछुआ, पांवका भूषण।

पादानोन० ना० पु० लोन विशेष।

पादार्घ० ना० पु० जागीर, माफी।

पादार्पण० ना० पु० पैरदेना।

पादुका० ना० पु० खड़ाऊं, जूती।

पादूकृत० ना० पु० चमार, मोची।

पादोदक० ना० पु० पांवका धोवन।

पाद्य० ना० पु० पांवधोने का पानी।

पाधा० ना० पु० शिक्षक, लाल।

पान० ना० पु० ताम्बूल, ताम्बोल, पत्ता, पाण पाणि।

पानदान० ना० पु० पानरखने का पात्र विशेष।

पाना० स० क्रि० उपार्जन करना, मिलना।

पानिप० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति, सुन्दरता।

पानी० } ना० पु० जल, वीर्य्य, धातु, भड़क,
पानीय० } पति, इज्जत, आबरू।

पान्य० ना० पु० पथिक, मुसाफिर।

पाप० ना० पु० अधर्म, कुकर्म, अपराध, दोष।

पापखण्डन० ना० पु० पापनाशन।

पापड़० ना० पु० बहुत पतले फुलका मूंगके।

पापड़ा० ना० पु० पौधाविशेष।

पापड़ाखार० ना० पु० केले के वृक्षको जलाय के क्षार को जो पापड़ों में लगाते हैं।

पापरूपी० गु० पापकी मूर्त्ति, अधम शरीर।

पापरोग० ना० पु० कोढ़, माता विशेष, शीतला विशेष।

पापात्मा० गु० पापिष्ठ, अधर्मी, काफिर।

पापिन० } ना० स्त्री० दोषिनी, पाप करने
पापिनी० } हारी।

पापिया० ना० पु० एरण्ड, वृक्ष विशेष, जिसके फलको बंगाली खाते हैं।

पापिष्ठ० गु० पापात्मा, अधर्म की मूर्त्ति, हिंसक।

पापी० गु० अपराधी, गुनहगार।

पामर० गु० नीच, अधम, तुच्छ।

पामरी० ना० स्त्री० नीचकी स्त्री, रेशम वस्त्र विशेष।

पायक० ना० पु० पैदल, सेवक, पैदलयोद्धा।

पायढ़० ना० पु० डौंजा।

पायन्त० ना० पु० } खाटका वह ओर जिधर
पायन्ती० स्त्री० } पैरकरते हैं।

पायल० ना० स्त्री० पांवकाभूषण, अर्थात् पायजेब आदि गु० उचाल।

पायस० ना० पु० खीर।

पाय॰ ना॰ पु॰ खाट आदि का पैर, पारसी शब्द है।

पार॰ ना॰ पु॰ नद्यादि का परला तीर।

पारख॰ ना॰पु॰ परीक्षक, जांचनेहारा, परख।

पारखी॰ गु॰ परीक्षक, परखनेहारा।

पारग॰ ना॰ पु॰ पारजाना।

पारण॰ ना॰ पु॰ उपवास के पीछे भोजन मेध।

पारथ॰ ना॰ पु॰ अर्जुन, का॰ यथा, पारथ के स्वारथ क्रियो को स्वारथ भगवान।

पारथी॰ ना॰ स्त्री॰ पालथी।

पारद॰ ना॰ पु॰ पारा।

पारदारिक॰ ना॰ पु॰ परस्त्रीगामी, व्यभिचारी।

पारन॰ ना॰ पु॰ पारण।

पारना॰ ना॰ पु॰ उपवास का खोलना, स॰ क्रि॰ निबेड़ना, गिराना, पालना।

पारल॰ ना॰ पु॰ पौधाविशेष।

पारलौकिक॰ गु॰ जो परलोक का है।

पारब्रह्म॰ ना॰ पु॰ परब्रह्म, परमात्मा।

पारस॰ ना॰ पु॰ लोहका आकर्षक पत्थर विशेष, जिसको बुद्धलोग लोहा एक प्रकार का कहते हैं।

पारसपीपल॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष।

पारसाल॰ ना॰ पु॰ अगला वा पिछला वर्ष, यह शब्द फ़ारसी का है।

पारसी॰ ना॰ स्त्री॰ पारसिक देश की भाषा, ना॰ पु॰ वा उस देश के निवासी, जाति विशेष।

पारसीक॰ ना॰ पु॰ पारसी, घोड़ा।

पारा॰ ना॰पु॰ पारद, धातु विशेष।

पारायण॰ ना॰ पु॰ पुराण आदिका संकल्प पूर्वक पाठ, पूर्णता।

पारावत॰ ना॰ पु॰ कबूतर, कपोत।

पारावार॰ ना॰ पु॰ नदीके दोनों तट, समुद्र।

पारि॰ ना॰ स्त्री॰ पाद, जगत कूप की।

पारिजात॰ ना॰ पु॰ कल्पवृक्ष, कमल, हरसिंहार।

पारिजाती॰ ना॰ स्त्री॰ तेजबल।

पारितोषिक॰ गु॰ जिससे संतुष्ट हो, इनाम।

पारिभद्रक॰ } **पारिभद्र॰** } ना॰ पु॰ कूट औषधि।

पारिभाषिक॰ गु॰ शास्त्र में सुगमता के लिये संज्ञा मानली है।

पारिषद॰ ना॰ पु॰ सहचर, देखवैया।

पारिष्यदा॰ ना॰ पु॰ श्री महादेवजी।

पारिहार्थ॰ ना॰ पु॰ कूट।

पारी॰ ना॰ स्त्री॰ गुड़ की भेली, बारी पन्ती।

पार्थिव॰ ना॰ पु॰ श्रीशिवजी, उद्भिद लोन, राजा, मृत्तिका से निर्मित।

पार्वण॰ ना॰ पु॰ पर्व में श्राद्ध विशेष।

पार्वती॰ ना॰ स्त्री॰ श्रीभवानी, हिमालय जाता।

पार्श्व॰ ना॰ पु॰ बायां वा दहिना पांजर, अव्य॰ पास, समीप।

पार्श्ववर्त्ती॰ ना॰ पु॰ निकटवर्ती।

पाल॰ ना॰ पु॰ नाव दौड़ाने के लिये टाटसे बनीहुई वस्तु, छोटातम्बूं, घास वा पातका पर्त्त जिसमें आंवादि पकाते हैं, सिरकी की बनी वस्तु विशेष।

पालक॰ ना॰ पु॰ सागविशेष, पालनेहारा।

पालकजूही॰ ना॰ स्त्री॰ औषधि, वृक्ष विशेष।

पालकता॰ ना॰ स्त्री॰ पालना, पालने का काम।

पालकी॰ ना॰ स्त्री॰ शिविका, डोलीविशेष।

पालक्य॰ ना॰ पु॰ पालकका साग।

पालन॰ ना॰ पु॰ पोषण, पक्ष, रक्षा, परवरिश।

पालना॰ ना॰ पु॰ हिंडोला, स॰ क्रि॰ पालन करना।

पालव॰ ना॰ पु॰ वृक्षकी चोटी वा शाखा।

पाला॰ ना॰ पु॰ शीत, जाड़ा, कोहर, हिम।
पालागन॰ ना॰ पु॰ पांवछूना, प्रणाम।
पालाश॰ ना॰ पु॰ ढांक का वृक्ष, गु॰ हरित।
पालि॰ ना॰ स्त्री॰ मागधी, प्राकृत भाषा जिस को स्याम आदि देशके पण्डित सीखते हैं।
पालिक॰ ना॰ पु॰ पालक, खाट।
पालिकोण॰ ना॰ पु॰ परिधि का कोना।
पालित॰ गु॰ पाला गया, रक्षित।
पालिन्द्री॰ ना॰ पु॰ गोमा, घूमा, पौधा।
पाली॰ ना॰ स्त्री॰ बंगाल देशमें तोलने आदि का यन्त्र, जिस स्थान में पक्षी लड़ते हैं।
पालय॰ ना॰ पु॰ पालने के योग्य।
पावक॰ ना॰ पु॰ अग्नि, कुसुम्भ।
पावड़ा॰ ना॰ पु॰ पांवड़ा।
पावन॰ ना॰ पु॰ पाक, पवित्र, जल।
पावना॰ स॰ क्रि॰ पाना।
पावरी॰ ना॰ स्त्री॰ खड़ाऊं।
पावस॰ ना॰ स्त्री॰ बर्षातु, बरसात।
पाश॰ ना॰ पु॰ पासा, फांस।
पाशा॰ ना॰ पु॰ पासा।
पांशुभव॰ ना॰ पु॰ खारी, लोन।
पाषण॰ ना॰ पु॰ पाषाणभेद।
पाषण्ड॰ ना॰ पु॰ वेदविरुद्ध, अतिदुरात्मा, कपट वा कपटी।
पाषण्डता॰ ना॰ स्त्री॰ अपनिन्दा, कपट।
पाषण्डी॰ गु॰ कपटी, वेदविरुद्धी, दुरात्मा।
पाषाण॰ ना॰ पु॰ पत्थर।
पास॰ अव्य॰ समीप, निकट, ना॰ पु॰ पाश।
पासपति॰ ना॰ पु॰ वरुण देव।
पासी॰ ना॰ स्त्री॰ फांसी, ना॰ पु॰ वरुणदेव, नीचजाति विशेष, फांसी डालने हारा।
पाहन॰ ना॰ पु॰ पत्थर।
पाहनकृमि॰ ना॰ पु॰ एक कीड़ा होता है, जो पत्थर में अपना घरबनाता है।
पाहरू॰ ना॰ पु॰ चौकीदार, पहरुआ।

पाहि॰ अव्य॰ दयाचाहना, त्राहि, रक्षाकरो।
पाही॰ना॰ स्त्री॰ आनगाव में खेती वा आनगां की आसामी, अव्य॰ पास।
पाहुन॰ ना॰ पु॰ }
पाहुना॰ ना॰ पु॰ } अतिथि, मिहिमान।
पाहुंनी॰ स्त्री॰ }
पिंड॰ गु॰ प्रिय, ना॰ पु॰ स्वामी, प्रीतम।
पिक॰ ना॰ पु॰ कोकिल, कोयल।
पिकप्रिय॰ ना॰ पु॰ आम्रवृक्ष, आम।
पिकबयनी॰ } गु॰ जिसकी का स्वर पिकके
पिकवैनी॰ } समान हो।
पिकवल्लभ॰ ना॰ पु॰ आमवृक्ष।
पिघलना॰ अ॰ क्रि॰ टिघलना, गलना।
पिघलाना॰ स॰ क्रि॰ टिघलाना, गलाना।
पिंगल॰ ना॰ पु॰ छन्द शास्त्रका नाम, नाग विशेष, न्योला, कांच, गु॰ वर्ण विशेष।
पिंगला॰ ना॰ स्त्री॰ श्वास विशेष जो दहिने पुट में नासिका के प्रकाशित होती है।
पिंगरा॰ ना॰ पु॰ पालना, हिंडोला।
पिचकना॰ अ॰ क्रि॰ दबना, निचुड़ना, सिमटना।
पिचकारना॰ स॰ क्रि॰ दबाना, समेटना, कोरना।
पिचकारी॰ ना॰ स्त्री॰ पचूका, धदमकला, जिस में रंगादि भरके छोड़ते हैं।
पिचपिचा॰ गु॰ पिलपिला, ढीला।
पिचिका॰ } ना॰ पु॰ पिचकारी।
पिचुका॰ }
पिचुमन्द॰ ना॰ पु॰ नींबका वृक्ष।
पिछलन॰ ना॰ पु॰ फिसलना, खिसलना।
पिछलना॰ अ॰ क्रि॰ हटना, फिसलना।
पिछला॰ गु॰ पिछाड़ी वा पीछेका।
पिछलाना॰ स॰ क्रि॰ पीछे करना वा पीछा करना।
पिछघाड़ा॰ ना॰ पु॰ } पीछा, पीछेकास्थान।
पिछवाड़ी॰ स्त्री॰ }

पिछाड़ी० ना० स्त्री० पीछे के पैर बांधने की रस्सी पश्चात्, पीछे।
पिछान० ना० स्त्री० पहिंचान।
पिछाने० गु० जानेहुये, पहिंचाने भये।
पिछूत० अव्य० पीछे, उपरान्त ना० पु० घरका पिछवाड़ा।
पिछेत० ना० पु० घरका पिछवाड़ा।
पिछौरा० ना० पु० चद्दर, दुपट्टा।
पिछौरी० ना० स्त्री० छोटा पिछौरा।
पिंजर० } **पिंजरा०** } ना० पु० पक्षी आदि रखनेका घर जो काठ वा लोहादिका बनता है।
पिंजल० ना० पु० तीतर, पक्षी।
पिंजूष० ना० पु० कानका मैल।
पिट० ना० पु० नकुल।
पिटना० अ० क्रि० मारखाना।
पिटारा० ना० पु० कपड़ा आदि रखने का डब्बा जो तृणादि का होता है।
पिटारिया० } **पिटारी०** } ना० स्त्री० छोटा पिटारा।
पिंड० ना० पु० तन, देह, गोलवस्तु, श्राद्ध का गोलाकार अन्न, जो चावलादि के मृतक हेतु देते हैं, क्षेत्र, खेत, गांव।
पिंडफला० ना० स्त्री० कड़ुई तोमड़ी।
पिंडाली० ना० स्त्री० फीली।
पिंडा० ना० पु० पिण्डा, टुकड़ा, मैनफल।
पिंडारा० ना० पु० लुटेरा, चालाक।
पिंडाराव० ना० पु० मैनफल।
पिंडालुका० ना० पु० पिण्डाई।
पिंडालू० ना० पु० फलविशेष, औषधि जड़।
पिंडी० ना० स्त्री० महादेवजी के लिंगका ऊपरी भाग, पिण्डली, बालू से बनाईहुई, छोटी बेदी।
पिंडीमुस्त० ना० पु० नागरमोथा।
पिंडुक० ना० पु० घूघू।
पिण्डोल० ना० पु० माटी विशेष, पोतना।
पिण्याक० ना० पु० पीना, खली।
पितर० ना० पु० पूर्वज, पितृ।
पितराई० ना० स्त्री० पितृ के तीनि पीढ़ा के सम्बन्धी, पीतल का मुर्चा।
पितरौ० ना० पु० माता, पिता।
पितरौला० ना० पु० पितृ पूजने का पात्र।
पितलाना० अ० क्रि० पितराई से बिगड़ना।
पिता० ना० पु० जनक, बाप।
पितामह० ना० पु० ब्रह्मा, पिता का पिता, दादा, आजा।
पितामही० ना० स्त्री० पिता की माता, दादी।
पितिया० ना० पु० चाचा, बाप का भाई।
पितु० ना० पु० पिता, बाप।
पितृ० ना० पु० पिता, देवता, पुरुषा।
पितृघातक० ना० पु० जो पुत्र पिता का बैरी होवे।
पितृपति० ना० पु० धर्मराज।
पितृपक्ष० ना० पु० आश्विन मास का कृष्णपक्ष, कनागत।
पितृव्य० ना० पु० बड़ाचचा, पिता का भाई।
पितृऋण० ना० पु० पिता का ऋण।
पित्त० ना० पु० शरीर का धातुविशेष, सफरा।
पित्तलोह० ना० पु० पीतल।
पित्ता० ना० पु० शरीर का भीतरी, अंग जिस में पित्त रहता है, क्रोध, कलेजा, जहरा।
पित्तिनी० ना० स्त्री० शालपर्णी।
पित्तपापड़ा० ना० पु० औषधि, पौधाविशेष।
पिधान० ना० पु० आच्छादन, ढकना, पोशाक।
पिन० ना० गु० शर्राटा, शब्द।
पिनकी० ना० स्त्री० पीनकवाला।
पिनपिनाना० अ० क्रि० टंकोरना, टुनटुनाना।
पिनहाना० स० क्रि० पहिराना।
पिनाक० ना० पु० श्रीमहादेवजी का धनुष, बाजा विशेष।
पिनाकी० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
पिन्ना० ना० पु० पीना खली।
पिन्नी० ना० स्त्री० चावल आदि का लड्डू।

पिपासा० ना० स्त्री० प्यास, तृषा।
पिपासित० गु० प्यासा, तृषित।
पिपील० ना० स्त्री० चींटी, रामायणे यथा, जिमि पिपील चह सागर थाहा।
पिपीलक० ना० पु० चींटा।
पिपीलका० } ना० स्त्री० चींटी।
पिपीलिका० }
पिप्पल० ना० पु० पीपल वृक्ष।
पिप्पली० ना० स्त्री० पीपली।
पीय० ना० पु० प्रिय, प्रीतम, स्वामी, पति।
पियाना० स० क्रि० पिलाना।
पियार० ना० पु० प्यार, लाड़, दुलार।
पियारा० गु० प्यारा, लाड़ला, दुलारा।
पियाल० ना० पु० चिरौंजी, धान वा कोदो की घास।
पियासी० ना० स्त्री० मछली विशेष, तृषित स्त्री।
पिरकी० ना० स्त्री० फुड़िया।
पिराना० अ० क्रि० दुखना, दर्द होना।
पिरोना० स० क्रि० गूंधना, तागना, छेदना।
पिलई० ना० स्त्री० तापतिल्ली।
पिलचना० अ० क्रि० चिपटना, लिपटना।
पिलना० स० क्रि० धावाकरना, घुसड़ना, अ० क्रि० पिटना।
पिलपिला० गु० चिपचिपा, ढीला, नम्र।
पिलपिलाना० स० क्रि० ढीलाकरना, नम्र करवाना।
पिलपिलाहट० ना० स्त्री० कोमलता, ढीलापन।
पिलाई० ना० स्त्री० पीने के बदले देना वा पीने का काम।
पिलाना० स० क्रि० पानकराना, घुसेड़वाना।
पिलुआ० ना० पु० पिल्लू, कीट।
पिल्ला० ना० पु० कुत्ते का बच्चा।
पिल्ली० ना० स्त्री० कुत्ते की बच्ची।
पिल्लू० ना० पु० कीट विशेष।
पिशाच० ना० पु० प्रेतविशेष, भूत।
पिशाचग्रस्त० गु० जिस को पिशाच लगा है।
पिशाची० ना० स्त्री० प्रेतिनी, पिशाचकी पत्नी।
पिशितोदन० ना० स्त्री० केसर।
पिशुन० गु० दुष्ट, कठोर, चुगल।
पिशुनता० ना० स्त्री० दुष्टता, कठोरता, चुगली।
पिसाई० ना० स्त्री० पीसने का काम वा पैसा।
पिसान० ना० पु० आटा, चून।
पिसाना० स० क्रि० पिसवाना, बुकवाना।
पिसू० ना० पु० पिश्शू, छोटा जन्तु विशेष।
पी० गु० पिय, ना० पु० स्वामी, प्रीतम।
पीक० ना० स्त्री० पान के रसयुक्त थूक।
पीच० ना० स्त्री० माड़।
पीचू० ना० पु० फल विशेष।
पीछ० ना० स्त्री० माड़।
पीछा० ना० पु० पिछला भाग, पिछाड़ी पड़ना।
पीछे० अव्य० पश्चात्, निदान।
पीटना० स० क्रि० कूटना, मारना।
पीठ० ना० पु० पृष्ठ, देहका पिछला भाग, आसनविशेष।
पीठसार० ना० पु० अंकोल।
पीठा० ना० पु० भोजनविशेष।
पीठी० ना० स्त्री० धोई और पीसीहुई उरद की दाल, पीठ।
पीठौता० ना० पु० पत्रका पृष्ठ।
पीड़० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दया।
पीड़क० गु० पीड़ादायक।
पीड़ना० अ० क्रि० पीड़ित होना, स० क्रि० दण्ड देना।
पीड़ा० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दर्द।
पीड़ाकर० गु० पीड़ादायक।
पीड़ित० गु० दुःखित, क्लेशित, रंजीदह।
पीढ़ा० ना० पु० पटरा, मचिया।
पीढ़ाबन्ध० ना० पु० पुस्तकों की आदि का समाचारविशेष, दीबाचह।
पीढ़ी० ना० स्त्री० छोटापीढ़ा, वंशकी परम्परा।

पीत० गु० पीला, ना० स्त्री० प्रीति, कुसुम, ना० पु० मलय चन्दन, पियावासा।
पीतक० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
पीतद्रुमा० ना० स्त्री० दारुहल्दी।
पीतपुष्पा० ना० स्त्री० ककोड़ी, सिसादा।
पीतपुष्पिका० ना० स्त्री० सहदेवी।
पीतफेनु० ना० पु० रीठा।
पीतम० गु० प्रियतम, मित्र, प्यारा।
पीतरक्त० ना० पु० पदमाक।
पीतरस० ना० पु० हल्दी।
पीतल० ना० पु० धातु विशेष।
पीतला० गु० पीतलका।
पीतसार० ना० पु० मलयचन्दन।
पीता० ना० स्त्री० हल्दी, जूही।
पीताम्बर० ना० पु० रेशमी, पीलावस्त्र, श्रीरामचन्द्र जी, श्रीकृष्णचन्द्रजी।
पीन० गु० मोटा, स्थूल, पुष्ट, भारी।
पीनक० ना० स्त्री० अफीम की औंघ।
पीनना० स० क्रि० रुई के अवयवों को पृथक् पृथक् करना।
पीनपयोधर० ना० पु० भारीस्तन, कठोर कुच।
पीनस० ना० पु० नाककारोग विशेष, ना० स्त्री० पालकी विशेष, नाव विशेष।
पीना० स० क्रि० घुड़कना, पानकरना, ना० पु० खली।
पीपल० ना० पु० वृक्ष विशेष।
पीपला० ना० पु० खड्गकी नोक वा अणि वा मुनि।
पीपलामूल० ना० पु० पिप्पली का मूल।
पीपलि० ना० स्त्री० पिप्पली, पीपरी।
पीपा० ना० पु० मद्यादि रखने के लिये काष्ठका बर्त्तन विशेष।
पीब० ना० स्त्री० मांज, राद।
पीबियाना० अ० क्रि० पकना।
पीबियाहट० ना० स्त्री० पकाव, पकनि।
पीयूष० ना० पु० पेउस, अमृत।
पीर० ना० स्त्री० पीड़ा, दर्द, दुःख।
पीरा० गु० पीला।
पीराई० ना० पु० ढोल बजानेहारा।
पीलपर्णिका० ना० स्त्री० सुरहरी।
पीलाम० ना० पु० रेशमी वस्त्र विशेष।
पीली० ना० स्त्री० मोहर, सुवर्ण मुद्रा।
पीलीभीत० ना० पु० बांसबरेली के उत्तर नगर विशेष।
पीलु०, पीलू० } ना० पु० वृक्ष विशेष।
पीवर० गु० मोटा, भारी, स्थूल।
पीसना० स० क्रि० आटाकरना, किचकिचाना, ना० पु० पीसने का अन्न।
पीहर० ना० पु० स्त्री की ससुराल, मैका।
पुं० ना० पु० नर, मनुष्य, पुरुष।
पुंलिंग० ना० पु० पुरुषका चिह्न।
पुंश्चली० ना० स्त्री० पतुरिया, वेश्या।
पुंस० ना० पु० मनुष्य पुरुष, नर।
पुंसवन० ना० पु० संस्कार विशेष।
पुंस्त्व० ना० पु० पुरुषत्व।
पुकार० ना० स्त्री० गोहारि, हांक।
पुकारना० स० क्रि० गुहराना, टेरना, हांकमारना, बुलाना।
पुखराज० ना० पु० मणि विशेष।
पुंग० ना० पु० समूह, युत्थ, पूग।
पुंगव० ना० पु० श्रेष्ठ, बड़ा, उत्तम।
पुंगीफल० ना० पु० पूग, सुपारी।
पुचकारा०, पुचारा० } ना० पु० भीति लीपने के लिये गीली मिट्टी।
पुच्छ० ना० स्त्री० पूंछ, दुम।
पुच्छक० ना० पु० भेड़ी।
पुच्छज० गु० पूंछवाला जिसके पूंछहो।
पुच्छलतारा० ना० पु० केतु, दुमदारसितारा।
पुछैया० ना० पु० खोजनेहारा।
पुजवाना० स० क्रि० पूजाकराना।

पुजाना० स० क्रि० भरना, भराना, पूराकरना, पूजा कराना।

पुजापा० ना० पु० पूजा की सामग्री।

पुजारी० } गु० पूजा करने हारा।
पुजारू० }

पुंज० ना० पु० समूह, ढेर, गंज।

पुट० ना० पु० पद्धा, दोना, मिलाव, घुलाव।

पुटरी० } ना० स्त्री० गठरी, खांड़।
पुटली० }

पुटी० ना० पु० पत्तों का दोना, अंजली।

पुट्ठा० ना० पु० पशु आदि का चूतड़।

पुड़ा० ना० पु० भारी वा बड़ी पुरिया।

पुड़िया० ना०स्त्री० पत्तों की वा कागज़ की दोनी जिसमें कुछ औषधि इत्यादि बांधते हैं।

पुड़ी० ना० स्त्री० खाल जिससे ढोल मढ़ते हैं।

पुण्डरीक० ना० पु० कमल विशेष, आकाश, बाण, सिंह।

पुण्डरीकाक्ष० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र, नारायण।

पुण्ड्रक० ना० पु० ऊख, गन्ना।

पुण्ड्रक० ना० पु० सर्प विशेष, संज्ञा विशेष।

पुण्य० ना०पु० सुकृतकर्म, कीर्ति, पवित्रदान।

पुण्यग्राम० ना० पु० पूनानगर, पुण्यका समूह।

पुण्यग्रामीय० गु० पूने के सम्बन्धी।

पुण्यजन० ना०पु० निशाचर, राक्षस, रात्रिंचरोरात्रिचरःकर्बुरोनिकषात्मजः, यातुधानःपुण्यजनोनैर्ऋतोयातुरक्षसी, इत्यमरः।

पुण्यभूमि० ना० स्त्री० आर्य्यावर्त्त देश।

पुण्ययोषिता० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया।

पुण्यवान्० ना० पु० सुकृती, धर्मात्मा।

पुण्याई० ना० स्त्री० सुकृतकर्म, जो पूर्व किया है गु० पुण्यात्मा, दाता।

पुण्यात्मा० गु० दाता, सुकृती, धर्मात्मा।

पुतला० ना० पु० तृण वा काष्ठ, वा धातु, वा मृत्तिका की बनीहुई मूर्त्ति।

पुतली० ना० स्त्री० आंखका तारा, काष्ठादि निर्मित मूर्त्ति, प्रतिमा।

पुताई० ना० स्त्री० पोतने का काम वा पैसा।

पुत्तलिका० ना० स्त्री० पुतली।

पुत्र० ना० पु० पूत, लड़का, बेटा।

पुत्रक० ना० पु० दौना, सुगन्धित पौधा।

पुत्रजीवी० ना० स्त्री० जीवापोत, पतिजिया।

पुत्रिका० ना० स्त्री० कन्या, बेटी, पुतली।

पुत्री० ना० स्त्री० कन्या, बेटी, आंखका तारा।

पुनः० अव्य० फेर, फिरि, बहुरि।

पुनःपुनः० अव्य० फेर फेर, पुनि पुनि।

पुनराय० ना० पु० दूसरीबार।

पुनरारम्भ० ना० पु० दूसरीबार आरम्भकरना।

पुनरुक्ति० ना० स्त्री० पुनः कथन, दुबारा, फिर से कहना।

पुनरुत्थान० ना० पु० फिरसे उठना।

पुनर्जन्म० ना० पु० दूसरा जन्म, द्वितीयजन्म।

पुनर्नवा० ना० पु० पौधा विशेष।

पुनर्नव० ना० पु० नख, नाखून, नई।

पुनर्वसु० ना पु० सातवां नक्षत्र।

पुनि० अव्य० फिर, पुनि।

पुनिपुनि० अव्य० पुनः पुनः।

पुनीत० गु० निर्मल, पवित्र, पाक।

पुमान्० ना० पु० नर, पुरुष, मनुज।

पुर० ना० पु० नगर वा ग्राम, दैत्य विशेष।

पुरइन० ना० स्त्री० कमल बेलि।

पुरःसर० ना० पु० अग्रगामी, पेशवा।

पुरट० ना० पु० सुवर्ण, स्वर्ण, सोना।

पुरनिया० गु० प्राचीन, बूढ़ा, मगध देश में नगर।

पुरन्दर० ना० पु० इन्द्र।

पुरबासी० गु० नगरका बसने हारा।

पुरबिल० } ना० पु० पिछला वा अगला जन्म।
पुरबिला० }

पुरवाई० } ना० स्त्री० पूर्वका पवन।
पुरवैया० }

पुरश्चरण० ना० पु० जपपाठादिकेपूर्णताकाप्रण।
पुरस्कार० ना० पु० सत्कार, आदर, सन्मान।
पुरा० ना० पु० बड़ागांव, पहिले।
पुराकृत० ना० पु० पिछले जन्मका कर्म।
पुराण० ना० पु० इतिहास विद्या जो व्यास रचित है।
पुराणपुरुष० ना० पु० श्री भगवान्।
पुरातन० **पुरातम०** } ना० पु० प्राचीन, पिछला,पुरुषा।
पुराना० स० क्रि० भरदेना, खिचवाना, कढ़वाना, गु० कालीन, प्राचीन, जीर्ण।
पुरारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी।
पुरी० ना० स्त्री० नगर, गांव वा अयोध्यादि सात नगर विशेष।
पुरीष० ना० पु० मल, विट्, मूत्र।
पुरुखा० ना० पु० बुड्ढा, बूढ़ा।
पुरुखे० ना० पु० अगले पुरुष।
पुरुष० ना० पु० मनुष्य, नर।
पुरुषत्व० ना० पु० मनुष्यता, मनुसाई।
पुरुषा० ना० पु० प्राचीन वा पिछले लोग।
पुरुषाधम० गु० जो मनुष्यों में निन्दितहोवे।
पुरुषान० ना० पु० पीढ़ियां,शाखें, पुस्तें, पुरुषका बहुवचन।
पुरुषारथ० ना० पु० पुरुषार्थ।
पुरुषोत्तम० ना० पु० मनुष्यों में जो श्रेष्ठ वा प्रधान श्रीविष्णु, नारायण।
पुरुहूत० ना० पु० इन्द्र।
पुरैन० ना० स्त्री० कमलबेलि।
पुरोडास० ना० पु० यज्ञकी हव्य, रोटी, यज्ञ का शेष भाग।
पुरोधा० **पुरोहित०** } ना० पु० कुलगुरु, वंश पूज्य ब्राह्मण।
पुरोहितानी० ना० स्त्री० पुरोहित की स्त्री।
पुर्खा० ना० पु० पुरातन, बुड्ढा।
पुर्चक० ना० स्त्री० छल, बढ़ावा।
पुर्वा० ना० स्त्री० पूर्वका पवन।
पुर्वाई० ना० स्त्री० पूरब की पवन।
पुर्वाना० स० क्रि० भरवाना, पूरा कराना।
पुवया० ना० स्त्री० पुरवाई।
पुर्सा० ना० पु० चारहाथकी माप।
पुल० ना० पु० सेतु, बांध यह शब्द फारसी का है।
पुलक० **पुलकावलि०** **पुलकावली०** } ना० स्त्री० रोमांच, आनन्द वा शोक में मग्न होना।
पुलकित० गु० हर्षित, रोमांचित।
पुलपुला० गु० पिलपिला।
पुलपुलाना० अ० क्रि० डरना, पिलपिलाना।
पुलपुलाहट० ना० स्त्री० डर, भय, नरमी।
पुलस्ति० ना० पु० मुनिविशेष, रावणके पितामह।
पुलहाना० स० क्रि० मनाना, राजीकरना।
पुलाक० ना० पु० **पुलाव०** } मांसोदन भोजन विशेष यहशब्दफारसीका है।
पुलिक० ना० पु० मुख्य सांप।
पुलिन० ना० पु० बालूका टापू, नदी में किनारा।
पुलिन्द० ना० पु० म्लेच्छ भेद।
पुलिन्दा० ना० पु० बस्ता, फारसी शब्द है।
पुलोमजा० ना० स्त्री० इन्द्राणी, देवरानी, पुलोमजाशचीन्द्राणी इत्यमरः।
पुलिङ्ग० ना० पु० पुंलिंग, नर, मुजक्कर।
पुवाल० ना० पु० पिआल।
पुष्कर० ना० पु० आकाश,जल, कमल, तालाब, हाथी की सूंड़, तीर्थ विशेष।
पुष्करजटा० **पुष्कराह्व०** } ना० पु० पुहकरमूल।
पुष्कराह्वय० ना० पु० सारस।
पुष्करिणी० ना० स्त्री० जलाशय, तलैया।
पुष्कल० ना० पु० भरतजी का पुत्र, पूर्ण,श्रेष्ठ।
पुष्ट० गु० पाला, स्थूल, पोढ़ा, कड़ा।

पुष्टई० } गु० पुष्टि कर्त्ता औषधि वा भोज-
पुष्टक० } नादि।

पुष्टता० ना० स्त्री० मोटाई, स्थूलता, पायदारी।

पुष्टि० ना० स्त्री० पुष्टता, पुत्रजीवा, चन्द्रकला विशेषका नाम।

पुष्टिकर० गु० पुष्टक।

पुष्प० ना० पु० फूल, प्रसून।

पुष्पक० ना० पु० कुबेरका विमान।

पुष्पगन्धा० ना० स्त्री० जूही।

पुष्पचाप० ना० पु० कामदेव, मदन।

पुष्पजम्बुक० ना० पु० केतकी।

पुष्पधनु० ना० पु० कामदेव। मनोज।

पुष्पनीलक० ना० पु० संभालू।

पुष्पपात्र० ना० पु० फूलका आधार।

पुष्पफला० ना० स्त्री० कुम्हड़ा।

पुष्पमृत्यु० ना० पु० नड़कुल।

पुष्परस० ना० पु० फूल जिस में मधु वा अमृत निकलता है, फूलकारस।

पुष्पवती० ना० स्त्री० रजस्वला, कपड़ों से।

पुष्पसंबरी० ना० स्त्री० कलिहारी।

पुष्पाञ्जलि० ना० स्त्री० फूलों से भरी हुई अंजली।

पुष्पित० गु० फूलाहुआ वृक्ष।

पुष्पी० ना० स्त्री० ऊंगा।

पुष्पेश० ना० पु० माधवी।

पुष्य० ना० पु० आठवां नक्षत्र।

पुस्तक० ना० पु० ग्रन्थ, पोथी, किताब।

पुहमि० } ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
पुहमी० }

पूआ० ना० पु० मीठीपूरी।

पूं० ना० पु० पादने का शब्द।

पूंगी० ना० स्त्री० बांसली विशेष।

पूंछ० ना० स्त्री० पुच्छ, दुम।

पूंछना० स० क्रि० पोंछनां, पूछना।

पूंछार० गु० पुच्छवान्, पूछवाला।

पूंजी० ना० स्त्री० मूल, धन, सम्पत्ति।

पूग० ना० पु० समूह, सुपारी वा सुपारीका वृक्ष।

पूगीफल० ना० पु० सुपारी।

पूछ० ना० पु० खोज।

पूछना० स० क्रि० खोजना, प्रश्न करना।

पूछी० ना० स्त्री० मच्छी की पूछ।

पूजक० गु० पूजा करनेहार।

पूजन० ना० पु० पूजा का व्यापार।

पूजना० स० क्रि० अर्चना, भजना, ध्याना, अ० क्रि० भरना, पूरा होना।

पूजनीय० } गु० पूजाके योग्य, मान्य।
पूजमान्० }

पूजा० ना० स्त्री० अर्चा, आदर, सत्कार।

पूजित० गु० जो पूजागया।

पूज्य० } गु० पूजाके योग्य, मान्य।
पूज्यमान्० }

पूठ० ना० पु० पुट्ठा।

पूठा० ना० पु० पुस्तक का गाता।

पूड़ा० ना० पु० बेसनका पकवान विशेष।

पूड़ी० ना० स्त्री० पकवान विशेष।

पूणी० ना० स्त्री० रुई जो कातने के लिये बनाते हैं।

पूत० ना० पु० पुत्र, पवित्र।

पूतना० ना० स्त्री० हड़, निशाचरी विशेष।

पूतला० ना० पु० पुतला।

पूतरी० } ना० स्त्री० पुतला।
पूतली० }

पूति० ना० स्त्री० जमींकन्द, पवित्र, छोटा अवयव।

पूतिचार्च्चिका० ना० स्त्री० बबरी, पौधा।

पूतिफला० ना० स्त्री० बाकुची।

पूनियो० ना० स्त्री० पूर्णमासी।

पूनी० ना० स्त्री० पोनीं, पूर्णी।

पूनौ० ना० स्त्री० पूर्णमासी।

पूप० ना० पु० पुआ।

पूय० ना० पु० राद, मांज।